प्रकाशक और प्राप्तिस्थान—

१. तेजमल बोहरा
शाहपुरा मोहल्ला, ब्यावर

२. अमरचन्द मोदी
पीपलिया बाजार ब्यावर



संस्करण प्रथम २०००	तारीख १ जून सन् १९६२	मूल्य ७५ नये पै



मुद्रक—
श्री चिम्मनसिंह लोढ़ा
श्री महावीर प्रिंटिंग प्रेस, ब्याव

अपनी दृष्टि

मनुष्य घुमक्कड़ है। वह सदा-सर्वदा घूमता रहता है। कभी शरीर से घूमता है। कभी वाणी से दुनियाँ की सैर करता है, तो कभी मन से आकाश पाताल को नापता चलता है। उसका एक योग निरंतर गतिशील रहता है। उसकी यात्रा जिन्दगी की पहली सांस से प्रारम्भ होती है और अन्तिम सांस तक चलती रहती है।

साधु तो विशेष रूप से घुमक्कड़ है। क्योंकि, जैन साधु बिना किसी विशेष कारण के एक स्थान पर वर्षावास में चार महीने एवं अन्य समय में अधिक से अधिक एक महीना ठहर सकता है। उसका विहार (विचरण) पैदल ही होता है। वह सदा-सर्वदा पद यात्रा ही करता है। इस कारण वह अपनी जिन्दगी में अनेक गांव एवं शहरों की सड़कों को नापता चलता है। पर भ्रमण केवल सड़कें नापने के लिए ही नहीं होता। वह भिन्न भिन्न गांवों की सभ्यता एवं रहन-सहन तथा रीति-रिवाज का अध्ययन तो करता ही है। परन्तु साथ में जन जीवन में ज्ञान की ज्योति जगाने का भी प्रयत्न करता है। वह जनता को जीवन बनाने की दृष्टि देता है। और प्रगति पथ पर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

यह नितान्त सत्य है कि पर्यटन ज्ञान वृद्धि का स्रोत है। यात्रा में अनेक नए नए अनुभव होते हैं। विभिन्न प्रांतों एवं शहरों में विभिन्न प्रकार के खट्टे-मीठे अनुभव होते हैं। कभी हिमालय के हिमाच्छादित धवल शिखरों की शीतल समीर मन मस्तिष्क को शान्त-प्रशान्त बनाती है, तो कभी मरुस्थल ज्येष्ठ की तपती हुई लुएं शरीर को झुलस देती हैं। इसी तरह यात्रा में कभी सुखद अनुभूतियें होती है, तो कभी दुःखद।

कभी मन-मस्तिष्क हिम की शीतलता का अनुभव करके मस्ती से भ
उठता है, तो कभी कष्टों की तप्त दुपहरी में आतप की अनुभूति क
कराह उठता है। परन्तु सच्चा साधक हिम और आतप या दु.ख अ
सुख दोनों में अनासक्त रहता हुआ साधना पथ पर कदम बढ़
चलता है।

जीवन यात्रा में हिम और आतप' दोनों की अनुभूतियें हो
हैं। कभी सुख के शीतल झोंके आते हैं, तो कभी दु.ख की
हवाएँ भी चलती हैं। मैने अपने जीवन में हिम (सुख) के झोंको
आनन्द भी लिया है, परन्तु आतप के ताप अधिक सहे हैं। जीवन
प्रारम्भ से दु:खों की बिजलियाँ कड़कती रही है। बाल्यकाल में मा
निराधार छोड़ गई, तो यौवन में पैर धरते ही जीवन साथी का वियो
सामने आ खड़ा हुआ। उसके बाद साधना पथ पर कदम बढ़ाया अ
यह पथ तो आतप का ही पथ है। ८ साल बाद गुरणीजी म० का
वियोग। अतः यात्री को हर कदम पर हिम या आतप की अनुभू
होती रहती है। इस कारण प्रस्तुत पुस्तक का नाम 'हिम और आत
रखा है। पाठक को प्रत्येक पंक्ति में दोनों अनुभूतियें परिलक्षित होगी

यह मेरा प्रथम प्रयास है। अतः हो सकता है इसमें कुछ त्रुटि
रह गई हो। यदि पाठक उस ओर ध्यान आकर्षित करेंगे त
द्वितीय संस्करण में उन्हे सुधारने का प्रयत्न करूंगी। इस पुस्तक व
लिखने के लिए मुनि श्री समदर्शीजी म० की अत्यधिक प्रेरणा रही है
अपने अध्ययन में व्यस्त होते हुए भी उन्होंने पुस्तक की भाषा प
भावों को मांजकर इसे सुन्दर बना दिया है। इसके लिये मै उनक
हृदय से कृतज्ञ हूँ।

जैन साध्वी अमरकुमारी
(उमरावकुँवर)



जिनसे त्याग-वैराग्य की ज्योति पाई, ज्ञान-साधना की

प्रेरणा मिली, उन पूज्य गुरुदेव, परम श्रद्धेय

स्वर्गीय, प्रान्तमन्त्री, सरलस्वभावी

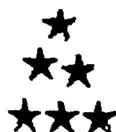
स्वामी जी श्री हजारीमल जी म०

की पुनीत स्मृति में सादर,

सविनय, सभक्ति

समर्पित

जैन साध्वी अमर कुमारी (उमराव कंवर)



:: मार्ग-दर्शन ::



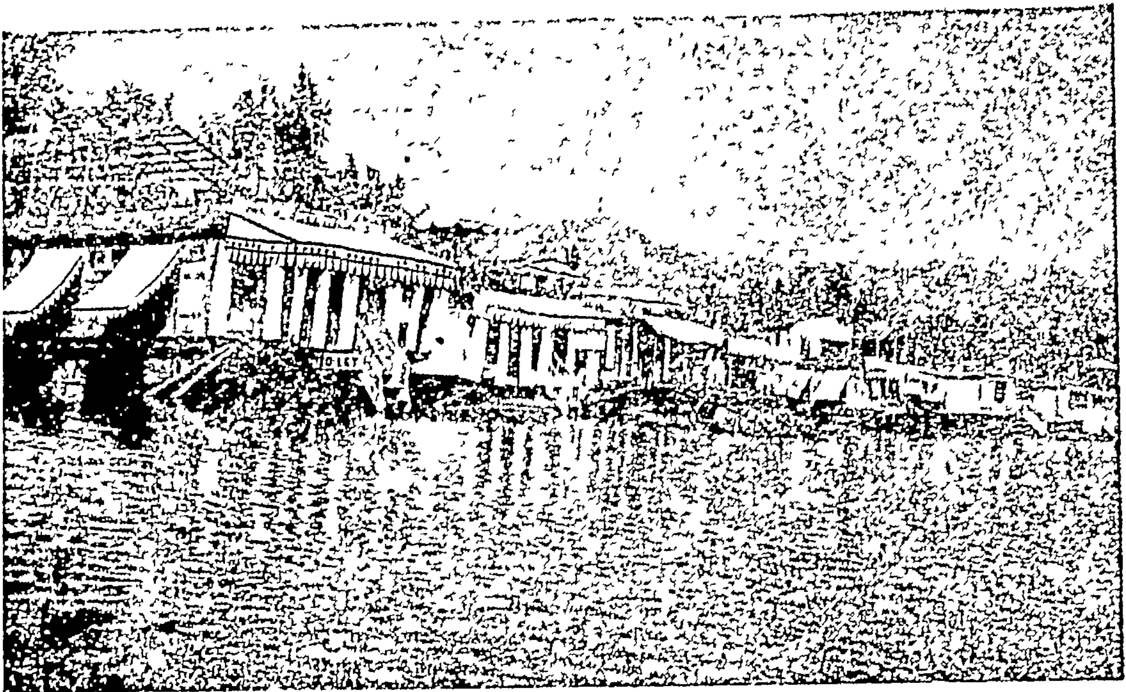
ओ बन्दे रास्ता देख के चल, महाराज ने दीत्तियाँ आँखियाँ ने।
हर कदम ते ठोकर खाना है, ये आंखियाँ किस लई रखियाँ ने ॥टेर
राह विखडत पैण्डा दूर तेरा, मगरूर अखों वो नूर तेरा।
जदों चलता है डीग पैंदा है, पहुँच नदियाँ आशा रखियाँ ने ॥
ओ बन्दे रास्ता देख के चल ॥ १ ।

ओ प्रेम शमां दिया प्रेमियाँ, लाखों परवाने जल देने।
जदों रीस करन परवानियाँ दी, तेरे मुँह पे बेन्दियां मखियाँ ने ॥
ओ बन्दे रास्ता देख के चल ॥ २ ।

कई मारे मर गये आंखियाँ दे कई तारे तर गये आंखियाँ दे।
विच जहर ते अमृत आंखियाँ दे, ये रमभा किसने लखियाँ ने ॥
ओ बन्दे रास्ता देख के चल ॥ ३ ।

इक अंख कोडी दे मुलदी है, इक अंख मोती नाल तुल दी है।
इक अख दे हजारों वेरी ने, इक अंखदियां लखां सखियां ने ॥
ओ बन्दे रास्ता देख के चल ॥ ४ ॥





डल झील-श्रीनगर (कश्मीर) जहाँ सैंकड़ों हाउस बोट दिखाई दे रहे हैं।

हिम और आतप



जेन्दगी का पहला सांस : : :

पावस की सुहावनी ऋतु थी। आकाश बादलों से आच्छन्न था। चारों तरफ हरियाली छाई थी। पृथ्वी ऐसी लग रही थी, मानों हरा ारिधान धारण कर रखा हो। खेत फसलों से लहलहा रहे थे। मयूर ासन्नता से फूले नहीं समा रहे थे। वे नाच-नाच कर जीवन प्रदाता मेघों ा स्वागत कर रहे थे। दादुर अपनी अस्पष्ट भाषा में मेघों के प्रति तज्ञता प्रकट कर रहे थे। किसान का हृदय भी खुशी से उछल रहा था। ल्हार राग आलापते हुए किसान खेतों में मस्ती से झूम रहे थे। चारों रफ सौन्दर्य बिखरा पड़ा था। प्रकृति प्रसन्न थी। पशु-पक्षी खुश थे। ानवमन खुश थे। सृष्टि का कण-कण हँस रहा था, पुलक रहा था। ीवन के चप्पे-चप्पे मे प्रसन्नता थिरक रही थी।

वि० सं० १९७९ की पावस ऋतु थी। भादव कृष्णा सप्तमी गलवार का दिन था, जब मैंने अपने इस जीवन की पहली सांस ली। निया का वातावरण कुछ विचित्र सा लग रहा था। उस समय ी कोई स्मृति, कोई अनुभूति ऐसी नहीं है, जिसे मै लेखनी से अंकित र सकूँ। परन्तु आज का चिन्तन इतना ही बताता है कि उस समय च्चा अपने आपको एक नए एवं अपरिचित वातावरण में पाता है।

तभी तो प्रकृति हँसती है, दुनिया हँसती है माता के प्रसवपीड़ा
व्यथित मन पर भी हँसी की एक हल्की सी रेखा फूट पड़ती है, परन्
बच्चा उस समय हँसता नहीं, रोता है। धीरे धीरे वह अभिनव वातावरा
से परिचित होने लगता है, उसका रुदन हँसी में परिणत हो जाता है।

हां तो मैंने एक भरे-पूरे घर में जन्म लिया। मेरे आगमन से पू
एक भाई और एक बहन मौजूद थे। बड़ी बहन का नाम सौभाग्य कुं
और भाई का नाम रणवीरसिंह था। पिताजी का नाम श्री जगन्नाथ
सिंहजी तातेड़ (ओसवाल) था। उन्होंने भी बाद में दीक्षा ग्रहण की थी
दीक्षा का नाम मागीलालजी म० था।

मेरा जन्म दादिया (किशनगढ के पास एक) गाव में हुआ था
कृषि एवं पशु उस युग का प्रमुख धन था। पिताजी के पास हजारों बीघ
जमीन थी चार सौ के करीब पशु थे। घी-दूध की नदियाँ बहती थीं
कई गांवों में खेती थी और अपना व्यापार भी था।

मैंने अभी पूरी आंखें ही नहीं खोली थी अभी नामकरण संस्क
भी नहीं हो पाया था कि माताजी इस संसार से प्रयाण कर गई। मै उ
समय सिर्फ सात दिन की ही थी। पिताजी की वात्सल्यमय गोद में ब
हुई। उनका मेरे ऊपर अपार स्नेह था। पर, माता के वात्सल्य की भू
शेष ही रह गई। माता के प्यार में जो संजीवनी होती है वह अन्य
कहाँ मिल सकती है। फिर भी बड़े पिताजी, बड़े माताजी व पिताजी क
ममतामयी गोद में मुझे कोई कमी महसूस नहीं हुई।

पिताजी कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे। माता के वियोग के बा
उन्होंने अपने जीवन को ही बदल दिया। जहां आज का मानव श्मशा
की अन्तिम घड़ी तक भी वासना में डूबा रहता है, भोगों के कर्दम
फँसा रहता है, विवाह के रंगीन स्वप्न देखा करता है, वहां उन्होंने क

स्वप्न मे भी पुनर्विवाह का विचार नहीं किया और वासना पर विजय पाने के लिए सात वर्ष तक विगय (सात रस) का त्याग कर दिया। उनके जीवन मे अनेक उतार-चढ़ाव आए पर वे अन्त तक अपने धर्म एवं नियम पर दृढ़ रहे।

विवाह का बन्धन : : :

मेरा वचपन बड़ी आजादी में वीता। इतनी खुशी से दिन वीत रहे थे कि पता ही नहीं लगा। वात ही वात में मै ग्यारह वर्ष की हो गई। अभी चेहरे पर वचपन का भोलापन खेल रहा था। मन पूर्ण स्वतंत्रता चाहता था। परन्तु, यह क्या! जीवन एक वन्धन में बंध गया। वाल-विवाह की प्रथा के अनुसार मेरा विवाह भी साढे ग्यारह वर्ष की उम्र मे ही कर दिया गया। मेरा ससुराल अजमेर के पास 'दोराई' गांव में था। अजमेर में व्यवसाय होने के कारण वहां भी रहते थे। ससुरजी का नाम सुवालालजी हिगड़ था। उन्होंने ग्यारह लाख रुपए व्यय करके पाच गांव वसाए। आज भी दोराई हिगड़ो की कहलाती है। मेरे आठ देवर-जेठ और एक ननद थी। पीहर और ससुराल दोनो जगह जीवन सुखमय था। वाह्य सम्पत्तिकी न वहां कमी थी और न यहां। दो वर्ष आनन्द मे वीत गए।

वियोग का वज्रपात : : :

मानव संयोग और वियोग के दोराहे पर खड़ा होता है। संयोग की सहस्ररश्मियो के साथ ही वियोग की रात भी अपने कदम वढाने शुरु कर देती है। कोई नहीं कह सकता कि वह कव और किस रूप मे आ धमके। मैंने इस वात की कभी कल्पना ही नहीं की थी कि माता के वियोग के वाद—जो कि मेरी नासमझ अवस्था मे ही हो गया था मुझे

इतना जल्दी वियोग का गहरा धक्का सहना पड़ेगा। परन्तु कर्म
सामने सब परास्त हो जाते हैं।'

विवाह को दो वर्ष ही हुए थे। मैंने १४ वें वर्ष में कदम रखा
कि उधर काल ने पति को आ घेरा। रात्रि को स्वस्थ सोए पर सुबह पा
कि उन्होंने तो अनंत की ओर प्रयाण कर दिया था। कोई कारण
नहीं पाया गया। 'खूटी को बूटी नहीं'। पतिदेव सारे परिवार को रोत
बिलखता छोड़ चले। मेरा जीवन एकदम निराधार हो गया। समझ
बाद यह वियोग की पहली घड़ी थी। मुझ पर वज्र-सा गिर पड़ा।
कुछ भी नहीं समझ पाई कि अब क्या करूं। फूट-फूट कर रोने लगी
मुझे शान्ति की राह नहीं मिल रही थी। मै रात-दिन जीवन
अंधियारी गलियों में ठोकरें खाती भटक रही थी।

जीवन का सुनहरा प्रभात : : :

मेरा जीवन अंधकार से घिरा हुआ था। अन्दर ही अन्दर मेरा
घुट रहा था। मै जीवन के खुले वायुमंडल मे घूमना चाहती थी। पर
राह नहीं मिल पा रही थी। संयोग की बात थी, बालब्रह्मचारि
महासती श्री सरदार कुँवरजी म० के दर्शन हुए और इधर पिताजी
सहारा मिला। वे भी संसार से ऊपर उठना चाहते थे। महासतीजी
के प्रकाशमान जीवन से मुझे रोशनी मिली। मेरे मन में आलोक फै
लगा और इसी आलोक में मैंने अपने जीवन को देखना शुरु किय
मेरा दुःख एवं संताप धीरे-धीरे दूर हटने लगा। दुःख की रातें बीत
लगी। त्याग के प्रभात ने जीवन में कदम रखा। जीवन के कण-कण
त्याग-वैराग्य की लालिमा छा गई। मेरा मन खुशी से भर गया। मु
जीवन की राह मिल गई। मुझे यह अनुभव होने लगा कि वस्तुतः सु
भोग में नहीं, त्याग में है। जितना अधिक भोग होगा उतना ही अधि

दुःख होगा, उतनी ही अधिक चिन्ता होगी। एक विचारक का यह कथन नितान्त सत्य है—"Less Coin, less care"

मैने त्याग के पथ पर चलने का निश्चय कर लिया। मेरे निश्चय को पिताजी से अनुपम वल एवं वेग मिला। परिवार वालों ने घर में रोकने का प्रयत्न किया। साधनापथ की कठिनाइयां वताई। पर राही मार्ग की कठिनाइयों से कव रुका है। मैने नम्रता से परिजनों को समझाया। उन्होंने सहर्ष साधना के पथ पर बढने की आज्ञा दे दी। मेरा मन प्रसन्नता से खिल उठा। वड़ी आतुरता से दीक्षा के दिन की प्रतीक्षा करने लगी।

सहस्ररश्मि का उदय : : :

मेरे जीवन का यह नया प्रभात था। एकदम अपूर्व था और था सुखद व सुहावना। यों जिन्दगी के अनेक दिन–रात देखे थे, अनेक प्रभात देखे थे। परन्तु उस समय जीवन अन्धेरे मे था। जिन्दगी में ज्ञान की ज्योति धुंधली थी। इसलिए मेरे लिये तो यह अभिनव प्रभात था। एक विचारक ने पते की वात कही है, "जव जागे तव सवेरा"। जीवन की गफलत एवं तन्द्रा में वीते हुए प्रभात रात से अधिक मूल्य नहीं रखते। सवेरा तभी है जव मनुष्य जाग उठे।

मैं भी भोगों की निद्रा से जाग उठी थी। वि० सं० १९९४ मार्गशीर्ष कृष्णा एकादशी रविवार की प्रातः ८ वजे नोखा (जोधपुर जिले के एक) गांव में श्रद्धेय, स्व० पूज्य जयमलजी म० की संप्रदाय के तथा वर्तमान में श्रमण संघीय मारवाड़ प्रान्त मन्त्री स्वामीजी श्री हजारीमलजी म० एवं वालब्रह्मचारिणी महासती श्री सरदार कंवरजी म० के सान्निध्य में पिताजी के साथ मैने भी दीक्षा स्वीकार की। दीक्षा के एक घण्टे पूर्व मुझे पिता जी का शुभ आशीर्वाद मिला

था ' तेरे कदम साधना के शिखर की ओर बढते रहे । ' मेरा मन आनन्द एवं हर्ष से उछलने लगा ।

दीक्षा के पूर्व एक सुसज्जित रथ पर मेरी सवारी निकाली गई थी। कुचेरा निवासी श्री सूरजमल जी की धर्मपत्नी को कई वर्षों से मृगी का दौरा पड़ता था। उस दिन वह भी जलूस में शामिल थी। ज्योंही मैने रथ पर कदम रखने का प्रयत्न किया, उन्हे दौरा (Fit) आ गया। मैने पीछे मुड़कर देखा, उसके मुँह मे द्राक्षा का एक दाना रखा, उसी समय उसे होश आ गया और उसके बाद फिर कभी दौरा (Fit) नहीं आया।

शुभ मुहूर्त में मैने दीक्षा मन्त्र स्वीकार किया। गुरुदेव ने मुझे गुरुणी जी को सौंप दिया। उनके चरण स्पर्श करके मै निहाल हो गई। उस दिन का नव प्रभात और सहस्त्ररश्मि मेरे लिये अद्भुत था। मेरा जीवन धन्य हो गया। कहना चाहिये कि उस दिन मेरे जीवन का सच्चा सहस्त्ररश्मि उदित हुआ था।

गुरुणी जी की अस्वस्थता : : :

दीक्षा के वाद नोखा गांव से विहार करके रास्ते मे अनेक गांवों में धर्मोपदेश देते हुए हम किशनगढ पहुँचे। वहां एकाएक गुरुणी जी म० का स्वास्थ्य विगड़ गया। करीव १७ दिन तक वेहोश से रहे थे। परन्तु मुझे विश्वास था कि ये स्वस्थ हो जाएगी। संयोग की वात है किशनगढ़ के महाराज मदनसिहजी के माने हुए अनुभवी हकीम हव्वास अलीजी मिल गए। उस समय हकीमजी की आयु १०५ वर्ष की थी। उन्होने निस्वार्थ भाव से सेवा की। फल स्वरूप महाराज स्वस्थ हो गए। सवके मन प्रसन्नता से खिल उठे।

वर्षावास का समय निकट था। गुरु महाराज की सेवा में ब्यावर चातुर्मास करना था। अतः महाराज के स्वस्थ होते ही हम किशनगढ से ब्यावर की ओर चल पड़े। रास्ते में कुछ दिन अजमेर ठहरे। वहां से चलकर सराधना आए। वहां से मांगलियावास जाते समय रास्ते में एक गुण्डा साथ हो गया। हमने अपने इष्टदेव का स्मरण करना शुरु कर दिया। थोड़ी देर मे क्या देखते हैं कि एक स्वस्थ युवक बैलों की जोड़ी एवं डंडा लिए वहां आ पहुँचा। उसे देखते ही गुण्डा नौ-दो ग्यारह हो गया। वह युवक भी अदृश्य होगया और हम अपने लक्ष्य पर पहुँच गए। वि० सं० १९९५ का वर्षावास गुरु म० के चरणों में ब्यावर किया।

पहला प्रवचन : : :

ब्यावर वर्षावास के बाद आठ महीने कई, ग्रामों में धर्म प्रचार करते रहे। अनेक शहरों का वर्षावास के लिए आग्रह था किन्तु डेह (नागोर) गांव का अत्यधिक आग्रह होने के कारण सं० १९९६ का वर्षावास डेह में हुआ। मै शास्त्रों का वाचन कर रही थी। व्याख्यान (भाषण) देने का मुझे अभ्यास नहीं था। पर. कुछ प्रमुख श्रावक व्याख्यान के लिए आग्रह करने लगे। कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी (धन तेरस) के दिन मेरा व्याख्यान रखा गया। मेरा यह पहला प्रवचन (Maiden speech) था। मेरा हृदय कांप रहा था, हाथ कांप रहे थे. सारा शरीर ऐसे कांप रहा था जैसे पौष की सर्दी में ठिठुरता हो। फिर भी साहस करके मैने शास्त्र की गाथा का उच्चारण किया, उसका अर्थ सुनाया, टूटी-फूटी भाषा मे व्याख्या भी की। लोगो ने मेरे टूटे-फूटे शब्दों को भी पसन्द किया और मुझे बोलने के लिए उत्साह दिया। मेरा डर दूर हो गया, संकोच हट गया। फिर तो मै प्रतिदिन भाषण देने लगी।

एक दिन रविवार था। बहिनों ने प्रार्थना की कि आज पार्श्वनाथ भगवान का स्तोत्र सुनाएँ। मैने उन्हें कहा कि आज रविवार है अतः आज नहीं पढना चाहिए। परन्तु उन्होंने मेरी एक नहीं सुनी। प्रार्थना आग्रह एवं हठ में परिणत हो गई और हठ भी बहिनों का। उन्हें समझाए भी तो कौन ? आखिर उनकी वात माननी पड़ी। स्तोत्र शुरु कर दिया. पाठ होता रहा और उधर एक साप ने मेरे पास आकर आसन जमा लिया। सांप को देखते ही बहिनें भाग खड़ी हुई। सव नीचे चली गई। मै कुछ देर तक स्थिर बैठी रही। फिर खड़ी होगई। सर्प भी पूंछ के वल पर मेरे वरावर खडा होगया। मै उस समय घबराई नहीं और श्री भगवान पार्श्वनाथ का स्मरण करती रही। इस तरह मै और सर्प दोनों मस्ती से अपनी अपनी धुन में खड़े थे। नीचे लोग एकत्रित हो रहे थे। कुछ व्यक्ति सांप को पकड़ने के लिए संडासी लेकर आए पर सांप देवता फिर वहां दिखाई ही नहीं दिये। लोगों के ऊपर आते ही वह अदृश्य हो गये। लोग भी धीरे-धीरे अपने घर चले गए। इस विस्मयजनक घटना का सही रहस्य दिव्यदृष्टा ही जाने।

अन्न का संकट : : :

मानव जीवन की सबसे पहली आवश्यकता अन्न है। 'अन्नं वै प्राणाः' यह प्राण अन्नमय हैं। आत्मा जब किसी भी योनि में जन्म लेती है तो वह सबसे पहले आहार ग्रहण करती है। आहार के विना शरीर नहीं वन सकता और अधिक लम्बे समय तक टिक भी नहीं सकता। अतः अन्न का संकट सबसे भयंकर माना गया है। वि० सं० १९९६ मे मरुधर देश में भयंकर दुष्काल पड़ा था। अन्नाभाव से सैकड़ों मनुष्य मर गए थे। वर्षा की कमी के कारण घास भी कम हुआ और परिणाम स्वरूप हजारो पशु-क्षुधा से तड़प-तड़प कर मर गए। सैकड़ों व्यक्ति गाव एवं घर छोड़ कर दूसरे प्रांत की ओर चल पड़े। हजारों और लाखों रुपयों के अधिपति

अन्न के लिए दूसरों के सामने हाथ पसारने लगे। उस समय मानवों की इतनी दयनीय स्थिति हो गई कि देखते हुए हृदय कांपता था आंखें अश्रुकणों से भर जाती थी। जैनों ने सबका साथ दिया सब लोग हृदय से सेवा में लग गए। बाहर से अन्न मंगाने का प्रयत्न किया गया।

आतंक पर विजय : : :

वर्षावास समाप्त होते ही हमने डेह से विहार कर दिया। दुष्काल के कारण जंगल में अनेक पशु-पक्षियों के शव सड़ रहे थे। रास्ते में जगह-जगह हड्डियों के ढेर परिलक्षित होते थे। उस भयावने दृश्य को देखते हुए हम नागौर होकर कुचेरा पहुँचे। उसके बाद अनेकों गांवों में विचरते हुए १९९७ का वर्षावास पाली में किया। यह वर्षावास बीमारी में ही बीता। वर्षावास के बाद जोधपुर तिंवरी होते हुए बावड़ी आए। यहाँ से आसोप को जाना था। ३२ मील का अपरिचित रास्ता था। फिर भी हम साहस करके चल पड़े। पहले पड़ाव पर हमें काफी कष्ट सहने पड़े। अपरिचित होने के कारण लोगों ने हमारा उपहास किया, बच्चों ने गालियों एवं पत्थरों से स्वागत किया।

वहाँ से आठ मील चल कर एक छोटी-सी पहाड़ी पर स्थित टोडयाना गांव पहुँचे। दुष्काल के कारण गाँव उजड़ा पड़ा था। गलियों में से घूमते-घूमते बाजार मे आ गए और एक टूटे-फूटे मन्दिर में डेरे लगा दिए। आहार के लिए घरों में घूमने लगे। घूमते-घूमते एक भोपालगढ का जैन भाई मिल गया। आहार-पानी के पश्चात् उसने भाषण कराने की व्यवस्था की। गाव में ८०० घर थे, परन्तु दुष्काल के कारण बहुत से लोग गांव छोड़ कर बाहर चले गये थे। रात को भाषण हुआ, ५०-६० आदमी उपस्थित थे। शराब-मांस आदि दुर्व्यसनों से होने वाली हानि के विषय पर व्याख्यान हुआ। वहां का ठाकुर (जागीर-

दार) स्वय शराबी था। वह बिगड़ गया। उसने वहां तूफान-सा खड़ा कर दिया। सब लोग उसके आतङ्क से डरने लगे। उसने मुझे दबाने का बहुत प्रयत्न किया। परन्तु, मै डरी नहीं। अपने आसन पर बैठी रही। उन्हीं पिता की पुत्री थी जिन्होंने पाच शेरो को पछाड़ मारा था, उसी दादी की पौत्री थी, जिसने चार २ चोरों को वगल में दवा कर नाकों दम कर दिया था। भुआजी ने १६ साल की उम्र में दो लड़ते हुए सांडो के सींग हाथों में पकड़ छुड़ा दिये थे। तब मै क्यों डरती ? रात के ग्यारह बज गए। रात ढलने लगी और उसके साथ-साथ उसका आवेश भी ढलता गया। थोड़ी देर में वह शान्त हो गया। गुरुदेव की कृपा से वह इतना विनम्र हो गया कि उसने हमें वहां दो दिन रोक लिया। प्रतिदिन प्रवचन होने लगा। उसने शराब-मांस का त्याग किया।

कड़लू का वर्षावास : : :

वहां से आसोप पहुँचे। और भी कई गांवों में घूमते हुए कड़लू पहुँचे। वि० सं० १९९८ का वर्षावास वहीं किया। यहां भी बहिनों के अति आग्रह से रविवार के दिन फिर देह की भूल को दोहरा दिया अर्थात् पार्श्वनाथ स्तोत्र सुनाना शुरु किया। सर्प देवता फिर आ धमके। इस वार उनके सिर पर विच्छू भी था। मै विल्कुल नहीं डरी। मै इधर-उधर घूमने लगी तो वह भी मेरे साथ-साथ चलने लगा। सब वहिनें दूर भाग गई थी। जब कुछ लोग पकडने आए तो पहले की तरह इस बार भी साँप गायब हो गया।

मेरे पास केशर से हस्तलिखित चार मुखवस्त्रिकाएं थी। वैराग का ढोंग रचकर एक वहिन ने उन्हें चुरा लिया। परन्तु संयोग की वात है कि एक दिन हम पानी लेने गये तो वे चारों मुखवस्त्रिकाएं मेरे पात्र में आ गिरीं। इससे वह वहिन बहुत लज्जित हुई। गुरुणी म० ने उसे दीक्षा के लिए मना कर दिया।

श्रद्धानिष्ठ सांप : : :

वर्षावास समाप्त होते होते ही वहां से चल पड़े। रास्ते में एक काला सांप कुण्डली लगाए बैठा था। जब हम उसके समीप पहुँचे तो उसने अपने शरीर को फैला दिया और फन को जमीन पर बार २ झुका कर मानों नमन करने लगा। हमने अपने मन में सोचा कि मारवाड़ के मनुष्यों के मन मे ही नहीं, वल्कि पशुओं और उनमें भी सांप जैसे विषाक्त जन्तुओं के मन में भी प्रेम-स्नेह एवं श्रद्धा रही हुई है।

वि० सं० १९९९ का वर्षावास भुंवाल किया। असाता वेदनीय कर्म के उदय से तीनों सतियां बीमार रहीं। संघ ने तन मन धन से वहुत सेवा की। भुँवाल से ब्यावर जाते समय रास्ते में जैतारण आया। १० माइल चल कर वहां पहुँचे। मुश्किल से २० मिनट दिन होगा। १५ मिनट तक वहां पर विराजित सतियों से थोड़ा सा स्थान देने के लिए याचना की किन्तु वे साफ इन्कार हो गई। आखिर वहां पर खड़े मुसलमान भाइयों ने एक टूटे से मकान में टहरने को जगह दी। उसके वाद सं० २००० का चातुर्मास ब्यावर हुआ। यह जैनों का गढ़ है। इसके वाद चौरासी के क्षेत्रो में भ्रमण किया। इस क्षेत्र में अनेक व्यक्ति ऐसे मिले जो नाम से जैन होते हुए भी जैनत्व से वहुत दूर थे।

नागौर का वर्षावास : : :

वि० सं० २००१ का वर्षावास नागौर में किया। नागौर में जैनों का प्रभुत्व अच्छा है। लोगों का प्रेम भी सराहनीय था। परन्तु, वहां दो वहिनों में परस्पर अनवन थी। उनमें से एक बहिन ने हमारे पास दीक्षित होने के भाव अभिव्यक्त किए। इससे दूसरी बहिन को ईर्षा हो गई। उसने हमे कष्ट देने का बहुत प्रयत्न किया। उड़द आदि के

दाने अभिमन्त्रित करवा कर फैंके और उसने कई वहिनों को यह कह भी दिया कि तीन दिन के अन्दर उमरावजी की लाश इस स्थानक से निकलेगी। उसने बहुत प्रयत्न किए। परन्तु, प्रबल पुण्य एवं महान् पुरुषों का आशीर्वाद मेरे साथ था। किसी अदृश्य शक्ति ने वह संकट टाल दिया। मेरा कष्ट उसी पर जा पड़ा। वह अस्वस्थ हो गई। ऐसी स्थिति में भी गुरुणीजी म० प्रेमभाव से उसके घर गए। उसे सान्त्वना दी। परन्तु उसके हृदय से द्वेष भाव नहीं गया। जब कि मेरे मन में उसके प्रति न उस समय बुरा भाव था और न अब है।

गुरुणीजी का वियोग : : :

वर्षावास के समाप्त होने पर नागौर से गोगोलाव गए। गुरुणीजी म० अस्वस्थ हो गए। वहां बहुत उपचार किया परन्तु, स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ। डेह के संघ की अत्यधिक विनती होने के कारण सं० २००२ का वर्षावास डेह किया। वर्षावास समाप्त होते-होते मेरा स्वास्थ्य खराब हो गया। अतः विहार नहीं हो सका। गुरुदेव स्वामीजी श्री हजारीमल जी म० का वर्षावास नागौर था। गुरुदेव दर्शन देने डेह पधारे। जिस दिन गुरुदेव ने वहां से विहार किया, उसी दिन गुरुणीजी म० अस्वस्थ हो गईं। उपचार बहुत किया, परन्तु स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ। प्रति दिन स्वास्थ्य गिरता गया। सं० २००२ को मार्गशीर्ष शुक्ला द्वितीया के दिन शाम को समस्त जीव जगत से क्षमा याचना करके उन्होंने अनशन कर दिया और उसी दिन स्वर्ग को प्रयाण कर गए। मैंने अपनी जिन्दगी में इससे पहले किसी को अन्तिम सांस छोड़ते नहीं देखा था। मुझे पूरा बोध नहीं होने के कारण मैंने दो वहिनों के सहयोग से उन्हें उस समय पट्टे से नीचे उतार लिया, जबकि उनके आत्म प्रदेश निकल रहे थे और अन्तिम सांस निकलने तक ठंडी जगह पर लिटाए

रखा। मेरी मूर्खता एवं अज्ञानता के कारण अन्तिम समय में उन्हें अनन्त वेदना सहन करनी पड़ी।

आठ वर्ष तक मैं बिलकुल निश्चिन्त रही। उनके सान्निध्य में मुझे कुछ भी पता नहीं लगा था कि दुनियां में क्या कुछ हो रहा है। उनके वियोग का आघात मेरे लिए असह्य था। परन्तु, काल के सामने सब परास्त थे। धैर्य के साथ अपने मन पर काबू पाने का प्रयत्न किया। परन्तु करीब पांच वर्ष तक मेरे मन मे वियोग का कांटा चुभता रहा। अब भी जब उनकी मधुर याद आती है तो दिल भर आता है।

नागौर की ओर : : :

सं० २००३ का वर्षावास खजवाणे किया। वहां से रूण गए। वहां आदिसागर जी यति रहते थे। वे मनुष्य की चाल को देखकर उसके जीवन में घटित एवं घटने वाली घटनाओं को बता देते थे। मेरे विषय मे भी उनके द्वारा बतलाई हुई बातें अभी तक ठीक मिल रही हैं।

उस समय नागौर में पूज्य गुरुदेव के गुरु भ्राता श्रद्धेय पं० मुनि श्री मिश्रीमलजी म० मधुकर' को आचार्य पद की चादर दी जा रही थी। अतः हम रूण से नागौर की ओर चल पड़े। इस समय हम दो सतियाँ थीं और साथ में एक बहिन थी। रास्ते में सूर्य अस्त हो जाने से हम निर्जन जगल में ठहर गई। एक गाय आकर हमारे पास बैठ गई। पता नहीं वह कहां से आई, पर रात्रि पर्यन्त वह वहीं रही। प्रातः हम अपने पथ पर चल पड़े और वह गाय जङ्गल की ओर चली गई।

कष्ट से पीड़ित ब्राह्मण : : :

आचार्य पद महोत्सव के बाद हमने अपने दीक्षा गांव की ओर बिहार कर दिया। सं० २००४ का वर्षावास वहीं हुआ। छोटे बड़े सब

लोगों में हार्दिक भक्ति एवं श्रद्धा थी । वहां से लाम्बे गांव में गये । वहां दो समय भाषण होता था । एक दिन भाषण के समाप्त होने पर अन्य सब लोग तो चले गये पर एक युवक बैठा रहा । वह ब्राह्मण था और उसका नाम सहजराम था । मैंने उसे अस्वस्थ देखकर पूछा—तुम्हें क्या कष्ट है ? उसने कहा-एक दिन मैंने स्नान करने के लिए तालाब में छलांग लगाई । उसके बाद क्या हुआ इसका मुझे कुछ भी पता नहीं । साथियों ने गाड़ी में डाल कर मुझे घर पहुँचाया । उस बात को १० महीने हो गए, परन्तु मुझे आराम नहीं हुआ । मैंने पूछा—तुम्हे कष्ट क्या है ? उसने कहा–किसी सर्प ने काट खाया हो ऐसा लगता है । उसी का असर प्रतीत होता है । वह पांच बजे तक वहीं बैठा रहा । मैंने कुछ स्तोत्र सुनाया । इससे उसे शरीर में हल्कापन अनुभव हुआ और वह स्वयं उठकर अपने घर चला गया । उस दिन से उसे त्याग पथ पर दृढ़ विश्वास हो गया । उसने जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य का नियम ले लिया और अपने जीवन को सेवानिष्ठ बना लिया ।

श्रद्धेय पिताजी म० के दर्शनार्थ : : :

सं० २००५ का वर्षावास भुंवाल किया । वर्षावास के बाद केकिन से धनेरिया जा रहे थे कि रास्ते में ५ हत्यारे मिल गए (जिन्होंने मेड़ता शहर के निकटवर्ती गांव में नथमल जी की धर्मपत्नी एवं उनकी दो लड़कियों को कुछ दिन पूर्व ही कत्ल कर दिया था) हमने उन्हें बहुत दूर से देख लिया था, परन्तु अन्य रास्ता न होने के कारण इष्ट देव का स्मरण करके उसी राह पर चल पड़े । ज्यों ही हम उनके निकट पहुँचे कि उधर से संयोगवश पुलिस भी पहुँच गई और उसने पांचों को गिरफ्तार कर लिया । धर्म-प्रेम वहां अच्छा था व श्रद्धा-भक्ति भी, इसी का परिणाम शायद था कि सुगनचन्द्रजी मामड़ की पुत्री जो कि वर्षों से शरीर पर सफेद दागों से पीड़ित थी, कुछ ही दिन निरंतर दर्शन व

एकादशी को आयंबिल करते रहने के पश्चात् स्वस्थ हो गई तथा एक अन्य बहन की जिसकी आंखो में काला पानी उतर आया था और डाक्टरों ने जवाव दे दिया था, आंखें भी प्रतिदिन स्वाध्याय सुनने से ठीक हो गई। यह भंवाल चौमासे की वात है।

वहां से नोखा गए। वहां एक बहिन की दीक्षा हुई। वहां से कुचेरा पहुँचे। कुचेरा से कड़लू श्रद्धेय पिताजी म० के दर्शन करने जा रहे थे। रास्ते में सूर्य छिप गया। हम जङ्गल में थे। एक ओर पहाड़ था और दूसरी ओर नदी थी। साथ का आदमी भी अपने गांव चला गया था। वहां एक मन्दिर था। उसके चार द्वार थे, परन्तु सब बन्द। एक सती जी को दिवाल पर चढ़ाकर अन्दर से मन्दिर का एक दरवाजा खोला। परन्तु भीतर कोई अच्छी एवं सुरक्षित जगह नहीं थी। फिर भी हम साहस करके आसन विछाकर बैठ गई। प्रतिक्रमण किया और इष्ट देव का स्मरण करके रात विताई। प्रातः ५ वजे साथ का आदमी आ गया। प्रातः हम वहां से चल पड़े और कड़लू पहुँच कर श्रद्धेय पिता श्री जी के दर्शन किए।

सं० २००६ का वर्षावास तिवरी हुआ। शास्त्र स्वाध्याय एवं धर्म-ध्यान अच्छा हुआ। वहां से अध्ययन के लिये ब्यावर आ गई और २००७ एवं २००८ का चातुर्मास वहीं हुआ। श्रीमान् दानवीर सेठ मिश्रीलालजी मुणोत की सुपुत्री श्री सुरमा वाई को वैराग्य हो गया। परन्तु, परिजनों की आज्ञा न मिलने के कारण उनकी दीक्षा नहीं हो सकी। अत. उन्होंने स्वतः ही साध्वीवेष धारण कर लिया।

उम्मेदकुँवर जी की दीक्षा : : :

ब्यावर से विहार करके कई गांवों में विचरते हुए किशनगढ़ गए। वि० सं० २००९ की अक्षय तृतीया (वैसाख शुक्ला ३) को सादड़ी में

स्थानकवासी सन्तों का सम्मेलन हुआ। करीव २२ संप्रदायों का श्रमण संघ में विलीनीकरण करके एक आचार्य का नेतृत्व स्वीकार किया गया था। उक्त सम्मेलन में पंजाब प्रान्तीय मुनि श्री विमलचन्द्र जी म० भी पधारे थे। सम्मेलन से वापिस पंजाब को लौटते समय मुनि श्रीजी किशनगढ़ पधारे और आपने सुरमा बाई को दीक्षा मंत्र सुनाया। दीक्षा के बाद इनका नाम उम्मेदकुँवर जी रखा गया। बड़े उत्साह एवं धूम-धाम से दीक्षा महोत्सव संपन्न हुआ।

मसूदा संघ में शान्ति : : :

वहां से विहार करके चौरासी प्रान्त में विचरते हुए हम मसूदा आए। संघ की आग्रह भरी विनती होने से सं० २००६ का वर्षावास मसूदा हुआ।

वहां साधारण सी गल्ती के कारण एक व्यक्ति को जाति से पृथक कर रखा था। बड़े स्थानक में सतियों के ठहरने पर प्रतिवन्ध था। दर्शनार्थी भाइयों से प्रभावना का लेन-देन बन्द था। सामूहिक दया बन्द थी। परन्तु, प्रयत्न करने पर सारे प्रतिवन्ध हट गए। उस भाई को भी जाति में शामिल कर लिया गया। बड़ा स्थानक साधु-साध्वी के भेद की दीवार को तोड़कर सब के ठहरने के लिए खुल्ला कर दिया गया। दर्शनार्थियों से लेन देन एवं सामूहिक दया का बांध भी टूट गया। सब प्रेम से रहने लगे।

परन्तु, वेदनीय कर्म के उदय से नव दीक्षित सती उम्मेदकुँवर ज को कुछ दैविक उपसर्ग हो जाने से उनकी हालत अच्छी नहीं रही और यह संकट करीब साढ़े तीन वर्ष तक वना रहा। अनेक उपचा किए, परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ।

मृत्यु की छाया में : : :

मसूदा से किशनगढ़ की ओर विहार कर दिया। एक दिन मीरशाली पहुँचे। वहां रात को विश्राम कर रहे थे। हमारे साथ एक बहिन भी थी। रात को एक चोर कुल्हाड़ी लेकर मकान में आ घुसा। परन्तु, हमें हाथ लगाने का साहस वह नहीं कर सका। वह तीन बार आया, परन्तु हमारे ऊपर हमला नहीं कर सका। साथ की बहिन ने साहस करके कहा—ये साध्वियें हैं और मैं इनकी सेवा में हूँ, हमारे पास तुम्हारे लिए क्या रखा है! वह हर बार मारने की भावना से आता परन्तु, मकान में आते ही उसकी दृष्टि धुंधली हो जाती। वह न कुछ सोच सकता था और न कुछ देख ही पाता था। आखिर जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते से वह लौट गया। मृत्यु के बादल फट गए। हम शांति से आराम करते रहे। अपने समय पर उठे। चिन्तन-मनन किया। प्रतिक्रमण किया और सूर्योदय के साथ आगे चल पड़े।

रत्नकुंवरजी की दीक्षा : : :

तेरह महीने के बाद हम पुनः किशनगढ़ आ गए। रत्नकंवरजी के ससुराल वाले उन्हें हमारे पास दीक्षित करना चाहते थे और भाई की इच्छा वहीं स्थित एक अन्य सतीजी के पास देने की थी। कुछ संघर्ष के बाद दीक्षा का निश्चय हो गया। सं० २०१० की आसाढ़ शुक्ला पंचमी को उनको दीक्षा दे दी। दीक्षा देकर हम दूसरे स्थान पर चले गए। नव दीक्षित सती रत्नकंवरजी का भाई कुछ गुण्डो के साथ रात को ११ बजे मकान में आ धमका। वह कुछ देर तक अन्टर्गल शब्द एवं गालियां बकता रहा। थोड़ी देर बाद स्वतः ही शान्त होकर चला गया। रात्रि भर मकान के चारो तरफ चक्कर लगाता रहा, परन्तु हमारा बाल भी बांका नहीं कर सका।

अजमेर का चातुर्मास : : :

किशनगढ़ से चलकर अजमेर आए। सं० २०१० का वर्षावास वहीं किया। परन्तु, उम्मेदकुँवरजी की अस्वस्थता के कारण चार महीने शान्ति नहीं रही। नित्य प्रति नए नए उपद्रव होते रहते थे। कभी कौड़ियां बरसतीं। कभी प्रकाश (Light) दिखाई देता। कभी कुछ और घटना घट जाती। लगातार ६ दिन तक पानी का एक घूंट भी उनके गले से नीचे नहीं उतर सका।

वर्षावास के बाद ब्यावर गए। वहां श्रद्धेय पिताजी म० के दर्शन किए। वृद्धावस्था के कारण वे काफी कमजोर हो गए थे। अतः उन्होंने वहां कुन्दन भवन में स्थिरवास स्वीकार कर लिया था।

वहां से चलकर पाली पहुँचे। संघ का अधिक आग्रह होने के कारण सं० २०११ का वर्षावास स्वीकार कर लिया। अभी चातुर्मास प्रारम्भ होने में बहुत दिन शेष थे। अतः घाणेराव सादड़ी की ओर चल दिए। यह वही सादड़ी थी जहां श्रमण संघ का निर्माण हुआ था। स्थानकवासी समाज ने संघटन की दिशा में एक क्रान्तिकारी कदम उठाया। जिसके कण-कण में एकता का स्वर गूँजता था। परन्तु, रास्ते में स्थानकवासी समाज के कम घर थे। मूर्तिपूजक समाज के अधिक थे। वहां के लोगों के मन में सांप्रदायिक अभिनिवेश बहुत था। उस रास्ते में चोरों के अड्डे भी थे। रास्ते में तीन बार चोरों ने हमको लूटने का प्रयत्न किया। परन्तु वे सफल नहीं हुए। इधर हमारे पास वस्त्र-पात्र एवं शास्त्र के सिवाय और था ही क्या? जिसे वे लूटते। खैर, उस रास्ते को पार करके हम सादड़ी पहुँच गए। लोगों के मन हर्ष से उछलने लगे। वहां के लोगों में श्रद्धा-भक्ति बहुत है। उन्होंने वर्षावास की प्रार्थना भी की। परन्तु, हम तो पाली का चातुर्मास मान चुके थे। अतः उन्होंने पाली संघ से विनती की कि वे इस वर्ष का चातुर्मास हमें दे दें।

परन्तु, वहां का संघ तैयार नहीं हुआ। हम कुछ दिन वहां ठहरे। फिर वहां से चलकर पाली की सीमा में प्रवेश कर दिया। पाली शहर के बाहर एक बगीचे में ठहरे गए। वहां लोगों में कुछ मतभेद होगया। कुछ व्यक्ति स्कूल में ठहराना चाहते थे और कुछ मार्केट (Market) में ठहराने के पक्ष में थे। दोनों अपनी अपनी बात पर अड़े हुए थे। दोनों की तना-तनी देख कर हमने उन्हें स्पष्ट कह दिया कि जब तक सब एक राय से ठहरने के स्थान का निश्चय नहीं कर लेंगे तब तक हम शहर में नहीं आएँगे। पांच दिन के वाद-विवाद के बाद दोनों पक्ष एकमत होगए। दोनों का मतभेद मिट गया। सबने एक दिल से विनती की। हमने भी संघ में शान्ति देखकर शहर में प्रवेश किया। सब लोग प्रवचनों का लाभ उठाते रहे। त्याग प्रत्याख्यान भी बहुत हुए। आनन्द एवं शान्ति मे वर्षावास बीत गया।

पुनः ब्यावर में : : :

वर्षावास समाप्त करके श्रद्धेय पिता श्री के दर्शनार्थ पुन: ब्यावर आ गए। संघ के आग्रह से कुन्दन जैन सिद्धान्त शाला में पाथर्डी परीक्षा बोर्ड का जैन सिद्धान्त शास्त्री का अध्ययन शुरु कर दिया। परन्तु, थोड़े दिन बाद उम्मेदकुँवरजी का स्वास्थ्य बिगड़ गया। अभी वे सँभल ही नहीं पाए थे कि बड़े महाराज की आंखों का ऑपरेशन करवाया। वह कुछ ठीक हुआ कि आखों में दर्द शुरु हो गया अतः चाहते हुए भी अध्ययन व्यवस्थित ढंग से नहीं हो रहा था। श्रेष्ठ कार्यों में बहुत से विघ्न आ जाते हैं। फिर भी मै थोड़ा बहुत अध्ययन करती रही।

परन्तु उम्मेदकुँवरजी का स्वास्थ्य बिगड़ता गया। करीब डेढ़ महीने तक उन्होने कुछ नहीं खाया। रोटी देखते ही उन्हें उल्टी सी आने लगती थी। परन्तु, धर्म एवं संयम के प्रति पूरी श्रद्धा थी। संकट

एव कष्ट से वह घबराई नहीं। एक बार पांच दिन तक शरीर शिथि
सा पड़ा रहा। छठे दिन शाम को हम दूसरे कमरे में आहार कर रहे थे
उसके पास वैरागिन कंचनकुमारी (वर्तमान में साध्वी है) बैठी थी
यकायक कमरे में तेज प्रकाश हुआ। उम्मेदकुंवरजी ने अपने आप
उठकर नवकार मंत्र पढ़ना शुरु कर दिया और थोड़ी देर में उनके
शरीर में स्फूर्ति आ गई। वह उठी और हमारे पास आई। हम देखकर
हैरान परेशान रह गए। आंखों को सहसा विश्वास ही नहीं हुआ। परन्तु
आखिर विश्वास करना पड़ा।

कुछ दिनों में उनका स्वास्थ्य ठीक हो गया और पाथर्डी बोर्ड
की जैन सिद्धान्त प्रभाकर की तैयारी शुरु कर दी। परीक्षा में ढाई
महीने रहे थे। पाठ्यक्रम काफी लम्बा था। परन्तु हृदय में उत्साह
एवं लगन थी। वह अध्ययन में संलग्न रहीं और प्रभाकर में प्रथम
श्रेणी से उत्तीर्ण हुई।

मैंने भी शास्त्री के तीनों खण्ड कर लिये थे। बड़े म० से आचार्य
की तैयारी करने की अनुमति मांगी। पं० शोभाचन्द्र जी भारिल्ल
पढ़ाते थे। जैनागम एवं जैनदर्शन के वे लब्धप्रतिष्ठ विद्वान हैं।
कई वर्षों से निरन्तर अध्ययन कराते रहने के कारण, उनकी पढ़ाने की
शैली अत्यन्त सुन्दर है। बड़े म० ने अध्ययन करने की आज्ञा तो दे
दी परन्तु उनके चेहरे पर उत्साह नहीं था। उन्होंने कहा कि मैं तो अब
यहां थोड़े ही दिन की मेहमान हूँ। हमें विश्वास नहीं हुआ। परन्तु,
अध्ययन शुरु करने के दो दिन बाद जब कुन्दन भवन से पढ़कर लौटे तो
देखा कि उन्हें तेज बुखार हो रहा था। शाम तक स्वास्थ्य बहुत बिगड़
गया। शरीर पर सूजन आ गई, पेट फूल गया, दस्त लगने लगी और
बेहोश हो गए। दस दिन तक यही हाल रहा। १० दिन के बाद ज्यादा
हालत खराब देखकर मैंने संथारा करा दिया। हमें लग रहा
था कि कुछ ही मिनटों में कुछ का कुछ हो जाएगा।

परन्तु शाम को ६ बजे के करीब उन्हें होश आया। और एकाएक 'मत्थेण वन्दामि" अमरु का ध्यान रखना महाराज" बोलने लगे। सब हैरान रह गए। पूछने पर बताया कि श्रद्धेय स्व० पूज्य श्री जयमलजी म० पधारे थे। उन्हें 'अमरु' के जीवन का ध्यान रखने के लिये कह रही थी। वे मुझे सदा 'अमरु' कह कर ही पुकारते थे। मैंने उनसे इतनी सेवाएं ली हैं कि इस जीवन में शायद ही उऋण हो सकूं।

४५ दिन तक संथारा चला। इस बीच कई दैविक घटनाएं घटी। अन्त में वि० सं० २०१२ की चैत्र कृष्णा सप्तमी को रात के पौने बारह (११-४५) बजे स्वर्गवास हो गया। वे हम सब को छोड़कर स्वर्गवासी हो गए।

हम ब्यावर से विहार करने का विचार कर रहे थे। परन्तु संघ का आग्रह था कि यह वर्षावास यहीं करें। और पिता श्रीजी ने ६ महीने पूर्व ही अपना अन्तिम समय बता दिया था। अतः हम वहीं पिता श्रीजी की सेवा में रह गये। स्वर्गवास के दिन (सं० २०१३ श्रावण शुक्ला ६ को) प्रातः वे हमारे स्थान पर दर्शन देने पधारे। मैंने उन्हें कहा-आपने यहां आने का कष्ट क्यों किया ? थोड़ी देर मे हम वहाँ आ जाती।" उन्होंने मधुर शब्दों में कहा, "आज मेरा अन्तिम मिलन है। यह सत्य है कि आत्मा अजर-अमर है, उसका नाश नहीं होता। परन्तु, यह शरीर कल नहीं रहेगा। पं० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल की सुपुत्री कमला बहिन जी वहीं बैठी थी। दिन में हम दर्शन करने गए। बात-चीत करते रहे। दिन आनन्द में बीत गया। कोई खास बात नहीं थी। परन्तु रात को १० बजे अस्वस्थ हुए, वेदना बढ़ती गई। रात को १२ बजे संथारा स्वीकार किया और रात को पौने चार बजे स्वर्गवास हो गया। पं० श्री भानु ऋषि जी म० ने उनकी तीन वर्ष तक तन-मन से

जो सेवा की, उसे कभी नहीं भुलाया जा सकता। उस समय मेरी उम्र ३३ वर्ष की थी। इस छोटी सी उम्र में मैंने अनेक भूकम्प के धक्के सहे।

कंचनकुंवरजी की दीक्षा : : :

सं० २०१२ और २०१३ का वर्षावास ब्यावर में हुआ। २०१३ का वर्षावास समाप्त होते ही छोटे सती जी (रत्नकंवर जी) का भाई किशनगढ़ से आया। वह उसे अपने साथ ले जाना चाहता था। उसने भय तथा प्रलोभन दिखाया। तथा यह भी कहा कि यदि इसे मेरे साथ नहीं भेजा तो मैं रास्ते में कहीं कुए में गिर कर आपका नाम ले लूंगा। हमने उसे बहुत समझाया परन्तु वह नहीं माना। उसकी अभिलाषा यहां पूरी नहीं हो रही थी। बात बढ़ती देख हमने उसे भेज दिया। वर्षावास समाप्ति के १५ दिन बाद कंचनकुंवर जी को दीक्षा दे दी।

उपाचार्यश्री जी के हाथ से बड़ी दीक्षा : : :

कंचन जी को दीक्षा देकर हमने मेड़ता सिटी की ओर विहार कर दिया। श्रद्धेय गुरुदेव और उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म० वहां विराज रहे थे। अत: चार दिन में ६० मील का विहार करके मेड़ता पहुँचे। वहां श्रद्धेय उपाचार्य श्री ने नव दीक्षित साध्वी की परीक्षा ली। उसका प्रतिक्रमण सुना। सब तरह से उसके जीवन को देख-परख कर उसे बड़ी दीक्षा दी।

जोधपुर की ओर : : :

उसके बाद हमने जोधपुर की ओर विहार कर दिया। रास्ते में एक शराबी मिल गया। वह ८ मील तक अन्ट-सन्ट बकता चला, परन्तु

हम साहस के साथ बढ़ते रहे। आखिर वह हार कर भाग गया। हम कई गांवों में विचरते हुए जोधपुर पहुँचे। और सं० २०१४ का वर्षावास श्रद्धेय गुरुदेव की सेवा में जोधपुर किया।

जयपुर की ओर : : :

वर्षावास के बाद जोधपुर से बिहार करके कई गांवों में घूमते हुए अजमेर आए। वहां मैने आचार्य की और उम्मेदकुंवर जी ने शास्त्री की परीक्षा दी। परीक्षा देकर हम आगे चल पड़े। हमारा लक्ष्य लुधियाना पहुँचने का था व श्रमण संघ के आचार्य श्री के दर्शन करने की उत्कट भावना थी। किशनगढ़ से आगे का रास्ता बिलकुल अपरिचित था। फिर भी साहस करके कदम बढ़ा दिए। बढ़ने वाले कदम कष्टों की कभी परवाह नहीं करते। किशनगढ़ से जयपुर तक का रास्ता काफी कठिन है, तथापि पहले से बहुत सुगम होगया है। प्रायः प्रवचन तो सभी जगह हो जाता था। हम धर्म प्रचार करते हुए सं० २०१४ की फाल्गुन शुक्ला १३ को वहां पहुँच गए। संघ का अधिक आग्रह होने के कारण वहां का वर्षावास भी मान लिया। २०१५ का वर्षावास वहीं किया।

जयपुर राजस्थान की राजधानी है और अच्छे ढंग से बसा हुआ है। लोग उसे राजस्थान की बम्बई कहते हैं। मारवाड़ी में यह कहावत बन गई है, "जिसने न देखियो जयपुरियो, दुनिया में आके के करियो" अर्थात् जिसने जयपुर को नहीं देखा उसका संसार में जन्म लेना व्यर्थ हो गया। इस कहावत में कितना सत्य-तथ्य है, यह तो देखकर ही जाना जा सकता है। यह सत्य है कि जयपुर की सड़कें पर्याप्त चौड़ी एवं साफ-सुथरी हैं। आमेर का किल्ला, गलता आदि कई स्थान दर्शनीय हैं। वहां का प्राकृतिक दृश्य बड़ा सुहावना है। परन्तु, इतना अवश्य कहूँगी कि वहां की सड़कें जितनी चौड़ी विशाल एवं साफ-सुथरी हैं, मनुष्यों के मन उतने ही विशाल नहीं। वहां साम्प्रदायिक खींचतान काफी है।

अलवर की ओर : : :

वर्षावास के बाद मेरे पैरों में दर्द हो गया। सूजन आ रही थी। उम्मेदकुंवरजी के सीने में दर्द होरहा था। संघ एवं डाक्टर विहार करने के लिए इन्कार कर रहे थे। परन्तु, हमें अपने लक्ष्य पर पहुँचना था। अलवर का रास्ता भी कठिन था। परन्तु, साहस करके हम अपनी राह पर चल पड़े। पहले दिन ८ मील का रास्ता ८ घंटे में तय किया। धीरे-धीरे स्वास्थ्य सुधारता गया। हम रास्ते में जैनत्व के महत्त्व को समझाते हुए थाना गाजी पहुँचे। वहां अलवर के भाई आ पहुंचे। वे वहां से हमारे साथ-साथ चलने लगे। यहां से अलवर २५ मील रह गया था।

अलवर का रास्ता काफी भयावना है। रास्ते के जंगल शेरों के आवास स्थल हैं। परन्तु, सिरस्का का रास्ता अधिक खतरनाक है। सड़क के दोनों ओर काफी ऊँचे पहाड़ हैं, सुनसान जंगल है और चारों तरफ झाड़ियां दिखाई देती हैं। रात में तो क्या दिन में भी अकेले व्यक्ति का दिल काँप उठता है। दिन भर आवागमन रहता है और रात भर के थके-हारे शेर भी गुफाओं में निद्रा देवी की गोद में आराम करते हैं, इसलिए मनुष्य वेफिक्री से रास्ता तय कर लेता है। परन्तु, रात को पैदल चलना निरापद नहीं है।

हम रात को सिरस्का की कोठी में ठहरे। यह अलवर नरेश की कोठी है। यहां आकर वे शिकार करते हैं। कोठी का एक कमरा महाराज द्वारा मारे हुए शेरों की खालों एवं मसाले से भरे हुए शेरों के शरीर से सजाया हुआ था। उसे देखकर मन चिन्तन की गहराई में गोते लगाने लगा। हमारे चिन्तन का विषय था—सिंह और नरेश, वनराज और नरराज! दोनो राजा कहलाते हैं, परन्तु दोनो के स्वभाव में कितना अन्तर। एक पशु होने पर भी जठर की ज्वाला को शान्त करने के लिए ही पशुओं पर आक्रमण करता है और उन्हे मारकर अपनी क्षुधा शान्त

करता है। परन्तु, दूसरा मानव होकर भी भूख को मिटाने के लिए नहीं, सिर्फ क्षणिक मनोरंजन के लिए या अपनी शान बताने के लिए निहत्थे पशुओं पर शस्त्र का प्रहार करता है और वह भी उसे धोखा देकर मारता है। मारते समय वह उसके सामने नहीं आता। क्या यही पराक्रम है, शौर्य है ? नहीं, नहीं ! यह तो महा कायरता है क्रूरता है, निरीह वनचरों के प्राणों के साथ खिलवाड़ है मानवता पर घोर कलंक है। हाय ! यह खून का प्यासा मानव अपनी इस भूल को कब समझेगा। काश ! वह प्राणियों से प्रेम करना सीखे ! वह वनचरों के साथ भी प्यार से रहना सीखे।

रात को हम कोठी में ठहर गये। कोठी का दरवाजा बन्द था। हम ऊपर की मंजिल में ठहरे थे। फिर भी वहां का वातावरण भयावना-सा प्रतीत होरहा था। सारी रात सिंहों की गर्जना सुनाई देती रही। परन्तु, ऐसे भयंकर वनों में भी वहां के लोग निडर होकर घूमते-फिरते हैं। आदमी तो क्या औरतें भी शेरों से भय नहीं खाती, सामना होने पर दो दो हाथ दिखाती हैं। कोठी की देखभाल करने वाले व्यक्ति ने बताया था कि कुछ दिन पूर्व एक गूजर की स्त्री ने एक शेर को मारकर अपनी एवं अपने पशुओं की रक्षा की थी। साधारण लोग राह चलते शेर को नहीं मारते। वे अपनी रक्षा के लिए ही उस पर हाथ उठाते हैं।

दूसरे दिन एक बजे हम सिरस्का की कोठी से चले। शाम को खुशालगढ पहुंचे। वहां अलवर के कुछ प्रमुख व्यक्ति एवं बहिनें इन्तजार में खड़ी थीं। रात को वहां ठहरे प्रातः आगे बढ़ चले। मगसिर शुक्ला ८ को हमने अलवर में प्रवेश किया। बहिन-भाइयों में श्रद्धा भक्ति अच्छी है। हम ५–७ दिन ठहरने के विचार से आए थे। परन्तु, उनका अत्यधिक आग्रह देख डेढ़ महीने रहे। वहां के भाई श्रद्धानिष्ठ एवं स्वाध्यायप्रेमी हैं। उनका स्वाध्याय चलता रहता है। बहिनों में तो धर्म-

प्रेम एवं श्रद्धा अटूट है। उनमें शिक्षा की कुछ कमी रहती है। उसे पूरा करने के लिए ब्राह्मी महिला मण्डल की स्थापना की। करीब ६०-७० महिलाओं को पाथर्डी बोर्ड की परीक्षा भी दिलवाई। यदि बहिनों का जीवन ज्ञानालोक से भर जाए तो परिवार, समाज एवं राष्ट्र का जीवन सितारा चमकते देर न लगे। क्योंकि, नारी पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन का मूल है, नींव है। परिवार, समाज एव राष्ट्र का कर्णधार, सचालक उसकी कुक्षि में ही जन्मता है और उसकी वात्सल्यमय गोद में बढ़ता है। अतः महिलाओं के जीवन में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करने के लिए उनमें पढ़ने की रुचि पैदा की। उनके साथ महासती श्री उम्मेदकंवरजी ने भी आचार्य के प्रथम खण्ड की परीक्षा दी।

राजधानी की ओर : : :

परीक्षा देकर माघ शुक्ला अष्टमी को अलवर से चल पड़े। वहां से १५ माइल पर रामगढ़ है। वहा पहुँचे। वहां के लोगों में अच्छा धर्म-प्रेम है। स्कूल में व्याख्यान हुआ। वे ठहरने के लिए आग्रह कर रहे थे। क्योंकि वर्षा के आधिक्य से बाढ़ आ गई थी। इससे सड़कें टूट गईं और रास्ते में पानी भर गया था। रास्ते में सीमेन्ट की बोरियां डालकर रास्ता बनाया गया था। दो दिन में ट्रेफिक चालू हुआ। परन्तु तब तक एक तरफ से ट्रेफिक आ जा रहा था। दोनों तरफ का साथ-साथ नहीं आ-जा सकता था। परन्तु हमें अपने लक्ष्य पर पहुँचने की जल्दी थी। अतः उन्हें समझा-बुझा कर चल पड़े। समय की बात है—दिल्ली से आ रहा एक ट्रक खराब होगया, उसके कारण सब गाडियें रुक गईं। हमने आनन्द से रास्ता पार कर लिया और आगे सड़क पर बढ चले। हमारे आगे बढते ही वह गाड़ी भी ठीक होगई और ट्रफिक पुनः चालू होगया। हमें विशेष कष्ट नहीं उठाना पड़ा। हम मांढी खेड़ा पहुँचे। आहार पानी

तो मिल गया, परन्तु रहने के लिए एक सूना स्थान मिला। उसी में रात काटी और प्रातः आगे चल पड़े।

रास्ते में सोहना गांव आता है। यह वैष्णवों का तीर्थ स्थान है। यहां गर्म पानी का सोता है। इसमें स्नान करने के लिए हजारों लोग आते हैं। लोगों को विश्वास है कि इसमें स्नान करने से अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं। यहां पर संन्यासियों के आश्रम भी है। उनमें अनेक सन्यासी रहते हैं। सन्तों के प्रति उनके हृदय में अपार प्रेम है। हमें देखते ही आठ-दस संन्यासी उठ कर सामने आए। अपना सामान उठा कर हमारे लिए जगह खाली कर दी और हमारे साथ घरों में चलकर आहार-पानी दिलवाया। उनकी सेवा-भक्ति अभी भी याद आती है। वे दिन भर हमारी सेवा में लगे रहे। उपदेश सुन कर तो वे बहुत ही प्रसन्न हुए। वहां एक अघोरी बाबा को भी देखा। वह अपने ढंग का निराला ही व्यक्ति था। अपनी धुन में व्यस्त-मस्त। अपने ढंग का अनोखा जीवन और निराला रहन सहन।

इस तरह नए नए अनुभव एवं धर्म-प्रचार करते हुए गुड़गांव पहुँचे। वहां श्रद्धेय प्रान्तमंत्री फूलचन्दजी म० विराज रहे थे, उनके दर्शन किए। हम यहां से जल्दी चलना चाहते थे। परन्तु, मंत्री जी महाराज ने आग्रह करके रोक लिया और व्याख्यान भी करवाया। सन्तों के सामने व्याख्यान देने का मेरा यह पहला ही प्रसंग था। कुछ दिन महाराज श्री की सेवा में ठहरे। उन्होने पंजाब की परिस्थिति का परिचय कराया और अपरिचित क्षेत्रों में सावधानी से रहन की शिक्षा दी। उनका आशीर्वाद लेकर हम दिल्ली की ओर चल पड़े।

दिल्ली भारत की राजधानी है। आज ही नहीं, युगों से इसका महत्त्व रहा है। पाण्डवों के समय से इसे राजधानी का गौरव मिलता आया है। इसने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। अनेकों ने इस पर अपना

प्रभुत्व जमाया। दिल्ली के खण्डहर इसके साक्षी हैं। परन्तु आज इसका अपना अलग महत्त्व है। दुनिया के अनेक देशों की निगाहों में इसका अपना गौरव है।

दिल्ली में अनेक दर्शनीय स्थान हैं। इन्डिया गेट असेम्बली हाउस, राष्ट्रपति भवन, बिड़ला मन्दिर, लाल किला, लाल मन्दिर, राजघाट आदि प्रमुख स्थान हैं। हम अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेन्स भवन नई दिल्ली में चार दिन ठहर कर शहर में आ गए। संघ के आग्रह से पाठशाला मे और चांदनी चौक मे भाषण दिए। परन्तु शहर में मन नहीं लगा। छोटी छोटी एवं गन्दी गलियों से मन ऊब-सा गया। घरों मे आहार को प्रवेश करो तो सब से पहले टट्टी की गंध से दिमाग भर जाता था। प्राय: हर घर की सीढियों पर चढ़ते ही सबसे पहले पाखाने के ही दर्शन होते थे।

वहां से चल कर सब्जी-मण्डी आए। यहां महासती श्री मोहनदेवीजी म० विराज रही थी। उनके आग्रह से दो दिन उनके साथ ठहरे। सामाजिक एवं धार्मिक विषयो पर बाते हुई। फिर उनसे विदा लेकर अपने लक्ष्य लुधियाना की ओर चल पड़े।

दिल्ली से प्रस्थान : : :

दिल्ली से हमें किसी ने गलत मार्ग बता दिया। हम इधर के रास्ते से सर्वथा अपरिचित थे। उन्होंने रेल्वे लाइन की राह बता दी। लाइन के आस पास अच्छी पगडंडी भी नहीं थी और प्राय: दो माईल में तीन पुल आ जाते थे। उन पर बने हुए तख्ते एक डेढ हाथ के अन्तर से होते थे। यदि थोड़ी सी असावधानी हो जाए तो सीधे नीचे जा गिरते। खूनी नहर में एक बार हम पुल पार कर रहे थे कि पीछे से गाड़ी (Train) आ गई। संयोग की बात थी इंजन के करीब आते आते

हम पुल पार कर चुके। परन्तु, एंजिन में से उछलती चिनगारियों से उम्मेदकुँवरजी के वस्त्र जल गए और वह लड़खडा कर पटरी से नीचे गिर गई। कुछ चोट अवश्य आई परन्तु जीवन बच गया।

पानीपत में : : :

दिल्ली से चलने के बाद हमने यहां दो दिन विश्राम किया। यह भारत का एक ऐतिहासिक नगर है। इस भूमि पर कई निर्णायक युद्ध हुए है। पहले यह दिल्ली का प्रवेश द्वार माना जाता था।

पानीपत से बांगड़ का इलाका शुरु हो जाता है। भाषा, वेशभूषा एवं खान-पान में काफी अन्तर परिलक्षित होता है। फिर भी हमें आहार पानी का विशेष कष्ट नहीं हुआ। यों लोग खड़ी बोली (हिन्दी) समझ लेते हैं। परन्तु इधर मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा। हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचना था और गर्मी की मौसिम तेजी से आ रही थी। अत हम साहस करके बढ़ते रहे।

मार्ग की कठिनाइयाँ : : :

करनाल आते आते मेरा स्वास्थ्य अधिक बिगड़ गया। इस रास्ते में हमें कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ा। हम इस इलाके से सर्वथा अपरिचित थे और साथ का आदमी भी अपरिचित था। वह जयपुर का निवासी था। इधर का कोई भाई साथ नहीं था। मार्ग में अग्रवालों (बनियों) के घर पड़ते थे। वे जैन साधुओं के विधि-विधान से अपरिचित थे। कहीं कहीं जैनों के घर आते भी तो वे भी नाम मात्र के जैन थे। खैर, उन्हें समझाते बुझाते एवं जीवन का रहस्य बताते हुए हम करनाल पहुँच गए। यहां सात दिन ठहरे। कुछ स्वस्थ होते ही आगे चल पड़े।

करनाल से चल कर चिवाड़ी आए। वहां पूछने पर लोगों ने बताया कि थानेश्वर (कुरुक्षेत्र) यहाँ से ६ माईल है। हम रात भर वहां

ठहरे। प्रातः ६ बजे वहाँ से चले और एक बजे ६ मील चलने के बाद अमीन का स्टेशन आया। जब स्टेशन पर हमने पूछा कि थानेश्वर कितनी दूर है तो लोगों ने बताया कि यहां से सात मील है। पिछले गाव में ६ मील बताया था, परन्तु निकला १६ मील। अब भी रास्ता बहुत तय करना था, धूप भी तेज थी और हम बहुत थक चुके थे। अतः आगे बढ़ना कठिन था। वहीं एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। तेज गर्मी एवं थकावट से सभी घबरा रहे थे औ प्यास भी तेज लगी थी। अतः कण्ठ सूख रहे थे। थोड़ी देर बाद स्टेशन मास्टर से बात की। वह सिख था। कुछ विचारविमर्श के बाद वह प्रभावित हुआ। उसने एक छोटी सी कोठरी हमारे लिए खोल दी। हम उसमें ठहर गए। वहाँ गर्म पानी भी मिल गया और एक रोटी भी। हम तीन सतियें थी और रोटी एक थी। परन्तु श्रद्धा भक्ति से प्राप्त थोड़ी भी बहुत होती है। थोड़ी थोड़ी रोटी खाई और पानी पीकर विश्राम करने लगे।

दूसरे दिन प्रातः थानेश्वर पहुंच गए। यहाँ कौरवों और पांडवों का युद्ध हुआ था। पुराण के अनुसार यहीं बाणों की शय्या पर सोए हुए भीष्म पितामह का अर्जुन ने बाणों का सिरहाना बना दिया था। और पृथ्वी में एक बाण मारकर जलधारा निकाली थी, जो सीधी बाण शय्या पर सोए हुए भीष्म पितामह के मुँह में गई थी। यह सनातन धर्म का तीर्थ स्थान है। सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के दिन हजारों लाखों यात्री यहां स्नान करने आते हैं। पांडवों का मंदिर, चन्द्र कूप एवं द्रौपदी चीर हरण शाला आदि स्थान दर्शनीय है। यहां जैनों के सिर्फ ४ घर हैं। परन्तु, लोगों में काफी उत्साह है। अन्य लोग भी संतों की वाणी का लाभ उठाते है। हमने भी दोपहर को उपदेश दिया। लोगों का आग्रह था कि कुछ दिन ठहरें, परन्तु लुधियाना पहुंचना था। अतः यहां से आगे को प्रस्थान कर दिया।

पंजाब में : : :

ठीक फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा (होली चातुर्मासी) को अम्बाला छावनी में प्रवेश किया। यहां तपस्वी श्री टेकचंदजी म० एवं पूर्णचंदजी म० विराज रहे थे। उनके दर्शन किए और स्थान की व्यवस्था होने तक वहीं ठहर गये। थोड़ी देर में स्थान की व्यवस्था हो गई। हम अपने स्थान पर आ गये। तपस्वीजी म० से हमें काफी सहयोग मिला। यहां जलसा हो रहा था। पूर्णचंदजी म० एवं संघ के आग्रह से हमें भी ठहरना पड़ा। हमारे लिए यह जलसा नया था। राजस्थान का श्रावक-वर्ग अभी इतनी छूट को बर्दाश्त नहीं कर सकता। हमने मौन भाव से देखा समझा और आगे बढ़ चले।

छावनी से चलकर अम्बाला शहर में आए। यहां लोगों में श्रद्धा भक्ति अच्छी है। तीन दिन में अच्छा परिचय हो गया। लोगों का आग्रह था कि कुछ दिन यहां ठहरें। परन्तु अभी चातुर्मास में चार महीने पड़े थे। हमने सोचा कि शिमला एवं नंगल भी देख लिया जाए। अत: वहां से चल पड़े और डेराबसी आ गए। यहां जैन गर्ल्स हाई-स्कूल है। यहां भी तीन दिन ठहरे। संघ का आग्रह था कि यहीं चातुर्मास करें। परन्तु हमें श्रद्धेय आचार्य श्री की सेवा में लुधियाना पहुंचना था। अत वहा से विहार करके पंचकूला पहुंच गये।

पंचकूला में : : :

पंचकूला शिक्षा का केन्द्र है। इसके सामने ही उत्तुंग गिरि-शिखर खड़े हैं। इसके चारों तरफ पानी के पांच सोते बहते हैं। इन्हें इधर कूलें (नाले) कहते हैं और इन पांच कूलों के कारण ही इसे पंचकूला कहते हैं। यहां जैनेन्द्र गुरुकुल है। हाई स्कूल तक की परीक्षा होती है। बच्चों के रहने के लिये विशाल छात्रावास है। चारों तरफ खुला मैदान एवं

शांत वातावरण है। यह गुरुकुल स्वामी धनीरामजी एवं श्री कृष्णचंद्राचार्यजी के उर्वर दिमाग की उपज है। उन्होंने अथक परिश्रम करके इस संस्था को खड़ा किया। उनके मन मे बच्चों के मस्तिष्क मे जैनत्व के दृढ सस्कार भरने की भावना थी। परन्तु कार्यकर्त्ताओं एव समाज की उपेक्षा के कारण संस्था विकास की जगह ह्रास की ओर जा रही थी। ऐसी विकट स्थिति में भी धनीरामजी एवं कृष्णचंद्रजी अपना कार्य करने में संलग्न हैं। कृष्णचद्रजी बनारस रहते हैं। परन्तु, धनीरामजी यहां रहते हैं। वे हम से मिले थे। शास्त्रीय विषय पर खुलकर बातें हुई। अनुभवी हैं, वृद्ध होते हुए भी उनके मन में युवकों सी उमंग है।

यहीं मुनि श्री समदर्शी जी म० ठहरे हुए थे। वे मेट्रिक की परीक्षा देने आये थे।। एक ही देश के होने के कारण मिलने में प्रसन्नता का अनुभव होना स्वाभाविक था। उन दिनों परीक्षा चल रही थी। फिर भी उन्होंने दो बार मिलने का समय निकाला। उन्होंने एवं वहां के अध्यापकों तथा व्यवस्थापक जी ने ठहरने का आग्रह किया। परन्तु हमारे मन में शिमला पहुंचने की उमंग थी। अतः एक दिन ठहर कर आगे बढ़ गए।

सीमेन्ट फैक्ट्री में : : :

पंचकूला से चलकर सूरजपुरा पहुंचे। यहां गुरुकुल पंचकूला से पं० अमृतलालजी जैन आ गये थे। सीमेंट फैक्ट्री देखी। विशालकाय दानव सी मशीनें देखते ही देखते बड़े बड़े पत्थरों का चूरा कर डालती हैं। हजारों मजदूर काम में लगे हुए थे। फैक्ट्री के अफसर ने हमें सारा कारखाना दिखाया। हम दिन भर वहां ठहरे। दोपहर को उपदेश दिया। जैन साध्वियों को देखने एवं उनका प्रवचन सुनने का उसका यह पहला प्रसंग था। वह उपदेश से काफी प्रभावित हुआ। सब को मिठाई की प्रभावना दी।

पंजोर के बाग में : : :

शाम को हम पंजोर आ गई। फैक्टरी में चारों तरफ मिट्टी उड़ रही थी, तो यहा चारों ओर पुष्पों की पराग फैल रही थी। भीनी-भीनी सुगन्ध से मन-मस्तिष्क तरोताजा हो गया। पंजोर का बाग एक ऐतिहासिक उद्यान है। मुगल बादशाहों ने इसे बनाया था। यह सात मंजिल का बाग है और काफी दूर तक फैला हुआ है।

दूसरे दिन यहां से चलकर हम कालका पहुँचे। जैन स्थानक में ठहरे। यहां जैनों के ७ घर हैं। लोगों का प्रेम अच्छा था। परन्तु, स्थानक में नीचे एक होटल था। उसमें प्याज का तो कहना ही क्या, अंडे भी बिकते थे। परन्तु हमें कसौली की चढ़ाई चढ़नी थी। अतः चार दिन ठहर गए। प्रवचन रोज होता था। त्याग-प्रत्याख्यान भी अच्छे हुए।

जैन साहब के घर पर : : :

हम कालका से चल पड़े। कसौली की चढ़ाई सामने थी। अम्बाला में हमें बताया गया था कि कसौली की चढाई बड़ी कठिन है। इसे पार कर लिया तो शिमला पहुँचना सरल है। सचमुच ही मार्ग काफी कठिन था। परन्तु हम साहस करके चल पड़े। हमने तो यह सीख रखा था कि पुरुषार्थी के लिये कोई काम कठिन एवं असम्भव नहीं है। हिम्मत करके घाटियां पार करने लगे। हरा-भरा पहाड़ था। चारो तरफ हरियाली छाई हुई थी। बसन्त की छटा खिल रही थी। अनेक पेड़ कतारों में ऐसे खड़े थे जैसे सैनिक अपनी ड्यूटी पर खड़े हों। अनेक तरह के रंग-बिरंगे फूल खिल रहे थे। भीनी-भीनी सुगन्ध मन-मस्तिष्क को तरो-ताजा बना रही थी। शीतल मन्द समीर चल

रहा था। सारा दृश्य इतना सुन्दर सुहावना था कि देखते हुए मन ही नहीं भरता था, आखें अपलक निहारते-निहारते नहीं थकती थीं ।

प्रकृति के अनुपम दृश्यों को देखते-परखते हम कसौली पहुंच गए। गुरुद्वारे में ठहर गये। वहां पता लगा कि यहां एक जैन घर भी है। मैं गुरुद्वारे में सामान की निगरानी के लिए ठहर गई और साथ की दोनों सतीजी जैन साहब का घर ढूँढ़ने चल पड़ीं। उन्हें जैन साहब मिल गए, उन्होंने अपना ऊपर की मंजिल का कमरा खोल दिया। हम वहां पहुँचे। एक सँकड़ी सी गली में उनका घर था। कमरे के सामने गन्दगी का ढेर पड़ा था। कसौली की चढ़ाई चढते समय दिमाग सुवास से भर रहा था, तो अब मस्तिष्क गन्दगी से फटा जा रहा था। बाहर प्रकृति का खुला प्रांगण था तो भीतर गन्दगी का ढेर। पर करें क्या ? कहां जाएँ ? आराम से बैठे, इतने में मुर्गे मुर्गियों के झुण्ड आने लगे। हम हैरान रह गए। पर, सोचा किसी पड़ौसी के होंगे।

शाम को पंजाब की दो बहिनें दर्शनार्थ आईं। उन्होंने कहा-"आप यहां कहां ठहर गए ? यह नाम का जैन है, काम से तो अनार्य है, अनार्य।" मैंने पूछा-क्या बात है ? उन्होंने बताया कि इसने नीचे मांस का ठेका ले रखा है। अब सारा मामला समझ में आया। हमें क्या पता था कि अन्दर क्या रहस्य छुपा है। हम तो राजस्थान के विशुद्ध वातावरण में पले है। वहां ब्राह्मण बनिये तो क्या जाट जमीदार भी बहुत कम मांस खाते हैं। बड़े शहरों को छोड़कर आपको शायद ही कहीं मांस की दुकानें मिलें। हमारा यह पहला ही अवसर (Chance) था ऐसे वातावरण को देखने का। अब तो दिल घबराने लगा। परन्तु रात हो चुकी थी। अतः जैसे-तैसे रात काटी। सोच तो यह रखा था कि यहां दो दिन ठहरेंगे। परन्तु, अब तो दो मिनट भी ठहरने को मन नहीं कर रहा था। अतः सूर्योदय होते ही हमने विहार कर दिया।

जितनी चढाई चढ़ी उतनी उतराई थी परन्तु समय पर धर्मपुरा पहुँच गए। ठहरने को धर्मशाला में अच्छा स्थान मिल गया। यहां तक पगडंडियों के रास्ते सीधी चढ़ाई चढ़ी थी। अब यहां से पक्की सड़क का रास्ता लिया।

सोलन में : : :

धर्मपुरा से चलकर सोलन आए। यह स्थान काफी ऊँचाई पर है। वसन्त का महीना होने से चारों तरफ बहार आ गई थी। यहा लाडनू (राजस्थान) के सेठ मदनलालजी की कोठी थी। उसमें ठहर गए। स्थान काफी अच्छा था। एक सतीजी हाथ-पैर धोने को गर्म पानी लेने नीचे उतरी। कोठी के नीचे एक ब्राह्मण का घर था। ब्राह्मण के घर भी सामिष भोजन बनता है, यह तो पूछने जैसी बात नहीं थी। राजस्थान में कोई भी ब्राह्मण परिवार मांस को नहीं छूता। अतः सतीजी ने वहां से पानी ले लिया। जब घर से बाहर आने लगी तो उसके कमरे में से ५-७ मुर्गियां आ निकली और चलते चलते एक बर्तन पर निगाह पड़ी तो देखकर हैरान रह गई कि वह अण्डों से भरा था। एक ब्राह्मण के घर में यह दृश्य देखने का पहला ही अवसर था।

थोड़ी देर में सेठजी दर्शन करने आए, तब उन्होंने सब स्थिति समझाई। उन्होंने बताया कि यहां सिर्फ ३ घर शाकाहारी हैं। शेष सब आमिषभोजी हैं। सेठजी ने चातुर्मास के लिये बहुत आग्रह किया। परन्तु, हमें तो लुधियाना जाना था। उन्हें बहुत समझाया। परन्तु जब वे नहीं माने तो उन्हें यह कह कर हम आगे बढ़े कि शिमला पहुँचकर सोचेंगे।

सोलन में चार दिन ठहरे। प्रतिदिन प्रवचन होता था। कई लोगों ने मांसाहार एवं अण्डे खाने का त्याग किया। सेठ का कहना था कि

यदि आप वर्षावास कर दें तो आधा गांव शाकाहारी बन जाएगा। परन्तु हमें लक्ष्य बिन्दु पर पहुँचना था। अतः वहां से विहार कर दिया सेठजी ने सोलन से शिमले तक रास्ते का प्रबन्ध कर दिया।

शिमले के पथ पर : : :

सोलन से चलकर कुमारहट्टी गांव पहुँचे। सूर्य अस्त होने को था। ठहरने को कोई अच्छा स्थान नहीं मिला। एक टूटी-फूटी झोंपड़ी मिली। वह भी साफ सुथरी नहीं थी। उसे साफ किया और उसी में डेरे डाल दिए। आसन बिछाए और प्रतिक्रमण किया। रास्ते की थकान मिटाने के लिए लेटने का विचार कर रहे थे कि सामने से एक बूढे की चीख सुनाई दी। झोंपड़ी के बाहर एक सरदारजी बैठे थे। उनसे इसका कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि इधर पहाड़ी लोग बहुत गरीब हैं। पैसे की आवश्यकता पड़ने पर अपनी स्त्री या अपने बच्चों को गिरवी रख देते हैं। इस बूढ़े ने अपनी पत्नी को १६ वीं बार गिरवी रखा है। यह सुनते ही मेरा शरीर कांपने लगा। मै सोचने लगी कि मनुष्य की इतनी दयनीय स्थिति! सारी रात गरीबी का दृश्य आंखों के सामने घूमता रहा।

प्रातः वहां से आगे का रास्ता लिया। लोगों ने शार्टकट (Short cut) मार्ग बता दिया। एक डेढ़ माईल रास्ता तय किया। बस आगे मार्ग बन्द था। एक पहाड़ी के गिर जाने से रास्ता रुक गया था और उसके नीचे की तरफ गहरा खड्डा था। करीब ६ फर्लांग का रास्ता खिसक खिसक कर तय किया और तारादेवी आ पहुँचे। यहां भी सुविधाजनक स्थान नहीं मिला। एक बरांडे में ठहर गये। पहाड़ी स्थान था, चैत्र का महीना था। सर्दी काफी अच्छी पड़ रही थी। सारी रात बैठे बैठे बिताई। रात भर माला जपते रहे, और सोचते विचारते रहे। जिन्दगी में ऐसे क्षण भी अपना महत्त्व रखते हैं। आत्म विकास के पथ में

ऐसे ही क्षणों का महत्त्व है। और ऐसे समय में समभाव को बनाए रखना ही साधुत्व की पहिचान है। हाँ तो रात बीती, प्रातः हुआ। हमारे कदम राह पर बढ़ने लगे।

शिमला में : : :

महावीर जयन्ती का दिन था। हमने शिमले में प्रवेश किया। शिमले की प्रसिद्ध एवं मुख्य सड़क माल रोड़ पर ही जैन स्थानक है। उसमें ठहर गए। इस सड़क पर अधिक चहल पहल रहती है। शिमला में यही सड़क भीड़-भाड़ वाली है। फिर भी कहीं गन्दगी का नाम नहीं। रास्ता बिल्कुल साफ-सुथरा है। जगह-जगह पर कचरा डालने एवं थूकने के लिए अलग-अलग बर्तन रखे हैं। सड़क पर थूकने की किसी को इजाजत नहीं है। यह सड़क दिन भर चलती है। परन्तु शाम को रौनक बढ़ जाती है। शाम के समय लोग घूमने-फिरने निकलते हैं। अनेकों जोड़े रंग बिरंगी पोशाकों में हंसते खेलते चलते हैं। औरतों में फैशन अधिक है। बालों की फैशन अलग है, तो कपड़ों की फैशन अलग है।

पता चला, होटलों का रंग ढंग भी निराला है। अंग्रेजों के समय की शान तो नहीं रही। परन्तु अंग्रेजियत अभी भी जीवित है। बड़े-बड़े होटलों में शराब के दौर चलते हैं। गर्ल फ्रैन्ड (Girl friend) भी किराए पर मिल जाती है। सुना है कि रात को बारह-बारह बजे तक जोड़ों का नाच (dance) होता रहता है। ये होटल एक तरह से शराब एवं व्यभिचार के अड्डे से बने हुए हैं। लोग आमोद-प्रमोद में पैसे को पानी की तरह बहाते हैं।

ख्याल आया- यहाँ! भारत की आर्य-संस्कृति का किस प्रकार दिवाला निकल रहा है! यहाँ हमें दो तरह के दृश्य देखने को मिले— एक तरफ मनुष्य गरीबी में पिस रहा है तो दूसरी तरफ वह अमीरी के

नशे में पागल हो रहा है। कुछ लोग पैसे के अभाव में विवश हो अपनी बहिन-बेटियों को गिरवी रखते हैं, तो कुछ पैसे के मद में अपने होश-हवास खोकर अपनी बहिनों की इज्जत पर हाथ साफ करते नहीं शर्माते। इन्सान कितना पागल, क्रूर, निर्दयी एवं लम्पट हो सकता है यह हमें यहां देखने को मिला।

शिमला काफी दूर तक बसा हुआ है। यहा गेंदामल हेमराज जैन की दुकान है। यहां उनका परिवार भी रहता है, पुष्पादेवी को सन्त-सतियां के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा है। यदि कभी किसी कारणवश समय पर आहार को नहीं पहुंचते तो वह परेशान सी हो जाती, नौकर को तलाश करने भेज देती। लाला निरंजनलालजी का प्रेम भी अच्छा है। उनकी भक्ति से हम वहां २० दिन ठहरे। आहार-पानी करके प्राकृतिक दृश्य देखने चले जाते। प्रतिदिन सात-आठ मील का चक्कर तो सहज ही लग जाता। परन्तु, हमें कभी महसूस ही नहीं हो पाया कि हम इतने चले हैं। प्रकृति के मुखर सौन्दर्य को निहारते-निहारते मन ही नहीं भरता था और न ही पैर थकते थे। मेरा यह अनुभव रहा है कि वहां घूमने से शरीर में स्फूर्ति-सी आ जाती थी और दिमाग में ताजगी। वैसे वहाँ देखने योग्य अनेक स्थान हैं। परन्तु जाकू एवं क्वरी अपना विशेष महत्व रखते हैं। वहां के सुहावने दृश्य आज भी नहीं भूले हैं।

शिमला से प्रस्थान : : :

पुष्पा बहिन जी का आग्रह था कि कुछ दिन और ठहरें। परन्तु, हमारे मन में अभी भाखड़ा बांध (Dam) और गंगुवाल का बिजली घर (Power house) देखने की अभिलाषा थी। अतः उन्हें, समझा-बुझाकर वैशाख शुक्ला ३ को शिमला से प्रस्थान कर दिया। नांगल-भाखड़ा के लिए बिलासपुर होकर रास्ता बताया था। यह रास्ता बिल्कुल

अपरिचित-सा था। इस रास्ते से साधु साध्वी कभी नहीं आए गए थे। अतः लोगों को साधुओं के जीवन का बिल्कुल परिचय नहीं था।

शिमला से विलासपुर ५६ मील था। परन्तु सारा पहाड़ी रास्ता था। मैदान एवं रेत का कहीं नामोनिशान नहीं था। पत्थरों पर चलते चलते पैरों के तलवे घिस गए थे। उनमें से खून भी टपकने लगा था। और इतने लम्बे रास्ते में सिर्फ दो गांव आए थे। थोड़ी-थोड़ी दूर पर दुकानें एवं होटल अवश्य आते थे। परन्तु, वे विना किराया लिये ठहरने नहीं देते थे। बहुत समझाने पर रात ठहरने को जगह मिलती थी। इस रास्ते में प्रायः टूटे-फूटे छप्परों में रातें काटी थी। दो जगह तो पशु बांधने का स्थान मिला था और वहां भी खटमलों का साम्राज्य था। वे भी चींटियों की तरह लाइन बद्ध चलते थे। वे वस्त्र-पात्र एवं अन्य सब उपकरणों में भर गए। पर करें क्या ? रात को चल नहीं सकते, अन्य स्थान न होने के कारण समभाव से महावीर के जीवन का चिन्तन करते हुए रात बिताई।

रास्ते में गांवों की कमी एवं दरिद्रता की अधिकता के कारण हमें इस रास्ते में आहार वहुत ही कम मिला था। रास्ते की थकान, पत्थरों की रगड़ से घिसे हुए पैर और भूख से उतरे हुए हमारे चेहरे उस समय देखने लायक थे। रास्ते में अनेक होटल आते थे। परन्तु, बिल्कुल शाकाहारी होटल वहुत कम थे। और हर होटल पर Waitresses (खाना परोसने वाली लड़कियाँ) रखी हुई थीं।

सारा रास्ता हरा भरा था। प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुन्दर था। उसे देखते देखते मन नहीं भरता था। परन्तु वहां के निवासी बहुत गरीब हैं। उनकी स्थिति देखकर नयन भर जाते थे। खैर, हमने किसी तरह तीन दिन में रास्ता तय किया। विलासपुर आ पहुंचे। एक सघन वृक्ष की छाया में विश्राम लिया। अनेक स्त्री पुरुष हमे घेर कर खड़े हो

गए। हम उनके लिए अपरिचित थे। अनेक तरह के प्रश्न पूछने लगे। इतने मे कुछ वैष्णव सन्त भी आ गए। वृक्ष की शीतल छाया में विचार चर्चा चलती रही। स्कूल के मास्टर भी ज्ञान गोष्ठी में शामिल हो गए। उन्होंने हमें स्कूल में ठहरा दिया और वहां की स्थिति-परिस्थिति का परिचय कराया। उन्होंने बताया कि यहां लोग पैसे वाले नहीं हैं। खेती एवं मेहनत करके पेट भरते हैं। धर्म-कर्म से भी बहुत दूर हैं। न संध्या करना जानते हैं और न पूजा पाठ ही। फिर भी इनमें एक बहुत बड़ा गुण है। वह यह कि ये बहुत ईमानदार हैं। अन्याय का पैसा लेना बहुत बुरा समझते हैं। यहां कभी चोरी हुई हो ऐसा सुना ही नहीं गया। यदि कोई राही रास्ता भूल जाए तो ये लोग अपना सामान रास्ते में रखकर उसे मार्ग बता आते हैं और लौट कर आने पर अपना सामान ले जाते हैं। उनका सामान वहीं पड़ा रहता है। उस रास्ते से आने-जाने वाला कोई भी व्यक्ति उनके सामान को नहीं छूता।

यह सुनकर मैंने सोचा कि अभी भारत में प्रामाणिकता का जनाजा नहीं निकला है। इने गिने व्यक्ति ही नहीं, कई गांव ऐसे हैं, जो अशोक युग की याद दिलाते हैं। वस्तुतः प्रामाणिकता जीवन का एक महत्वपूर्ण गुण है। प्रामाणिक व्यक्ति धर्म की, आत्म उत्थान की बात जल्दी समझ सकता है। हमने यहां प्रवचन किया। लोगों पर अच्छा असर पड़ा और उनके आग्रह से हम यहां ४ दिन ठहरे। बहुत से लोगों ने मद्य मांस का त्याग किया।

नंगल की ओर : : :

विलासपुर से भाखड़ा का सीधा रास्ता निकट का था। परन्तु था बड़ा खतरनाक और रास्ते में सतलज नदी भी पड़ती थी। उस पर पुल नहीं था और हमें नौका में बैठना नहीं था। अतः कीर्तपुर का रास्ता लिया। इस रास्ते भाखड़ा १०० मील था। परन्तु, हमें वहां जाना था

अतः चल दिए। ७-८ मील तक हमें यह पता ही नहीं लगा कि हम किस रास्ते पर चल रहे हैं? रास्ता कहां है? वहां कोई मनुष्य भी दिखाई नहीं देता था कि जिसे पूछकर निश्चय कर लें कि हम सही राह पर चल रहे हैं। वहां पहाड़ एवं झाड़ियों के अतिरिक्त कुछ नहीं था। पहाड़ों के ऊपर एक छोटी सी पगडंडी जा रही थी। ऊपर सगर्व सिर उठाये पर्वत आकाश को चूमने का प्रयत्न कर रहे थे।, तो नीचे उफनती हुई सतलज धरती के चरण पखार रही थी। ऊपर स्वर्ग था तो नीचे मृत्यु मुंह खोले खड़ी थी। चलते हुए थोड़ी सी असावधानी हुई कि हड्डी पसली का पता मिलना भी असंभव। पहाड़ की ऊंचाई इतनी अधिक थी कि दरिया की ओर देखते ही डर लगता था। उस ओर बिना देखे ही सिर चकरा रहा था। हमारे लिये चलना भी कठिन हो रहा था। अतः हम सब बैठ गए और रेंगते हुए वह रास्ता पार किया। उस समय हमें रास्ते के सिवाय न कुछ सूझ रहा था और न हमने अन्य किसी तरफ देखने का प्रयत्न ही किया। परन्तु, मन में दृढता थी। मार्ग की कठिनाइयाँ हमारे साहस एवं उत्साह को घटा नहीं सकी। जितनी अधिक कठिनाइयें आती उतना ही साहस बढ़ता जा रहा था। और आखिर इस भयावने पथ को पार करके शिमला पहाड़पुर पहुँच गए। यह छोटा-सा गांव है व यहां एक प्राइमरी स्कूल है। पंडित जी के आग्रह से वहां ठहर गए। हमे देखने के लिए कई लोग एकत्रित हो गए। पंडित जी से बातें होती रहीं। उन्होंने वहां के विचित्र रीति रिवाज बताए। अनमेल विवाह की बातें सुनकर तो मै हैरान रह गई। राजस्थान में भी कई वृद्ध १३-१४ वर्ष का लड़की के साथ विवाह कर लेते हैं। परन्तु यहां पंडितजी ने एक लड़के की तरफ इशारा करते हुए मुझे बताया कि इसका चाचा मर गया। इसकी चाची की उम्र ३४-३५ वर्ष की है। उसने इसके साथ पुनर्विवाह कर लिया है। यह लड़का १३ वर्ष का है। इस तरह की अनेक घटनाएं उसने सुनाई। उसने यह भी

गए। हम उनके लिए अपरिचित थे। अनेक तरह के प्रश्न पूछने लगे। इतने में कुछ वैष्णव सन्त भी आ गए। वृक्ष की शीतल छाया में विचार चर्चा चलती रही। स्कूल के मास्टर भी ज्ञान गोष्ठी में शामिल हो गए। उन्होंने हमें स्कूल में ठहरा दिया और वहां की स्थिति-परिस्थिति का परिचय कराया। उन्होंने बताया कि यहां लोग पैसे वाले नहीं हैं। खेती एवं मेहनत करके पेट भरते हैं। धर्म-कर्म से भी बहुत दूर हैं। न संध्या करना जानते हैं और न पूजा पाठ ही। फिर भी इनमें एक बहुत बड़ा गुण है। वह यह कि ये बहुत ईमानदार हैं। अन्याय का पैसा लेना बहुत बुरा समझते हैं। यहां कभी चोरी हुई हो ऐसा सुना ही नहीं गया। यदि कोई राही रास्ता भूल जाए तो ये लोग अपना सामान रास्ते में रखकर उसे मार्ग बता आते हैं और लौट कर आने पर अपना सामान ले जाते हैं। उनका सामान वहीं पड़ा रहता है। उस रास्ते से आने-जाने वाला कोई भी व्यक्ति उनके सामान को नहीं छूता।

यह सुनकर मैंने सोचा कि अभी भारत में प्रामाणिकता का जनाजा नहीं निकला है। इने गिने व्यक्ति ही नहीं, कई गांव ऐसे हैं, जो अशोक युग की याद दिलाते हैं। वस्तुतः प्रामाणिकता जीवन का एक महत्वपूर्ण गुण है। प्रामाणिक व्यक्ति धर्म की, आत्म उत्थान की बात जल्दी समझ सकता है। हमने यहां प्रवचन किया। लोगों पर अच्छा असर पड़ा और उनके आग्रह से हम यहां ४ दिन ठहरे। बहुत से लोगों ने मद्य मांस का त्याग किया।

नंगल की ओर : : :

विलासपुर से भाखड़ा का सीधा रास्ता निकट का था। परन्तु था बड़ा खतरनाक और रास्ते में सतलज नदी भी पड़ती थी। उस पर पुल नहीं था और हमें नौका में बैठना नहीं था। अतः कीर्तपुर का रास्ता लिया। इस रास्ते भाखड़ा १०० मील था। परन्तु, हमें वहां जाना था

अतः चल दिए। ७-८ मील तक हमें यह पता ही नहीं लगा कि हम किस रास्ते पर चल रहे हैं? रास्ता कहां है? वहां कोई मनुष्य भी दिखाई नहीं देता था कि जिसे पूछकर निश्चय कर लें कि हम सही राह पर चल रहे हैं। वहां पहाड़ एवं झाड़ियों के अतिरिक्त कुछ नहीं था। पहाड़ों के ऊपर एक छोटी सी पगडंडी जा रही थी। ऊपर सगर्व सिर उठाये पर्वत आकाश को चूमने का प्रयत्न कर रहे थे।, तो नीचे उफनती हुई सतलज धरती के चरण पखार रही थी। ऊपर स्वर्ग था तो नीचे मृत्यु मुंह खोले खड़ी थी। चलते हुए थोड़ी सी असावधानी हुई कि हड्डी पसली का पता मिलना भी असभव। पहाड़ की ऊंचाई इतनी अधिक थी कि दरिया की ओर देखते ही डर लगता था। उस ओर बिना देखे ही सिर चकरा रहा था। हमारे लिये चलना भी कठिन हो रहा था। अतः हम सब बैठ गए और रेंगते हुए वह रास्ता पार किया। उस समय हमें रास्ते के सिवाय न कुछ सूझ रहा था और न हमने अन्य किसी तरफ देखने का प्रयत्न ही किया। परन्तु, मन में दृढ़ता थी। मार्ग की कठिनाइयाँ हमारे साहस एवं उत्साह को घटा नहीं सकी। जितनी अधिक कठिनाइयें आती उतना ही साहस बढ़ता जा रहा था। और आखिर इस भयावने पथ को पार करके शिमला पहाड़पुर पहुँच गए। यह छोटा-सा गांव है व यहां एक प्राइमरी स्कूल है। पंडित जी के आग्रह से वहां ठहर गए। हमें देखने के लिए कई लोग एकत्रित हो गए। पंडित जी से बातें होती रहीं। उन्होंने वहां के विचित्र रीति रिवाज बताए। अनमेल विवाह की बातें सुनकर तो मैं हैरान रह गई। राजस्थान में भी कई वृद्ध १३-१४ वर्ष का लड़की के साथ विवाह कर लेते हैं। परन्तु यहां पंडितजी ने एक लड़के की तरफ इशारा करते हुए मुझे बताया कि इसका चाचा मर गया। इसकी चाची की उम्र ३४-३५ वर्ष की है। उसने इसके साथ पुनर्विवाह कर लिया है। यह लड़का १३ वर्ष का है। इस तरह की अनेक घटनाएं उसने सुनाई। उसने यह भी

बताया कि यहां के लोग बहुत गरीब हैं। फिर भी इन्हें शराब-मांस एवं नाचने का बहुत शौक है। चाहे घर में खाने को आटा भी न हो, पर इन्हें शराब-मास अवश्य चाहिए। इसके लिये वे अपनी सन्तानों को बेच देते हैं, पत्नी को गिरवी रख देते हैं। यहां के आदमी इतने आलसी हैं कि खाने और नाचने के सिवाय और कोई काम नहीं करते। घर खेत एवं बाजार का काम अधिकतर औरतें ही करती हैं। यहां की औरतें हृष्ट पुष्ट और ताकतवर होती हैं। वे तीन-तीन मन वजन उठाकर पहाड़ पर चढ़ जाती हैं। पंडितजी ने बहुत आग्रह किया कि आप यहां ठहर कर इन्हें उपदेश देवें। परन्तु समय की कमी के कारण हम वहां अधिक नहीं ठहर सकते थे। उस दिन कुछ उपदेश दिया और आगे बढ़ गए। पर्वतों की टेढ़ी-मेढ़ी शृंखलाओं एवं गहरी घाटियों को पार करते हुए हम गंगुवाल पहुँच गऐ। वहां Power house के सामने खड़े थे। अनेक व्यक्ति दर्शक के रूप में आ खड़े हुए। उन्हें मानव का कर्तव्य क्या होता है, समझाया। कुछ जीवन की बातें की। और फिर गुरुद्वारे में आए। वहां ठहरने को स्थान मिल गया। यहा का Power house देखा। यह काफी शक्तिशाली Power house है। इसमें विशालकाय Electric Generator लगे हुए हैं और वे दिन रात जल विद्युत (Hydroeltctric) उत्पन्न करते हैं। यहां का Power house देखकर हम नंगल पहुचे। भाखड़ा बांध यहा से १० मील है। दूसरे दिन प्रातः ही Dam देखने चल पड़े। पहाड़ी रास्ता है, पगडण्डियों के रास्ते पहाड़ो को पार करते हुए Dam पर पहुँचे। यहां Dam का निर्माण कार्य हो रहा था। ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं था। मजदूर एवं अधिकारी लोग नंगल टाउनशीप में रहते थे। वहा से गवर्नमेन्ट रेल के द्वारा इन्हें यहां पहुंचा देती है। अतः यहां न ठहरने को स्थान मिला और न खाने को रोटी। प्रकृति का दृश्य एवं प्रकृति को अपने अधिकार में करने की मानव शक्ति को जी भर कर देखा।

यह बांध भारत में सबसे बड़ा है। इसे बनाने के लिए सैकड़ों गांव खाली करवाने पड़े हैं। तीनों तरफ पहाड़ हैं और चौथी तरफ पत्थर की दीवाल बनाकर नदियों के पानी को एकत्रित किया जाएगा और उसे नहरों के रास्ते गांवों में पहुंचा कर सिंचाई का कार्य लिया जाएगा। वर्षा के दिनों में बाढ़ के रूप में तबाही मचाने वाला यह दरिया मानव के प्रयत्न से अभिशाप से वरदान के रूप में बदल जाएगा। इसके द्वारा उजड़ने एवं बर्बाद होने वाले लाखों गांव एवं खेत आबाद हो जाएंगे। और छोटे-छोटे गांव भी विद्युत प्रकाश से जगमगाने लगेंगे, ऐसा सरकार का कहना है।

इस बांध का निर्माण कार्य अधिकतर यंत्र ही करते हैं। यंत्रों के द्वारा विशाल-कार्य पत्थरों को तोड़कर कंकरीट बनाया जाता है और यंत्र के द्वारा ही वह कंकरीट एक यंत्र में डाली जाती है जो उसे बांध तक पहुँचाती है। वह कंकरीट एक पटे पर तेज गति से बिजली द्वारा पहुंचाई जाती है। जब यह पटा चलता है तो दूर से ऐसा लगता है कि भेड़ों की लाइन जा रही है। बांध के निकट जाकर कंकरीट का ढेर लगता जाता है, वहां यत्र से ही उसमें पानी, बजरी एवं सीमेंट मिलाया जाता है और फिर यंत्रों से ही लोहे के बड़े-बड़े ढोलों में भरकर बांध निर्माण स्थल पर पहुँचाया जाता है। इतना ही नहीं निर्माण कार्य के लिए आवश्यक लोहा, लकड़ी आदि हर वस्तु यंत्रों के द्वारा ही यथा -स्थान पहुंचा दी जाती है। यंत्रों की सहायता से यह काम इतनी तेजी से हो रहा है। यदि केवल मजदूरों से करवाया जाता तो पता नहीं कितने युग लगते।

इस Dam पर भी एक Power house बन रहा है। परन्तु अभी उसे देखने की इजाजत नहीं थी। इन दिनों टनल (Tunnel= गुफा) भी देखने के लिए बन्द थी। अतः Dam देखकर वापिस नांगल और चल पड़े। दो बजे का समय था, ज्येष्ठ का महीना था। सूर्य

अपनी सहस्र रश्मियों से आग उगल रहा था। जमीन तवे की तरह तप रही थी। कच्चे रास्ते को पार करके सड़क पर आए तो डामर रोड़ उससे भी अधिक गर्म थी। जैसे-तैसे नंगल पहुंच गए। सबके पैरों में छाले पड़ गए और २० मील के विहार से शरीर थक कर चूर-चूर हो गया। किसी को होश-हवास नहीं रहा। थोड़ी देर आराम किया, फिर आहार पानी लाए। कुछ पानी के घूंट गले के नीचे उतारे तब कुछ चैन पडा। दो दिन नगल ठहर कर विश्राम किया, थकावट उतारने का प्रयत्न किया।

नंगल की गुफा (Tun el) में : : :

नंगल में सतलज नदी के नीचे एक गुफा बनाई गई है। इसके बनाने का उद्देश्य है-नदी के पानी पर नियंत्रण रखना। यह गुफा (Tunnel) भी देखनें योग्य है। गर्मी में इतनी ठंडी रहती है कि शिमले एवं काश्मीर को भी मात कर देती है। इसमें गर्मी का बिल्कुल अनुभव नहीं होता। कहीं कहीं नदी का पानी भी झरता है। वह ऐसा प्रतीत होता है मानों कोई झरना झर रहा हो। अंधेरे को दूर करने के लिये बिजली की व्यवस्था है। इस Tunnel में नदी के पानी से गंधक बनाने की भी एक मशीन लगा रखी है। इस तरह Tunnel केवल दर्शनीय ही नहीं उपयोगी भी हैं। इसमें प्रवेश करने एवं निकलने के दो रास्ते हैं। एक रास्ता सीढ़ियों का है और दूसरा लिफ्ट (Lift) का। Lift में हर व्यक्ति नहीं बैठ सकता। यों तो अन्दर जाने के लिए भी पास (Permit) लेना होता है। परन्तु Lift में बैठनें का Permit अलग लेना पडता है। वस्तुतः यह मानव निर्मित सुरंग भी अपने ढंग की अनोखी है।

नंगल से नंगली में : : :

नंगल से बिहार करके नंगली आए। चार मील का रास्ता था। यहां सुन्दरलालजी जैन का घर है। कुछ दिन पहले पंजाब प्रान्त मन्त्री

शुक्लचन्दजी म० के गुरुभाई हरिश्चन्द्रजी म० यहां आए थे। उन्होंने ुन्दरलालजी के मकान में वृद्धाश्रम की स्थापना की थी और इसके ाम पर कई गांवों से रुपये भी एकत्रित किए थे। परन्तु, यहां मकान ालिक के सिवाय कोई वृद्ध दिखाई नहीं दिया। उनकी पुत्री रसोई नाने का काम करती थी और उनका दामाद उसका प्रचारक था। प्राश्रम का अधिष्ठाता एक साधु वेष छोड़ा हुआ व्यक्ति था। आश्रम ां कोई जान परिलक्षित नहीं हो रही थी। यह देखकर मुझे ऐसा लगा के कुछ साधु केवल प्रतिष्ठा प्राप्त करने तथा संस्था की आड़ में पैसा कट्ठा करने मे व्यस्त हैं। उनमें संस्था चलाने की योग्यता कम पाई ाती है। इस संस्था का भी यही हाल हुआ। चन्द दिनों में समाप्त हो ाई। इस तरह समाज के धन का दुरुपयोग एवं अपयश के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं आता।

संस्था के अधिष्ठाताजी जन्म से जैन और जैन साधु भी रह चुके है। पर उनके जीवन में जैनत्व एवं साधु समाज के प्रति श्रद्धा कम ही नजर आई। वे दिन भर हमारे पास बैठे रहे और पंजाब के तमाम साधुओं की निन्दा करते रहे। मै सुनते-सुनते परेशान हो गई। परन्तु उस महानुभाव ने पीछा ही न छोड़ा। पूरे दिन वह सब की राम-कथा सुनाता रहा। परन्तु उसने कभी भूलकर भी किसी की प्रशंसा नहीं की।

आनन्दपुर में : : :

यहां एक दो दिन ठहरने की इच्छा थी। परन्तु, उस सज्जन से थक गई थी। और रोपड़ का एक आदमी हमें लेने को भी आ गया था। इसलिए दूसरे ही दिन वहां से चल पड़े। कुछ ही घण्टों में आनन्दपुर पहुँच गए। वहां गुरुद्वारे में ठहरे। यहां गुरु गोविन्दसिंहजी का गुरुद्वारा है। सिखों में उनके प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति है। उन्होंने हमें गुरु गोविन्दसिंह के शास्त्र दिखाए। यहां मेरा प्रवचन भी हुआ

लोगों ने ठहरने का बहुत आग्रह किया। परन्तु समय की कमी के कारण हम ठहरने में विवश थे।

गरीबी और शिक्षा प्रेम : : :

यहां से चलकर हम कीरतपुर पहुँचे। यहां रोपड़ के भाई भी आ गए थे। हम स्कूल में ठहर गये। अध्यापक ने उस दिन बच्चों को छुट्टी दे दी। उसने घरों में साथ चलकर आहार पानी दिलाया। दोपहर को हमारा प्रवचन भी करवाया। फिर उसने स्कूल का परिचय देते हुए बताया कि इलाके में गरीबी बहुत है। करीब ६० प्रतिशत बच्चों के पैरों में पहनने को जूते नहीं हैं। फिर भी इनमें पढ़ने की अभिलाषा है। अध्यापक ने एक लड़के की तरफ इशारा करके मुझे बताया कि यह १२ वर्ष का लड़का है। इसका गांव यहां से १५ मील दूर है। बूढ़े माँ बाप का इकलौता पुत्र है। परन्तु इतना गरीब है कि नंगे पैर पैदल चलकर आता है। फिर भी सब लड़कों से पहले आता है और मेरा काम करके सब से पीछे जाता है। और यह इतना मेहनती है कि हर वर्ष प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होता रहा है। इस वर्ष यह आठवीं में प्रविष्ट हुआ है। विद्यार्थी की लगन, बुद्धि एवं मेहनत को देखकर मुझे प्रसन्नता हुई परन्तु उसकी गरीबी को सुनकर मेरा हृदय कांपने लगा। कैसा सुन्दर गुणवान एवं होनहार लड़का, परन्तु बचपन से ही संघर्षों से लड़ रहा है। ऐसे व्यक्ति ही आगे चलकर अपना विकास करते हैं और देश के गौरव को भी चमकाते हैं। यह प्रकृति का नियम है कि आदमी छोटे से ही बड़ा बनता है। पाश्चात्य विचारक "इमरसन" (Emerson) ने भी यही कहा है The greatest man was in the history of the poorest वस्तुतः गरीबी पाप नहीं है। यदि हम गहराई से सोचें तो पैसे के अभाव का नाम गरीबी नहीं है। सचमुच में गरीब वह है जो धन-वैभव का अम्बार लगा होने पर भी धन की तृष्णा से संतप्त

। एक विचारक ने भी यही बात कही है; The poor men are hose who have much, but want more and more." अतः गरीबी भी जीवन का अभिशाप है तो अमीरी भी जीवन का छोटा अभिशाप नहीं है। दोनों के मध्य की खाई को मिटाकर दोनों में समानता लाना ही स्वस्थ गृहस्थ जीवन है।

ोपड़ में : : :

अध्यापक महोदय ने हमें ठहरने का बहुत आग्रह किया। परन्तु परिस्थितिवश हम ठहर नहीं सके। वहां से चलकर रोपड़ आ गये। हां के संघ का प्रेम अच्छा है। व्याख्यान में अच्छी उपस्थिति हो जाती ी। ठहरने का बहुत आग्रह किया। परन्तु अब वर्षावास निकट आ ा था। अत: हम यहां भी अधिक नहीं ठहर पाये।

धियानो की राह पर : : :

हम रोपड़ से चलकर माघवाड़ा आए। जब हम गांव के निकट चे तो कुछ लोगों ने नहर में से एक चारपाई पर बंधे हुए दो बच्चों निकाला। संयोग की बात है कि दोनों बच्चे जीवित थे। उनमें से वारह वर्ष का था और दूसरा आठ वर्ष का था। उनसे पूछने पर ोंने बताया कि उनका पिता मर गया। उनकी माता का आचरण नहीं था। वह चाचा के साथ दुष्कर्म करती थी। उन्होंने इसका ाध किया। चाचा ने अपना मार्ग निष्कटंक बनाने के लिये हम दोनों चारपाई पर बांधकर नहर में डाल दिया। परन्तु, 'जाको राखे सांइयां न मारनहार।" वासना में मनुष्य कितना अन्धा हो जाता है। एक वैषयिक सुख के लिए वह अपनी सन्तान को मारते हुए भी ोच नहीं करता।

माछीवाड़े से चलकर खन्ना आए। यह एक अच्छा कसबा है। संस्कृत कालेज भी है। संस्कृत के अध्ययन की अच्छी व्यवस्था है

लोगों में श्रद्धा-भक्ति भी अच्छी है। ठहरने का आग्रह बहुत किया परन्तु हमारे मन में आचार्य श्री के दर्शन की उत्कंठा लग रही थी। अत लोगों को समझाकर आगे बढ़ गए। यहां से लुधियाना २८ मील र गया था।

आचार्य श्री की सेवा में : : :

वि० सं० २०१६ ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को हमने लुधियाना प्रवेश किया। अनेक वर्षों से आचार्य श्री के दर्शनों की अभिलाषा थ वह आज सफल हो रही थी। सबसे पहले स्थानक मे पहुँचे। परम श्रद्धे आचार्य श्री आत्मारामजी म० के दर्शन किए। शारीरिक अस्वस्थता वं कारण आप काफी दुर्बल हो गये थे। आंखों से दिखाई नहीं देता थ और कानों में सुनने की शक्ति भी कुछ कम है। परन्तु आपकी स्मरः शक्ति गजब की है। आपका आगम ज्ञान बहुत गहरा है। आगम क कोई स्थल आप से छिपा हुआ नहीं है। इतने वृद्ध एवं अस्वस्थ हो हुए भी आप सदा स्वाध्याय एवं चिन्तन-मनन में संलग्न रहते हैं। पं श्री रत्नमुनिजी म० से नियमित रूप से शास्त्र सुनते रहते हैं। उनक बातचीत भी प्रायः आगमों (शास्त्रों) के सम्बन्ध में ही होती है। यदि उन्हें जीवित आगम कहूँ तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। खेद कि इन पंक्तियों के लिखे जाने के बाद आचार्य श्री अपने वृद्ध देह क त्याग कर स्वर्गवासी हो गये हैं।

आचार्य श्री की आज्ञा के अनुसार इस वर्ष लुधियाना वर्षावा किया। मैं आचार्य श्री की सेवा का लाभ उठाना चाहती थी। उन शास्त्रीय अनुभव लेने आई थी। और आचार्य श्री के शिष्य ए परामर्शदाता श्री ज्ञान मुनिजी म० के ज्ञानसागर में से कुछ बिंदु प्रा करना चाहती थी। मै तो लुधियाना में सुनने आई थी, सुनाने क नहीं। परन्तु पं० श्री ज्ञान मुनि जी म० इतने कंजूस निकले कि प्रति

दिन के व्याख्यान का दायित्व हम पर डालना चाहा। उनसे बहुत प्रार्थना की और यह इच्छा प्रकट की कि हम आपका प्रवचन सुनने आए हैं। फिर भी उन्होंने सप्ताह में दो दिन-शनिवार और रविवार का आदेश दे ही दिया। शनिवार को जैन हाई स्कूल में और रविवार को जैन स्थानक में भाषण होता रहा। शेष दिनों मे पं० श्री ज्ञान मुनि जी म० के प्रवचन का लाभ भी मिलता रहा ।

मै दोपहर के समय श्रद्धेय आचार्य श्री जी म० से व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवती) सूत्र का वाचन करती थी। यह मै पहले ही बता चुकी हूँ कि आचार्य श्री जी का आगमिक अध्ययन गहरा है। वे भगवती सूत्र के भावों को स्पष्ट करने के लिए अन्य आगमों के अनेक उद्धरण (Reference) देते थे। उनसे एक शास्त्र अध्ययन करने से कई शास्त्रों का अध्ययन तो सहज ही हो जाता है ।

आचार्य श्री का जितना गहरा अध्ययन एवं विशाल ज्ञान है, उतनी ही अधिक उनके जीवन में सरलता, कोमलता एवं मृदुलता परिलक्षित होती है। विद्वानो मे प्रायः ज्ञान की अभिवृद्धि के साथ अभिमान सहज ही आ जाता है। वे ज्ञान के गर्व मे दूसरों को कुछ नहीं समझते। जैसे पूंजीपतियो को अपने धन का गर्व होता है वैसे ही विद्वानों को अपने ज्ञान का अभिमान होता है। कुछ ही महापुरुष ऐसे होते है जो असाधारण शक्ति पाकर भी अकड़ते नहीं। वे तो फलों से लदे हुए वृक्ष की तरह झुकते जाते हैं। ज्ञान की सम्पत्ति उन्हे अधिक विनम्र बनाती रहती है। वस्तुतः ज्ञान का महत्त्व इसी में है कि वह आचरण में साकार बने और जीवन को सरल, सरस एवं स्निग्ध बनाए ।

आचार्य श्री से हमने बहुत कुछ पाया, फिर भी वह कम था। करीब साढ़े पांच महीने के समय में उस महासागर से कुछ ही बिंदु पा सकी। पर वही मेरी अमूल्य निधि है। उस महापुरुष ने जब भी गए

आगम ज्ञान देने में कभी अनुदारता नहीं की। उनका आदर्श जीवन एवं अध्ययन कराने की अभिरुचि सदा आंखों के सामने झलकती है। परन्तु एक बात हमे उस समय भी खटकी और आज भी खटकती है। लुधियाना का सौभाग्य है कि आचार्य श्री जैसे महापुरुष वहाँ विराजमान हैं। वे चाहें तो उनसे सहज ही लाभ उठा सकते है। यदि मारवाड़ के किसी विशिष्ट शहर को यह सौभाग्य मिला होता तो न मालूम कितने व्यक्ति शास्त्रीय ज्ञान से अपने जीवन को आलोकित कर लेते। परन्तु पंजाबियों में शास्त्रीय ज्ञान सीखने की अभिरुचि देखने में कम आई है। अभिनव विचारक साधुओं में भी शास्त्रीय ज्ञान बहुत कम देखने को मिला।

आंखों की रोशनी न रहने के कारण आचार्य श्री स्वयं लिखने में असमर्थ हैं, परन्तु अभी उनकी स्मरण-शक्ति इतनी तेज है कि वे अपने ज्ञान को लिपि-बद्ध करा सकते हैं। आचार्य श्री के पास एक-दो नहीं, चार योग्य शिष्य है। पं० श्री हेमचन्द्र जी म०, ज्ञान मुनि जी म०, रत्न मुनि जी म० एवं मनोहर मुनि जी म०, चारों सन्त प्रौढ़ विद्वान। हेमचन्द्र जी म० का संस्कृत व्याकरण एवं साहित्य का गहरा अध्ययन है। आचार्य श्री के विचारों एवं आगमिक परम्परा को जीवित एवं चिरस्थायी रखने का दायित्व इन्हीं पर आता है। पं० श्री ज्ञान मुनि जी म० पर यह दायित्व कुछ अधिक आता है। आशा है वे अपने दायित्व को अच्छी तरह निभाकर आचार्य श्री एवं आगम साहित्य की सेवा का लाभ उठाएगे।

आचार्य श्री जी का हृदय जितना विशाल है, उतना विशाल हृदय पंजावियों का नहीं है। मै यह सुनती रही हूँ कि पंजाब में साम्प्रदायिकता नहीं है। पंजाबी सन्त-सतियां भी इस बात को दुहराते रहते है कि हमारे यहां साम्प्रदायिकता नहीं है। परन्तु साधु-साध्वियों एवं संघ के

लोगों के दिलों में साम्प्रदायिकता संकीर्णता के स्पष्ट दर्शन होते हैं। यह ठीक है कि लोगों के मन में प्रेम है। हमें पंजाब में लोगों की श्रद्धा-भक्ति भी मिली है। हमें कई स्थानों से वर्षावास की विनतियां भी आती रही हैं। परन्तु इसके साथ साथ साम्प्रदायिक भावना के भी दर्शन होते रहे हैं। पंजाबी-मारवाड़ी का भेद ही नहीं वरन कुछ साधु-साध्वियों के मन में पंजावी-पंजाबी में भी भेद की दीवार खड़ी है। कई साध्वियों के मुँह से एक दूसरे की आलोचना-प्रत्यालोचना सुन कर एवं उनके आपसी तथा हमारे साथ के सम्बन्ध देखकर मुझे तो यह अनुभव हुआ कि पंजाब साम्प्रदायिकता से अछूता नहीं है। वास्तव में यह विष समाज में सर्वत्र फैला हुआ है।

लुधियाना वर्षावास में हमारे सामने अनेक प्रकार की परिस्थितियां आई। परन्तु फिर भी हमारा वर्षावास सफल रहा। हमें आगम ज्ञान की एवं एक शिष्या की प्राप्ति ही हुई। जम्मू वालों का आग्रह था कि पाकिस्तान बनने के बाद कोई सतियां वहां नहीं आई। अतः आप जम्मू पधारें। हमारी इच्छा भी जम्मू जाने की थी। परन्तु हमें मार्ग की कठिनाइयां बहुत बताई गई। यह कहा गया कि जम्मू का रास्ता साध्वियों के जाने योग्य नहीं है। उस समय श्री समदर्शी जी म० का जम्मू वर्षावास था। हमने उनसे मार्ग की जानकारी चाही तो उन्होंने बताया कि जम्मू का रास्ता कठिन नहीं है। रास्ते में थोड़ी-थोड़ी दूर पर गांव आते हैं। रास्ते में जैनों के घर नहीं है परन्तु आहार-पानी एव स्थान की कमी नहीं पड़ती। लोगों में जैन सन्तों के प्रति अच्छी श्रद्धा भक्ति है। इससे हमारा उत्साह बढ़ गया। हमने जम्मू जाने का विचार बना ही लिया।

लुधियाना से विहार : : :

वर्षावास समाप्त हुआ। मगसर कृष्णा प्रतिपदा को दो बजे

बिहार करने का निश्चय कर लिया। आचार्य श्री से भी आज्ञा प्राप्त कर ली। लोगों को तो मैंने कभी आने जाने का समय बताया ही नहीं। फिर भी सारा संघ हमारे जम्मू जाने के विरोध में था। विरोध का कारण वैरागन थी। एक भाई ने व्याख्यान में ही कह दिया कि आचार्य श्री जी की आज्ञा है कि सतीजी यहां चार दिन ठहरेंगी। हमने न हां कही और न ना कही। व्याख्यान से उठकर हम आचार्य श्री के चरणों मे उपस्थित हुए। उनसे अनुनय-विनय की, लोगों को समझाया-बुझाया। इस संघर्ष में वहीं १२ बज गये। परन्तु आचार्य श्री जी की विहार करने की अनुमति मिल गई और ठीक दो बजे हमने लुधियाना से विदा ले ली। वैरागिन सेवावन्ती जी भी साथ में ही थी। हमारे कदम अपने संकल्प के अनुसार बढ़ने लगे। जम्मू सूचना भेज दी गई कि हमने जम्मू के लिए विहार कर दिया है।

मुकेरिया में : : :

लुधियाना से चलकर फिल्लोर, फगवाड़ा नहर होते हुए होश्यारपुर आई। सब जगह लोगो का ठहरने का बहुत आग्रह था। परन्तु हमें जम्मू पहुँचना था और वहां से वापिस लौटने का भी विचार था। अतः होश्यारपुर थोड़े समय ठहरे और आगे चल पड़े। वहा से टाडा होते हुए मुकेरियां पहुँच गये।

यहां से जम्मू करीब १०० मील रह जाता है। यहां से चलने के बाद रास्ते मे कही भी जैनों के घर नहीं आते हैं यहां लोगों में श्रद्धा भक्ति एवं प्रेम अच्छा है। संघ का ठहरने के लिए बहुत आग्रह था। परन्तु जम्मू होकर वापिस लौट आने की अभिलाषा थी। अतः ठहरने का समय कम था। फिर भी अधिक आग्रह होने के कारण आठ दिन ठहरना ही पड़ा। आठ दिनों में काफी कार्य हुआ। बहिन-भाईयों के जीवन में धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए बहिनों के लिए महिला

मंडल की एवं भाइयों के लिए स्वाध्याय मंडल की स्थापना हुई।

जम्मू की ओर : : :

पंजाब में जम्मू के लोगों में जो धर्म-प्रेम एवं श्रद्धा देखने को मिली, वह अन्यत्र दिखाई नहीं दी। देश विभाजन के बाद साध्वियों का जम्मू जाने का यह प्रथम अवसर ही था। इससे बहिनों के मन में अपूर्व उत्साह था। कुछ बहिनें तो हमें लेने के लिए मुकेरियां आ पहुंची। आठ दिन मुकेरियां ठहर कर हम पठानकोट आ पहुँची। यहां से जम्मू ७० मील रह जाता है। यहां जम्मू की २५-३० बहिनें आ पहुंची। काफी अच्छी चहल-पहल हो गई। हमें ऐसा लग रहा था कि जम्मू हमारा परिचित क्षेत्र है।

पठानकोट से चलकर माधोपुर पहुँचे। यहां नहरों का हेड (Head) है। ऐसे यह रावी नदी के तट पर बसा हुआ छोटा सा गांव है। परन्तु नहरों का हेड बन जाने से यहां की आबादी बढ़ गई। मजदूर एवं सरकारी अफसरो का छोटा सा शहर बन गया है। नई आबादी होने के कारण काफी साफ सुथरा है। यहां का प्राकृतिक दृश्य भी बड़ा सुहावना है। सामने ही आकाश में मस्तक उठाए हिमालय खड़ा है। पास में रावी नदी बह रही है। देश विभाजन के पहले इस नहर में से एक नहर लाहौर को भी जाती थी। परन्तु विभाजन के बाद उसे बन्द कर दिया गया। रावी के पानी को भी यहां रोकने का प्रयत्न किया गया। किन्तु अब नेहरु अयूब समझौते के अनुसार इस नदी का कुछ पानी पाकिस्तान कोभी दिया जा रहा है।

माधोपुर की नहर का पुल पार करके आगे बढ़ गए। कुछ दूर पर चान्दपुर आया। यहीं से जम्मू कश्मीर की सीमा प्रारम्भ हो जाती है। पहले कश्मीर जाने वालों को यहां अपना पासपोर्ट (Pass port)

दिखाना होता था। बिना पासपोर्ट के वे आगे नहीं बढ़ सकते। परन्तु १६५६ से यह परम्परा समाप्त कर दी थी। अब कोई भी भारतीय भारत के अन्य शहरों की तरह कश्मीर भी बिना पासपोर्ट के आ जा सकता है। अब केवल विदेशी लोगों के लिए यह प्रतिबन्ध है वे (Passport) के बिना अभी भी नहीं आ जा सकते।

यह मैं पहले ही बता चुकी हू कि इस रास्ते में जैनों का कोई घर नहीं है। फिर भी रास्ते में आहार पानी का कोई कष्ट नहीं हुआ। अन्य लोगों मे अच्छी श्रद्धा भक्ति है। कई स्थानों पर लोगों ने भाषण भी सुने। हमारा रास्ता तो इतनी सरलता से पार हो गया कि पता ही नहीं लगा। रास्ते में जम्मू से बहिनों की टालियां प्रति दिन आती रहती थी। हमने यह रास्ता बिना किसी दिक्कत के पार कर लिया। साम्बा पहुँचते-पहुँचते तो बहिनों की संख्या काफी बढ़ गई थी। और सतवारी में तो बहिन-भाइयों की संख्या इतनी अधिक हो गई थी कि छोटा-सा मेला ही लग गया था।

सतवारी से जम्मू सिर्फ ४ मील रह जाता है। यहां हम हाई स्कूल में ठहरे थे। यहीं से जम्मू छावनी (Cantt) शुरु हो जाती है। छावनी होने के कारण सतवारी में भी अच्छी रौनक है। अजैन लोगों में भी जैन साधु-साध्वियों के प्रति अच्छी भक्ति है। यह जम्मू का प्रवेश द्वार है। यहा पहुँचे कि जम्मू पहुंच गए ऐसा मान लिया जाता है। दिन भर लोगो का आवागमन होता रहा, चहल-पहल बनी रही।

जम्मू में प्रवेश : : :

दूसरे दिन सूर्योदय से पहले ही बहिन-भाइयों का जम्मू से आना शुरु हो गया। बहुत से लोग सतवारी ही आ पहुँचे। आहार-पानी करके हमने सतवारी के स्कूल से जम्मू की ओर कदम उठाए। भगवान् महावीर

के जयनाद के साथ हमारे क़दम बढ़ने लगे और पौष कृष्ण द्वितीया को ठीक १ बजे जम्मू में प्रवेश कर दिया। लोगों के मन में बड़ा उत्साह था। बाजार में अनेक लोग आश्चर्यान्वित दृष्टि से हमे देखते थे, क्योंकि बहुत वर्षों से जैन साध्वियों का इधर आगमन नहीं हुआ था। जैन साधु तो प्रायः आते रहते है। परन्तु साध्वियों का आगमन कम होने से अजैन तो क्या जैन युवकों को भी पता नहीं था कि जैन साध्वी भी होती हैं ?

कश्मीर-यात्रा की योजना : : :

हमारा विचार जम्मू देखकर वापिस लौटने का था। अतः यहां १०-१५ दिन ठहरने का विचार था। यह तो अपना विचार था। परन्तु, वापिस लौटना अपने हाथ मे नहीं था। लोग वर्षावास का आग्रह करने लगे। जबकि अभी वर्षावास मे ६ महीने से अधिक समय पड़ा था। और आस-पास में कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था, जहां ६ महीने का समय लगाया जा सके। अतः मन में विचार उठा कि यदि यहां वर्षावास करना है तो फिर कश्मीर क्यों न हो आएं। मन के विचार ने वाणी का रूप लिया और दो-चार बहिनो के कर्ण कुहरों में प्रविष्ट हो गया। उन को भी यह विचार पसन्द आया। उन्होंने हमारे उत्साह को और बढ़ावा दिया। यह बात कुछ और बहिनों के सामने रखी। वे सुनते ही घबरा गईं। कश्मीर उनकी निगाह में एक हौआ था। वे कांपती हुई आवाज में कहने लगी—महाराज, इस बात को अपने मन के कौने मे दबाए रखना। कश्मीर जाना कोई साधारण खेल नहीं है। आप किसी भी तरह कश्मीर नहीं पहुँच सकेंगी। परन्तु उनकी बातें सुनकर मै घबराई नहीं। मै तो मुस्कराती रही। उनकी बातों पर मुझे हंसी आ रही थी। वे नारी के शौर्य को विस्मृति के गहन अंधकार में धकेल चुकी थी। उन पर कायरता और डरपोकपने का भूत सवार हो रहा था। मैं अपने

निश्चय पर अटल थी। मैने योजना बनाना सीखा है। परन्तु, बने बनाये योजना के महल को ढ़ाना नहीं। हर परिस्थिति में मैं अपने लक्ष्य तक पहुंचने का प्रयत्न करती हूँ और कठिन से कठिन परिस्थितियों पर काबू पाने की कोशिश करती हूँ। मैने परिस्थितियों को अपने अनुकूल ढालने का प्रयत्न किया परन्तु हमने अपने आप को परिस्थितियों के हाथ का खिलौना नहीं बनाया।

मार्ग की भयंकरता : : :

मैने अपनी योजना संघ के सेक्रेटरी (Secretary) के सामने रखी। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में इन्कार कर दिया। पर आखिर बात संघ के सामने रख दी गई। संघ के अध्यक्ष (President) आदि ने मेरे सामने कठिनाइयों की एक लम्बी-चौड़ी सूची रख दी। उन्होंने कहा— कश्मीर का रास्ता सरल नहीं पहाड़ी रास्ता है, ऊंचे-ऊंचे पहाड़ है, कई जगह सीधी चढ़ाई चढ़ना होता है, पहाड़ों की चोटियें बर्फ से आच्छन्न रहती हैं, रास्ते में कदम-कदम पर (Military) के पड़ाव हैं। उन में बहुत से आदमी बदमाश होते है। अकेली औरतों से छेड़-खानी करने में नहीं हिचकते। रास्ता भी साफ नहीं है। जब चाहे तब बर्फ गिरने लगती है, मार्ग बन्द हो जाता है। रास्ते में हिन्दुओं के घर कम है। मुसलमानों की बस्तियां अधिक पड़ती हैं। शराबी और मांसाहारियों का आधिक्य है। कश्मीर के ब्राह्मण तक भी मांस से परहेज नहीं करते। इस रास्ते में गुण्डे भी कम नहीं हैं। सड़क पर यातायात अधिक रहता है। वहा का वातावरण भी स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं है। उस रास्ते जाने वाले सन्त वहां जाते ही बीमार हो गए हैं। इस तरह यह रास्ता सन्तों के लिए भी सुगम नहीं है, और सतियों के लिए तो किसी भी तरह अनुकूल नहीं है। उधर के लोग बिल्कुल अनार्य है। अतः संघ की प्रार्थना है कि आप कश्मीर न जाएं। संघ आप के विचारों से सहमत नहीं है।

उनके द्वारा बताई गई मार्ग की भयंकरता मेरे हार्दिक निश्चय को ;ल नहीं सकी। मै तो दुःखों की छाया में बड़ी हुई हूँ। मैंने सदा ;ता के साथ आगे बढ़ने का प्रयत्न किया है। मैंने सदा कठिनाइयों ो प्यार से निमन्त्रण दिया है कभी भी उनसे मुंह नहीं मोड़ा। मेरे विन का यह आलोकमय सूत्र रहा है—"Strength is life, 'eakness is death and fear is the root of sin." ार्थात् साहस-शक्ति जीवन है, कमजोरी-कायरता मृत्यु है और भय ापों की जड़ हैं। मैंने सघ के द्वारा रखी गई बातों का यथा सम्भव वाब दिया। मैंने उन्हें कहा कि आपको डरना नहीं चाहिए। आपका य निर्मूल है। आपने अभी तक नारी की, साध्वियों की शक्ति को खा-परखा नहीं है। नारी कोई गुड़िया नहीं है वह शौय की जीवित ्ति है। उसके त्याग एवं तप-तेज के कारण कोई मुसीबत एवं कोई ाक्ति उसे कुचल नहीं सकती।

ाहस का संचार : : :

अभी कश्मीर की ओर कदम उठाने में डेढ़ महीने का लम्बा ामय पड़ा था। इस बीच अनेक तरह की विचार-चर्चाएँ चलती रहीं। ोगों के दिल में कई उतार-चढ़ाव आए। इस बीच बहिनों के भी अनेक रूप देखने-परखने को मिले। सन्तों के भी अनेक सन्देश आए। ंघ के लोगो ने जिस किसी सन्त से पूछा उसने मार्ग की कठिनता ताकर हमें उधर नहीं जाने की सलाह दी। सब ओर से मार्ग में रुकावटें उत्पन्न करने का प्रयत्न किया गया। परन्तु बढ़ने वाले कदमों को कौन ोक सका है? मानव के पुरुषार्थ के सामने विघ्न बाधाओं के पहाड़ अपना गर्व कब रख सके है? फिर श्रमण संघ के आचार्य श्री और मरुधरा के प्रधान मन्त्री गुरुदेव स्वामीजी श्री हजारीमलजी म० का आदेश एवं शुभ कामनाएँ हमारे साथ थीं। इससे अधिक हमें और क्या चाहिये

था ? महापुरुषों का वरद हस्त सिर पर हो तो फिर चिन्ता एवं परेशानी को ठहरने एवं सामने आने का अवकाश ही कहां ?

जम्मू की कुछ उत्साही बहिनों का हमें पूरा पूरा सहयोग मिला हुआ था। इसके पीछे उनकी यह भावना थी कि पंजाब की सतियां जम्मू आते हुए भी कतराती है, डरती हैं। आप कश्मीर घूम आएँगी तो उनका भ्रम दूर हो जाएगा। जम्मू कश्मीर का अवरुद्ध मार्ग सतियों के लिए खुल जाएगा। परन्तु उस समय यह कौन जानता था कि हास-परिहास में मुखरित होने वाले शब्द एक दिन योजना का साकार रूप धारण कर लेंगे ? अब तो बाकायदा योजना बन चुकी थी। जम्मू की ६-७ बहिनें ठेठ कश्मीर तक साथ चलने को तैयार थी। बहिन कलावती-जी, शान्तिदेवीजी, सरदारीलालजी की धर्म पत्नी प्यारी देवीजी, सुमित्रा देवीजी और सेवावन्तीजी की पूरी तैयारी थी। २५-२० बहिनें ऊधमपुर तक साथ चलने को तैयार थीं और रास्ते में आने जाने वाली बहिनों की संख्या बहुत थी।

इसी बीच श्रीनगर से लाला प्यारेलालजी सपरिवार जम्मू आ गए। उनकी लड़की की शादी थी, उसी के लिए वे जम्मू आये थे। मैंने लालाजी से श्रीनगर के रास्ते के विषय में पूछ-ताछ की। उन्होंने बताया कि यह ठीक है कि पहाड़ी रास्ता है, परन्तु इतना कठिन मार्ग नहीं है कि आप उसे पार नहीं कर सकें। आप प्रसन्नता पूर्वक पधारें, वहां हम आपकी सेवा में हैं ही। उनकी धर्म-पत्नी शकुन्तलाजी से बात हुई। उनका मानस हर्ष से भर गया। उन्होंने कहा कि आप निर्भय होकर पधारें। यदि रास्ता कठिन है भी तो उसे सुगम भी तो बनाना है। यदि उस पथ पर कदम ही नहीं बढ़ाया गया तो वह सुगम एवं सरल कैसे बनेगा ? बहिनों के उत्साह ने हमारे उत्साह को बढ़ा दिया। हमारा विश्वास और दृढ़ हो गया।

हमारी तैयारी एवं दृढ़ता को देख तथा बहिनों के आश्वासन मिलने से संघ भी हमारे साथ हो गया। मैने यह देखा कि मनुष्य की भावना में प्रबल शक्ति है। उनका विश्वास दुनियां के विचारों को नया मोड़ दे सकता है, तो एक संघ की भावना परिवर्तित हो जाना क्या बड़ी बात है? संघ हमारे अनुकूल हो गया। अब उसका इतना ही आग्रह था कि हम महावीर जयन्ती करके जाएँ। परन्तु फिर वर्षावास में समय थोड़ा रह जाता है और ७०० सौ मील करीब रास्ता तय करना था। अतः हमने सं० २०१६ चैत्र कृष्णा ५ वीरवार को चलने का प्रोग्राम बना लिया।

चलने की तैयारी : : :

चैत्र कृष्णा चतुर्थी का दिन है। कल कश्मीर के लिए चलना है। साथ की बहिनें अपनी तैयारी में व्यस्त है और हम अपनी तैयारी में। परन्तु यह क्या? देखते देखते सारा आकाश मेघों से आच्छन्न हो गया। काली कजरारी घटाएँ उमड़ घुमड़ कर आने लगी। प्रखर सहस्त्ररश्मि बादलों की कालिमा में छिप गया। थोड़ी देर में वियोगिनी की अश्रुधारा की तरह मेघ बरसने लगे। वर्षा के साथ साथ ओले भी गिरने लगे। वर्षा एवं ओले सूर्यास्त होने के बाद तक पड़ते रहे। अत उस दिन शाम को हम आहार नहीं ला सके। रात को वर्षा तो बन्द हो गई, परन्तु आकाश तब भी बादलों से भरा हुआ था। साथ चलने वाली बहिनों का चेहरा उदास सा हो रहा था, उनकी आशाएँ धूमिल पड़ रही थी। लोगों में भी यह चर्चा होने लगी कि कश्मीर का दृश्य यहीं देख लो। परन्तु मेरे मन में बिलकुल भय नहीं था। मैने उन्हें दृढ़ भाषा में कहा कि तुम उत्साह के साथ अपना काम करो। हमें कल ठीक समय पर प्रस्थान करना चाहिए। घबराओ मत! अन्तर का उत्साह एवं विश्वास बाधाओं की कालिमा को चीर डालता है। बस मन में यह दृढ़

विश्वास रख कर काम करो कि मेरे सत्यपुरुषार्थ के सामने देव भी झुक जाएँगे और मेरे रुकने पर ब्रह्मा भी वहीं ठहर जाएँगे

"जहां गिरा श्रम स्वेद-विन्दु वस, वहीं देवता झुक जायेंगे।
जहां रुका मै सृष्टि नियन्ता, उसी ठौर वस रुक जायेंगे॥"

प्रस्थान की वेला : : :

प्रात: होते होते बादलो की सघन कालिमा दूर हो गई। प्राची में लाली फूट पड़ी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि प्रकृति हमारी मगल कामना के लिए कुँकुम विखेर रही है। थोड़ी देर में अपनी सहस्त्र रश्मियों के साथ सूर्य भी प्रस्थान का संदेश लेकर उदित हो गया। सूर्य की प्रखर किरणें उत्साह का संदेश बिखेर रही थी। चलने वाले यात्रियों के चेहरे खिल रहे थे। परन्तु सब मौन भाव से खड़े थे। मैंने उनकी आंखों में प्रश्न पढ़ा और हास्य की मुद्रा में कहा कि हमें अपने प्रोग्राम के अनुसार आज ही चलना है। हम सब चलने को तैयार थे। सघ ने उल्लास एवं शुभ कामनाओं के साथ विदाई दी।

हमारा पहला पड़ाव वेद मन्दिर अन्ध विद्यालय में था। आज तो हम जम्मू शहर के बाहर ही थे। दिन भर वहिन भाइयों का मेला सा लगा रहा। दूसरे दिन सूर्योदय से पूर्व ही जम्मू से लोग आ गए और 'आपका मार्ग प्रशस्त हो" की शुभ कामना के साथ सबने हमे वहां से विदाई दी। विदाई का दृश्य भी अपूर्व था। सब के मन में हमारे लिए शुभ कामनाओं का सागर लहर-लहर कर लहरा रहा था। प्रसन्न मुद्रा में हम सब अपने पथ पर वढ़ रहे थे। उसके पश्चात् आनन्द पूर्वक-हम सभी नगरोटा पहुँच गए। नगरोटा जम्मू से ९ माईल है। यहाँ दिन भर अच्छी खासी चहल-पहल रही। मार्ग के लिए जम्मू से पृथ्वीजी और एक जयपुर का भाई साथ था और सत्तरह अठारह वहिनें थी।

विदाई के ठीक समय पर आचार्य श्री जी म० और गुरु म० का कृपा-पत्र भी मिल गया जिनमें यात्रा की शुभ कामना थी हर्ष से हृदय भर गया।

पहली कठिनाई : : :

दूसरे दिन हमने नगरौटा से विहार कर दिया। चौदह पन्द्रह बहिनें हमारे साथ चल पड़ी। दो तीन बहिनें सब का सामान लेकर आने के लिए वहीं ठहर गई। दस बज गए, परन्तु उन्हें कोई बस (Bus) नहीं मिली। एक दो बस मिली भी तो वह इतना सामान रखने को तैयार नहीं हुई। वे सब परेशान हो रही थीं। अभी तो पहला ही पड़ाव था। "प्रथमग्रासे मक्षिकापात." अर्थात् पहले ही ग्रास में मक्खी गिर पड़ी वाली कहावत सिद्ध हो रही थी। अभी से यह कठिनाई है तो कश्मीर तो अभी बहुत दूर है। परन्तु फिर भी उन्होने साहस को नहीं छोड़ा। वे सवारी की तलाश में लगी रहीं। इतने में भाग्य से भागसिंह टांगे वाला मिल गया। उससे सामान ले चलने को कहा। उसने पूछा-कहां जाना है? उन्होंने कहा-भाई! अभी तो आठ मील का रास्ता तय करना है। आगे कश्मीर की सड़क नापनी है। उसने सामान टांगे में रखा, वे बहिनें भी टागे पर सवार हो गई और तागा अपना रास्ता तय करने लगा। बातों ही बातों में तांगे वाले ने कहा कि यदि आपकी इच्छा हो तो मै कश्मीर तक चल सकता हूँ। बस बहिनों को तो इतना ही चाहिये था। क्योंकि नित्य-प्रति Bus की इन्तजार में कहां तक खड़े रहें। अतः उससे बात की और ४५०) रु० में कश्मीर देखकर वापस जम्मू लौटने तक का तय कर लिया। सामान उठाने की चिन्ता दूर हो गई। जो प्रथम पड़ाव पर कठिनाई आई थी, वह सदा के लिये हल हो गई। कठिनाई राह को साथ लेकर आती है।

मिलिट्री में भी इन्सानियत जीवित है : : :

पाकिस्तान की सीमा निकट होने के कारण तथा कश्मीर को पाकिस्तानी आक्रमण से बचाने के लिये थोड़ी थोड़ी दूर पर Military के कैम्प लगे हैं। कुछ लोगों का यह ख्याल है कि Military हैवानों का समूह है। उसमें कोई इन्सान नहीं बसता। वे किसी भी तरह का भला-बुरा कार्य करने में नहीं हिचकिचाते। परन्तु मेरा अनुभव इससे भिन्न रहा है। मैंने उनके अन्तर्मन में प्रेम स्नेह एवं श्रद्धा भक्ति की चमकती हुई रोशनी देखी। उनके दिल में भी इन्सान के प्रति आदर की भावना है। मैने कश्मीर की राह में देखा कि भारतीय सेना केवल युद्ध के लिये ही नहीं है, बल्कि वह देश के निर्माण में भी सहायक है। यह भी देखा कि बाढ़ आदि के समय टूटी-फूटी सड़कों एवं पुलों को वे कितनी तेजी से ठीक कर देते हैं। आंधी, तूफान एवं वर्षा की बौछारें भी उनके काम को नहीं रोक सकती। हमें मार्ग मे सैनिकों के अनेक कैम्प मिले। किसी ने हमें अपमानजनक शब्द नहीं कहा। प्राय. सब जगह उन्होंने हमारा सम्मान किया हमें सहयोग दिया और श्रद्धा-पूर्वक हमारा उपदेश सुना। कुछ सैनिकों ने कई प्रतिज्ञाएं भी ली। इस प्रकार हमें जो सैनिकों (Military) का भय बताया जा रहा था वह बिल्कुल निर्मूल निकला।

ऊधमपुर में : : :

जम्मू से चलकर हम तीन रात रास्ते में ठहरे। चौथे दिन ऊधमपुर में प्रवेश कर दिया। ऊधमपुर जम्मू से ४२ मील दूर है। यह एक अच्छा कस्बा है। यहां पर प्रसिद्ध वक्ता श्री विमल मुनिजी म० का अच्छा प्रभाव है। उनके उपदेश से अनेक व्यक्तियों ने जैनधर्म को स्वीकार किया। उनके वर्षावास में जैन स्थानक बनाने का भी निश्चय किया था परन्तु वर्षावास के बाद पुन. उनका आगमन नहीं हुआ। इससे न तो

थानक ही बन पाया और न लोगों की श्रद्धा में उतनी दृढ़ता ही रही। फेर भी लोगों का प्रेम अच्छा है। उपदेश सुनने एवं समझने की अभिरुचि है।

हमारा प्रोग्राम दो दिन ठहरने का था। परन्तु यहां आते ही आकाश में बादल मंडराने लगे। दिन भर आकाश मेघाच्छन्न रहता। ाच दिन तक बराबर पानी बरसता रहा और ओले भी पड़े। अत्यधिक र्षा एव आंधी के कारण कश्मीर के रास्ते में रामवन का पहाड़ भी गिर ड़ा था। इससे जम्मू कश्मीर की सड़क भी कुछ दिन के लिए बन्द र दी गई थी। इस समय जम्मू से सौ डेढ़-सौ बहिन भाई दर्शन करने आए। उन्होंने कहा कि महाराज आप कश्मीर देखने की अपेक्षा अपनी सुविधाओं को देखें। इस समय कश्मीर का मार्ग बन्द हो गया है। रास्ता काफी खराब हो गया है। अतः हमारा नम्र निवेदन है कि आप वापिस जम्मू लौट आएं। हमने उन्हें कहा—देखिए, हमें कश्मीर जाने का कोई आग्रह नहीं है। अभी हम ऊधमपुर ठहरे हैं। वर्षा रुकने के बाद देखेंगे। यदि प्रशस्त मार्ग होगा तो कश्मीर की ओर आएंगे, नहीं तो रास्ते से ही लौट आऐंगे। जहां तक जा सकें उतना ही अच्छा है।

ऊधमपुर से प्रस्थान : : :

छट्ठे दिन भी वर्षा नहीं ठहरी। आज तो वर्षा के साथ ओले भी गिरते रहे। करीब ग्यारह बजे वर्षा कुछ मन्द पड़ गई और १२ बजे वर्षा बन्द हो गई। आकाश साफ होने लगा। हमने भी अपनी कमर बांधी और ऊधमपुर से आगे बढ़ चले। अभी करीब एक मील चले थे कि पुलिस चौकी पर हमारे साथ की बहिनों के तांगे को रोक लिया और उस से कहा कि ६ दिन के लिए कश्मीर का रास्ता बंद है। मैंने पुलिस को समझाया कि भाई हम लोग पद-यात्रा करते हैं और यह तांगा साथ वाली बहिनों का है। हमें रामवन तक, जहां पहाड़ गिरा है, पहुँचने

में कई दिन लग जाएंगे। मेरे समझाने से उसने तांगे को जाने के लि दरवाजा खोल दिया।

पहाड़ी दृश्यों का आनन्द लेते हुए हम सब चल रहे थे। पहाड़ों ऊंचा-नीचा रास्ता था। पर, साथ की बहिनें सब खुशदिल थीं। अ हंसती-गाती मस्ती से रास्ता तय करती चल रही थीं। थोड़ी ही देर म पुनः बूंदें पड़ने लगी। सड़क के किनारे कुछ व्यक्ति खड़े थे। उन्होंने ठहरने का आग्रह किया। हम वहां ठहर गए और उन्हें कर्तव्य का महत्व बताने लगे। मनुष्य का जीवन कई घाटियों में से गुजरता है। उसने अपनी जीवन डायरी के पन्ने अनेक रंग-बिरंगे कार्यों से चित्रित कर रखे हैं। परन्तु, महान् व्यक्तियों का कहना है—"Every living being has its vacant pages still where a man can write the thing as he wills." अर्थात् अभी भी इन्सान की जीवन डायरी के अनेक पृष्ठ खाली पड़े हैं, उन पर वह जैसा चाहे वैसा चित्र चित्रित कर सकता है, वह उन पर अपनी इच्छा के अनुरूप लिख सकता है। जीवन को उन्नत बनाना उसके अपने हाथ है वह चाहे तो अपने एवं दुनियां के लिए सुख का द्वार खोल सकता है। दुःखी प्राणी के दुःख को दूर करने का प्रयत्न करना उसके दुःख में हिस्सा बांट लेना यही इन्सान का धर्म है, मानव का परम कर्त्तव्य है।

पौन घन्टे तक वहां ठहरे। उन्हें कुछ उपदेश दिया। अपनी साधना का तात्पर्य बताया। इतने में बून्दें भी बंद हो गईं और हम वहां से चल पड़ीं। दस मील का पहाड़ी रास्ता तय करके सरमोली पहुँचे वहां एक टूटी-फूटी झौंपड़ी मिल गई। जगह साफ-सुथरी नहीं थी। जैसे-तैसे सफाई की गई और हम सब वहीं ठहर गए। यह झौंपड़ी राजमहलों से भी महत्वपूर्ण प्रतीत हो रही थी। हमने मस्ती से अपने २ आसन लगा लिए। परन्तु झौंपड़ी छोटी थी और सोने वाले अधिक थे।

सब के आसन इसमें नहीं आ सकते थे। कुछ बहिन-भाइयों ने वह रात सड़क के किनारे खुले आकाश के नीचे ही बिता दी। पहाड़ी प्रदेश था, ठंड का समय था और उस दिन वर्षा एव ओलों के गिरने से सर्दी अधिक हो गई थी। फिर भी धर्मनिष्ठ बहिनों ने शांति के साथ प्रभु-स्मरण करते हुए रात काट ली। मैने उनसे कई बार कहा कि अंदर आकर बैठ जाओ, सोएँ नहीं, बैठे-बैठे रात काट लेंगे। परन्तु, उन्होंने हंस कर जवाब दिया कि आप हमारी चिन्ता न करें। आराम से तो हमेशा सोते रहे हैं। ऐसे सहनशीलता सीखने के क्षण तो सौभाग्य से कभी-कभी ही मिलते हैं। इनका भी तो स्वाद चखना चाहिए। इस तरह मस्ती में कभी हिम ठंड का स्वाद चखती और कभी आतप (गर्मी) का स्पर्श करती हुई हमारी टोली रास्ता नाप रही थी।

कुद के प्रांगण में : : :

प्रातः होते ही कदम आगे बढ़ने लगे। कभी ऊंची-नीची सड़क पर कदम पड़ते थे तो कभी संकीर्ण और टेढी-मेढ़ी पगडंडियों के रास्ते को नापते। यह मार्ग कुछ कठिन था। काफी ऊंचा-नीचा रास्ता था। कंकरीली पगडंडियां थी। चलते-चलते पैर छिल गये थे। पहाड़ों पर चढ़ते-चढ़ते जी घबराने लगता था। पर मन में उत्साह था, उमंग थी। अतः जैसे-तैसे कुद के प्रांगण में आ ही गये। यह एक छोटी सी पहाड़ी पर बना हुआ अच्छा कस्बा था। यहां जगह भी अच्छी मिल गई। लोगों के दिल में हमारे प्रति काफी प्रेम एवं श्रद्धा थी। साथ ही कुछ बहिनों का विचार था कि यहां कुछ दिन विश्राम किया जाए और साथ मे धर्म प्रचार भी। उनका सुझाव तो मन को भा गया, परन्तु, अभी बहुत लम्बा रास्ता तय करना था। यदि अभी से आराम करने लगे तो आगे क्या स्थिति होगी? अतः उन्हें यह आश्वासन देकर हम आगे बढ़े कि वापिस लौटते समय अवकाश रहा तो इस क्षेत्र में धर्मप्रचार करने का ध्यान रखेंगे।

पत्नीराय की चढ़ाई : : :

आज पत्नीराय की चढ़ाई चढ़नी थी। यहां से दो टोलियें बना ली। कुछ बहिनें और पृथ्वी जी हमारे साथ थी और दो भाई एवं कुछ बहिनें सड़क के रास्ते चल पड़ी। हमने अभी कुछ ही रास्ता तय किया था कि एक बहिन को अपनी स्वर्ण-अंगूठी की याद आ गई। वह उसे पीछे भूल आई थी। पृथ्वी जी उसे लाने को वापिस चली और हम धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। करीब एक मील चलने पर सामने की पगडंडी से एक भाई आते हुए दिखाई दिया। हमने उससे पूछा क्या यह पगडंडी बरोद् को चली जाएगी? उसने हां में उत्तर दिया। हम उस मार्ग पर चल पड़े। परन्तु यह क्या सामने पिशाच की तरह राह रोके पहाड़ खड़ा है। न कहीं पगडंडी है और न कोई रास्ता ही है। पहाड़ भी बिल्कुल सीधा। अब क्या करें, किधर जाएं? कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। बुद्धि काम नहीं कर रही थी। इतने में पीछे से एक भाई आ गया। उसने बताया कि आप गलत रास्ते आ गई हैं। यह रास्ता बड़ा खतरनाक है। परन्तु घबराएं नहीं, मैं आपके साथ हूँ। उसने सहानुभूति के शब्दों में कहा कि आप सावधान होकर मेरे पीछे-पीछे चली आएं। परन्तु चलें भी तो कैसे? बिल्कुल खड़ी चढाई थी। न चढ़ने के लिए स्थान था और न बैठने के लिए। सर्प की तरह पेट के बल चढाई चढ़नी थी। बहिनों के हाथ में थैले थे, वे सँभल नहीं रहे थे। बार-बार नीचे गिरते थे उन्हें कमर से बाध लिया गया। हमारे पास कुछ कपड़े और पाच पात्र आहार के और एक पानी का पात्र था। वस्त्र पहले ही बंधे हुए थे। पात्रों को कसकर पीठ पीछे बांध लिए और बिना एक-दूसरे की तरफ देखे सावधानी से चढने लगे। रास्ते में सेवावन्ती जी की हालत खराब हो गई। उसकी जबान तुतलाने लगी। आंखें भी पथरा गई। परन्तु, अब रुकें भी तो कहां? रास्ते में एक मिनिट सांस लेने को भी जगह नहीं। सब के शरीर कांप रहे थे। सर्दी का समय था।

मन्द-मन्द समीर चल रहा था। परन्तु, हमारा शरीर पसीने से तर-बतर हो रहा था। रास्ते में कहीं चट्टानें थी तो कहीं गीली मिट्टी थी। सबके वस्त्र एव चेहरे देखने लायक हो रहे थे। फिर भी सब साहस के साथ चढ़ रहे थे। सब की जबान पर इष्टदेव का नाम था। पूज्य गुरुदेव की कृपा से साढे सात हजार फीट की चढ़ाई चढ़कर हम सब पत्नीराय पर पहुँच गए। वहा पहुंच कर सबने एक-दूसरे को देखा और सब आनन्द से पहुंच गए तो सबने शान्ति की सांस ली। कुछ देर वहां ठहरे। परन्तु विश्राम करने का अवकाश कहां था। जितनी चढ़ाई चढ़ी उतना उतार भी तो सामने था। नीचे की ओर एक गहरा खड्डा नजर आ रहा था। वह आदमी अभी भी साथ था। वह आगे-आगे चला और हम उसके पीछे सावधानी से कदम रखने लगे। यदि थोड़ा-सा चूकते तो मौत का कुआ तैयार था। पूज्य श्री जयमल जी म० का नाम स्मरण करते हुए उस घाटी को पार कर ही लिया और सकुशल अमृत चश्मे पर पहुंच गये। इस सहयोग के लिए हमने उस भाई को धन्यवाद दिया। उसका साथ आज भी याद आता है। बहिनों ने उसे कुछ रुपये देने चाहे। उन्होंने बहुत आग्रह किया भी परन्तु, उसने एक पैसा भी स्वीकार नहीं किया। उसने कहा—यह तो इन्सान का कर्तव्य है कि वह मुसीबत के समय सबकी सेवा करे। उसकी सेवा भावना कभी भी भुलाई नहीं जा सकती।

पत्नीराय की चढाई और उतराई आज भी स्मृति पट पर अंकित है। चढ़ते और उतरते हमने प्रकृति की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा कि उसका सौन्दर्य कैसा है। परन्तु अमृत चश्मे पर आकर प्रकृति को निहारने का लोभ संवरण नहीं कर सके। कल-कल नाद करता हुआ झरना झर रहा था। मलयानिल मंथर गति से बह रहा था। चारों तरफ हरा-भरा वातावरण मन को मोह रहा था। यहां प्रकृति की सुखद गोद

में हम कुछ देर के लिए चढ़ाई के श्रम को भी भूल गऐ।

नगरौटा के पथ पर : : :

अमृत चश्मे से हम दो भागों में विभक्त हो गए। कुछ बहिनें आगे बढ़ गईं और हम एक पगडंडी की राह नगरोटा की ओर चल पड़े तो देखा कि कुछ दूर सड़क पर खडा एक आदमी चिल्ला कर हमें रोक रहा था। वह कह रहा था कि यह रास्ता नहीं है। इस तरफ मैंने अभी-अभी बाड़ लगाई है। अतः उधर मत जाओ इधर लौट आओ। परन्तु हमारे लिए वापिस लौटना कठिन था। दो मील का रास्ता तय कर चुके थे। अतः आगे बढ़ गई। बहिनों ने मेहनत कर के बड़ी कठिनाई से बाड को थोड़ा-सा हटाया। अवशिष्ट कांटों पर पत्थर रखकर हमने रास्ता पार किया और शाम को तीन बजे नगरौटा पहुँच गए। वहां गुरुद्वारे में ठहरने को स्थान मिल गया। खत्री और ब्राह्मणों के घर से आहार लेकर पेट की क्षुधा शान्त की। कुछ देर विश्राम किया। उसके बाद डेढ़-दो घन्टे तक भजन कीर्तन किया और उपदेश दिया। लोगों पर उपदेश का अच्छा असर पड़ा। उन्होंने ठहरने का आग्रह किया। हमें भी थकावट अनुभव हो रही थी। अतः दो दिन विश्राम किया।

सैनिकों का सहयोग : : :

नगरौटा से चलकर पीडे गांव में आये। यहां ठहरने को एक घास-फूस से निर्मित झोपड़ी मिल गई। उस पर बड़े-बड़े पत्थर रखे थे। वह गांव एक छोटी-सी पहाड़ी पर बसा हुआ था। उसके पीछे भी पहाड़ था। उसी रास्ते एक भेड़ झोंपड़ी के ऊपर चढ़ गई और उसकी ठोकर से लुढ़क कर एक बड़ा-सा पत्थर मेरे सामने आ गिरा। संयोग की बात थी कि मेरे और पत्थर के बीच सिर्फ दो इंच की दूरी रह गई थी। गुरु देव की कृपा से इस तरह मैं जीवन में कई बार बाल-बाल बची हूँ।

रात्रि को वहाँ ठहरे। प्रातः राम वन की ओर चल पड़े। कुछ दिन पूर्व यहीं पहाड़ी गिरी थी। रास्ते को ठीक करने के लिए सैनिक दिन-रात काम कर रहे थे। युद्ध के मैदान में विनाश की चिनगारियां बरसाने वाले सैनिक यहां निर्माण कार्य में संलग्न थे। मै पहले ही बता चुकी हूँ कि हमें हर स्थान पर इनका सहयोग मिलता रहा है। यहां का रास्ता अभी पूरी तरह सुधर नहीं पाया था। फिर भी मजदूरों एवं सैनिकों ने हिम्मत करके सहारा दिया तथा तांगे को पार करवा दिया और हम भी एक-दूसरे के कन्धों का सहारा लेकर पार हो गये। अभी भी हवा के झोंकों से पहाड़ों से पत्थर गिर रहे थे। कभी-कभी इतने जोर से पत्थर आते थे कि मानो कहीं बम विस्फोट हो रहा हो। परन्तु गुरुदेव की कृपा से हम सानंद रामवन पहुँच गए और गुरुद्वारे में जाकर विश्राम किया।

मृत्यु के मुख में भी सुरक्षित : : :

मेरा स्वास्थ्य पूर्णतया ठीक नहीं था। रास्ते में प्रायः बुखार हो जाता था और घुटनों का दर्द तो निरन्तर ही रहता था। परन्तु आज ज्वर काफी तेज था। रास्ता भी तय करना था। यहां से डीगडोल आठ मील था। वहीं ठहरने का निर्णय करके चल पड़े। अभी पांच माईल चले थे कि एकाएक आकाश बादलों से ढक गया। काली घटाएं उमड़ घुमड़ कर आने लगी। बादल गर्जने लगे और भयंकर तूफान चल पड़ा। ऐसी स्थिति में चलना कठिन हो रहा था। मार्ग तो क्या हाथ को हाथ नहीं दीख रहा था। वहीं पर सड़क के किनार बैठ गये। मुझे ज्वर हो रहा था और प्यारी बहिनजी का जी मिचलाने लगा। इधर तूफान अपनी तेज रफ्तार से चल रहा था। सब की जिह्वा पर गुरुदेव एवं भगवान् शान्तिनाथ का नाम था। १०-१५ मिनिट तक एक स्वर से भगवान् की स्तुति की। इसके अतिरिक्त और आधार ही क्या था। सब आश्चर्य से

आकाश की ओर देख रहे थे कि यह तूफान कहां से आ टपका ? अभी भी अन्धड़ चलता ही रहा। आकाश पूरा साफ नहीं हुआ था। फिर भी साहस करके चल पड़े। अभी आध फर्लांग का रास्ता ही तय कर पाये थे कि पीछे एक जोर का धमाका हुआ। सब आश्चर्य से पीछे को देखने लगी। यह क्या ? अभी कुछ मिनिट पहले जिस पहाड़ी के नीचे शरण ली थी वह अन्धड़ के झोंके से ढह पड़ी। शासनेश की कृपा से हम सब बाल-बाल बच गये।

हम सब मन्द गति से रास्ता नाप रहे थे। ज्वर के कारण पैर लड़खड़ा रहे थे और मार्ग साफ नहीं दीखने से भी चाल में तेजी नहीं आ रही था। पहाड़ी रास्ता होने के कारण सड़क चक्करदार थी। थोड़ी थोड़ी देर में मोड़ आते रहते थे और आँधी की प्रबलता के कारण बस एवं ट्रक आदि की आवाज भी सुनाई नहीं देती थी। एक मोड़ पर हम अपनी गति से चल रहे थे कि सामने से बस (Bus) आ गई। परन्तु हमें यह देख कर आश्चर्य हुआ कि ड्राइवर ने ब्रेक कैसे लगा लिया ? जबकि दूर से मार्ग साफ दिखाई नहीं दे रहा था। संयोग की बात है कि bus मुझ से सिर्फ दो इंच दूर रुक गई थी। अभी आयुष्य लम्बा था। अतः आज तीसरी बार मृत्यु का ग्रास होते होते बच गई।

थोड़ी सी दूर एक पहाड़ी पर डीगडोल का डाक बंगला था। पृथ्वीजी एवं दो बहिनें उसमें ठहरने की व्यवस्था करने चल पड़ी और हम सब सड़क के एक किनारे बैठ गये। थोड़ी देर में तीनों निराश होकर लौट आई। उन्होंने बताया कि वहां ठहरने का स्थान नहीं है। कुछ मेहमान आने वाले हैं। उनके पेट की ज्वाला एवं जिह्वा के स्वाद की पूर्ति के लिए कुछ व्यक्ति मुर्गियों की गर्दन पर छुरी फेर रहे है। यह सुन कर हमें बड़ा दुःख हुआ। हृदय कांपने लगा। परन्तु करें भी तो क्या?

मगरकोट की ओर : : :

अब हमारे सामने यह प्रश्न था कि कहां चलें ? भागसिंह (तांगे वाले) से पूछा कि मगरकोट कितना है ? उसने ५ मील बताया। अब तो वहीं पहुँचना होगा। अत. कदम बढा दिए। कुछ दिन हुए इसी रास्ते पर पहाड गिरा था। अभी भी मार्ग साफ नहीं हो पाया था। कहीं सड़क पर कीचड था तो कहीं पत्थर पड़े हुए थे। हजारों मजदूर सड़क की मरम्मत करने में व्यस्त थे। इधर के लोग इतने गरीब हैं कि उन्हें पेट भर खाना नहीं मिलता। वे मोटे लाल चावल भुने हुए चनों की तरह झोली में डाल लेते हैं और साथ में कुछ नमक की डलियें या कुछ कड़वे साग की पत्तियों की भाजी उन चावलों में डाल लेते हैं। यह है उनका खाना। इसके अतिरिक्त उन्हें अच्छी-रोटी कम ही नसीब होती है। उनकी गरीबी देख हमारा हृदय कांप उठता था।

प्रकृति का सौन्दर्य और मानव की दयनीय स्थिति को निहारते हुए हम कदम बढा रहे थे। सड़क जगह-जगह से टूटी हुई थी। पत्थरों पर चलने से पैर छिल गए थे। फिर भी साहस करके मगरकोट के निकट आ पहुँचे। समय काफी हो गया था। धूप में तेजी आ गई थी। हमें अभी पहाड़ पर चढना था। पगडंडी बहुत सकड़ी थी। पथरीला रास्ता था। पैरों में पहले ही छाले पड़ रहे थे। फिर भी प्रसन्नता से कदम बढ़ा रहे थे। न धूप की चिन्ता थी और न पत्थरों की फिक्र। हमारे साथ की बहिनें हसते-गाते ऐसी चाल चल रही थी कि मानो जीवन का हर कोना आनन्द से भरा है। बादाम की बर्फी जिधर से खाओ मीठी ही मीठी लगती है। जिन्दगी का हर क्षण मधुर है। दु.ख में भी माधुर्य है और उसके आनन्द का अनुभव करना ही फकीरी है। फकीरी मे जो मस्ती है, आनन्द है, वह अन्यत्र कहां मिल सकता है ? हमारा मन भी मस्त हो रहा था कि कवि की वाणी मुखरित हो उठी—

''फकीरी खुदा को प्यारी है, अमीरी कौन बिचारी है?
पांव मे पड़ गया जो छाला,
वह भी है मोतियन से आला।
हाथ में फूटा-सा प्याला
जामे जमसेद से आला॥"

मगरकोट का खूनी नाला : : :

हाँ जी, पहाड़ी की ऊंचाई को पार करके हम लोग मगरकोट आ पहुँचे। ठहरने को अच्छा स्थान मिल गया। यहां जम्मू की दो बहिनें मिल गई। लोगों का प्रेम अच्छा था। आहार पानी लाए और खा-पी कर खुनी नाले के पास की गुफा देखने चल पड़े। यह नाला काफी खतरनाक है। इसके तेज प्रवाह में प्रति वर्ष अनेक पशु एवं मनुष्य बह जाते हैं। इसलिये इसे लोग खूनी नाले के नाम से पुकारते हैं। इसके पास ही एक प्राकृतिक गुफा है और उसमें एक मंदिर है। चारों तरफ शान्त वातावरण है। हरियानी छाई हुई है। पक्षी चह-चहा रहे हैं। साधना के लिए कितना सुन्दर एवं रम्य स्थान है। कुछ देर वहां ठहर कर प्रकृति का सौन्दय निहारते रहे और जरा चिन्तन का गहराई में भी गोते लगाते रहे।

गुफा से थोड़ी दूर सड़क पर हजारों मजदूर काम कर रहे थे। ये हाथों जाति के मुसलमान थे। बड़ी तेजी से काम चल रहा था। परन्तु ज्यों ही चार के घण्टे खड़के कि एकदम काम बन्द हो गया। सारा वातावरण शान्त होने लगा। सब मुसलमानों ने काम से छुट्टी ली और वहीं जमीन पर वस्त्र बिछा कर शान्ति से नमाज पढ़ने लगे। कितना विश्वास है धर्म पर। भले ही राह चलते हों, काम करते हों, सरकारी कुर्सी पर बैठे हों या सिंहासन पर बैठे हों, नमाज का समय होते ही सब

कुछ छोड़ कर अपनी उपासना में संलग्न हो जाएँगे। उन्हें अपनी साधना-आराधना करते हुए कहीं भी शर्म नहीं आती। परन्तु हिन्दू एवं जैनों में अपने अपने धर्म के प्रति इतनी दृढ़ श्रद्धा एवं निष्ठा का अभाव है। इसी से उनकी जीवन नैया जल्दी ही डगमगाने लगती है।

दिन भर प्रकृति का सुहावना दृश्य देखकर अपने स्थान पर लौट आए। रात को लोगों को उपदेश सुनाया। उन्हें सबके साथ मिलकर रहने का महत्व बताया। जीवन को उन्नत बनाने एवं कष्टों से मुक्ति पाने के लिए यह आवश्यक है कि हम एक-दूसरे के दुःख-सुख को अपना दुःख-सुख समझकर प्रत्येक व्यक्ति की यथाशक्ति मदद करें। पूरे गांव को अपना परिवार समझें। सब के साथ अपनत्व की भावना एवं अपनत्व का व्यवहार रख कर हम दु.खों से, मुसीबतो से छुटकारा पा सकते हैं।

बनिहाल की ओर : : :

यहां से बनिहाल तेरह मील था। आज चैत्र शुक्ला त्रयोदशी थी। भगवान महावीर की पावन जयन्ती थी। गत वर्ष इसी दिन शिमला में प्रवेश किया था। इस वर्ष भी हिमालय के उत्तुंग शिखरों पर घूम रहे थे। चारों तरफ पहाड़ों की हिमाच्छादित उत्तुंग चोटियां दिखाई दे रहीं थीं। तूफान एवं वर्षा से रास्ता खराब हो गया था। कई पहाड़ों के गिरने से सड़क टूट गई थी। हमारे रास्ते के दोनों तरफ उत्तुंग शिखर थे और उन दोनों के बीच कल-कल ध्वनि से मधुर संगीत गाता हुआ बनिहाल का खूनी नाला बह रहा था। पहाड़ों की चोटियों पर मनुष्य ने अपनी बस्तियां बसा रखी थीं। रास्ते बड़े कठिन थे। परन्तु, वहा के निवासी अभ्यस्त होने के कारण सुगमता से आते जाते थे। फिर भी कभी-कभी पशु एवं मनुष्यों के पैर फिसल ही जाते और उनका

अमूल्य जीवन बनिहाल के खूनी नाले की भेंट चढ़ जाता।

जब हम ऊपर नजर उठाकर देखते तो ये बस्तियां बड़ी विचित्र-सी लगतीं। घास-फूस के बने झोंपड़े ऐसे लगते थे कि मानो पक्षियों के घोंसले हों। और पहाड़ों पर चलते हुए पशु एवं मनुष्य ऐसे दिखाई पड़ते कि दीवालों पर कीड़े-मकोड़े एवं क्षुद्र जन्तु रेंग रहे हों। हम प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को निहारते हुये मस्ती से बढ़ रहे थे। थोड़ी देर में साफ आकाश धुंधला होने लगा। देखते ही देखते आकाश में काले-कजरारे बादल उमड-घुमड़ आए। हवा चलने लगी और बादल भी गरजने लगे प्रकृति की बढती हुई भयानकता के साथ-साथ हमारे कदम भी तेजी से उठने लगे और हम सानन्द बनिहाल पहुँच गए। वहां पहुँचते ही स्थान मिल गया। हमने अपने वस्त्र-पात्र रखकर आसन बिछाए और आराम से बैठ गए।

मकान में कदम रखते ही वर्षा शुरु हो गई। शायद बादल हमारे पहुँचने की ही प्रतीक्षा कर रहे हो। पाँच दिन तक वर्षा होती रही। कई बार बर्फ भी गिरती रही। बर्फ गिरने का दृश्य बड़ा सुहावना लग रहा था। आकाश से गिरती हुई बर्फ ऐसी लग रही थी मानों रुई के सुकोमल गुच्छे गिर रहे हों। आस-पास की सब पहाड़ियाँ बर्फ से ढँक गई थीं। चारों तरफ बिखरी हुई बर्फ ऐसी प्रतीत हो रही थी मानों किसी ने रजत पट बिछा रखा हो। चारों तरफ का वातावरण बड़ा शांत एवं सुहावना था। पाँच दिन की विश्रान्ति से हमारी थकावट कम हो गई थी। पत्नीराय की चढ़ाई के दिन सेवावन्ती जी की जबान तुतलाने लगी थी और मार्ग में वह बढ़ती ही गई थी, पर यहाँ आकर ठीक हो गई। सब के शरीर में नई स्फूर्ति, नई चेतना आ गई।

पीर पंचाल के पथ पर : : :

जम्मू में हमें सब से ज्यादा भय पीर पंचाल की चढ़ाई का बताया

गया था। इसे लोग एवरेस्ट पहाड़ (Mount Everest) की चढ़ाई बताते थे। उसे आज पार करना था। पांच दिन विश्राम करके हम लोग पीर पंचाल पर विजय पाने चल पड़े। चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे हिमाच्छादित शिखर थे। प्रकृति अपना अनन्त सौन्दर्य संजोए खड़ी थी। प्रकृति हँस रही थी और उसकी गोद में प्राणी कराह रहे थे। हम जिस सड़क को नाप रहे थे उसी सड़क पर भेड-बकरियों से भरे हुए ट्रक भी तेजी से दौड़ रहे थे। और वे गरीब पशु करुण स्वर से बें बें कर रहे थे। और दूसरी तरफ हाथों (कश्मीर के मुसलमानों की एक जाति) की गरीबी का एक करुण दृश्य था। फटे एवं गंदे चिथड़ों में उनका सुन्दर शरीर ऐसा लग रहा था, जैसे कि राहू ने चन्द्र को ग्रस रखा हो। रास्ते में अनेक लोगों से बातें हुई। न खाने को पेट भर रोटी मिलती थी और न तन ढकने एवं सर्दी से बचने को उनके शरीर पर पूरे वस्त्र थे। प्रति वर्ष सर्दी के कारण सैकड़ों आदमी मर जाते हैं। कई लोगों ने बताया कि गत सर्दी के दिनों में उनके परिवार के अमुक-अमुक व्यक्ति बर्फ से नीचे दबकर मर गए। कुछ दरियाओं के प्रवाह में प्रवाहमान हो गए। उनकी करुण कहानियां सुनकर कई बार हृदय रो उठता। हम उन्हें आश्वासन देते, ईमानदारी से श्रम करके सादा एवं सात्विक जीवन बिताने की प्रेरणा देते और मांस-मदिरा से दूर रहकर प्राणियों पर रहम करने की सलाह देते। इस तरह सब से संपर्क बनाते हुए हम आगे बढ़ रहे थे।

मानवता की पुकार : : :

बनिहाल ५-६ मील पीछे रह गया था। पीर पंचाल की चढ़ाई सामने आ रही थी। हम दृढता से बढ़ते जा रहे थे। आज मन में उत्साह था—पीर पंचाल पर विजय पाने का। पर, पीछे से आवाज आई 'बहिन जी जरा ठहरो'! हमारे बढ़ते कदम रुक गये। दृष्टि स्वतः पीछे को मुड़ गई। एक सभ्य व्यक्ति हमारे सामने आ खड़ा हुआ। उस

ने हाथ जोड़े और भोजन करने की प्रार्थना की। वह व्यक्ति हमें नहीं जानता था। हमारा उस से कोई सम्बन्ध नहीं था और न हम से उसे किसी तरह का स्वार्थ ही था। फिर भी उसने हमें आवाज देकर रोका और प्रेम से भोजन करने का आग्रह किया। वस्तुतः यह इन्सानियत का सम्बन्ध था। मानवता की आवाज थी। जो मानव को मानव का सत्कार करने की प्रेरणा दे रही थी। मानवता के नाते सब मानव एक हैं। यदि कवि के शब्दों में कहूँ—"Remember, no men are strange, no countries foreign.". अर्थात् दुनियां का कोई भी आदमी अजनवी नहीं है, अपरिचित नहीं है और विश्व का कोई देश विदेश नहीं है। सब मानव चाहे वे किसी देश, किसी जाति, किसी रंग एवं किसी पंथ के क्यों न हों, हमारे दोस्त हैं, हमारे साथी हैं और हमारे भाई हैं।

उस भाई की वाणी में मानवता का प्यार था। उस से बात करने में हमें अपनापन लगा। हमने उसे समझाया कि जैन साधु किस तरह आहार-पानी लेते हैं। आहार तो हम कर चुके थे, अतः हमें लेना नहीं था। पानी की आवश्यकता थी परन्तु उसके पास गर्म एवं प्रासुक पानी था नहीं। साथ की बहिनों को भूख तो थी नहीं, परन्तु प्यास लग रही थी। उससे ठंडे पानी के ग्लास लिए और सूखे हुए कंठों को तर किया। बात ही बात में मैंने उस सज्जन का नाम पूछा तो वह बताने में कुछ संकोच करने लगा। बहुत आग्रह करने पर बताया कि मेरा नाम मोहम्मद खां है। मैंने कहा—घबराइये नहीं। आप हमारे भाई हैं। धर्म एवं इन्सानियत जात-पांत से ऊँची है। जात-पात लोगों में घृणा-द्वेष फैलाते हैं। धर्म किसी को लड़ना नहीं सिखाता, वह तो प्रेम करना सिखाता है। कवि ने बिल्कुल सही कहा है—

"तुम राम कहो वे रहीम कहे, दोनों की गरज अल्लाह से है।

तुम दीन कहो वे धर्म कहे, मनसा तो उसी की राह से है।
तुम इश्क कहो वे प्रेम कहे, मतलब तो उसी की चाह से है।
वे योगि हैं तुम सालिक हो, मक्सद दिल आगाह से है।
क्यों लड़ता है मूर्ख बन्दे, यह तेरी खाम खयाली है।
है पेड़ की जड़ तो एक वही, हर मजहब एक-एक डाली है।
बन गया शिवालय-मस्जिद भी, है ईंट वही चूना भी वही।
मेमार वही मजदूर वही, मिट्टी है वही, गारा भी वही।
तक्दीर का जो कुछ मतलब है नाकूसका भी मतलब है वही।
तुम जिस को नमाज कहते हो, हिन्दू के लिए पूजा है वही।
फिर लड़ने से क्या हासिल है, जी फह्म हो तुम नादान नहीं।
क्या कत्लव गारत खूंरेजी, तारीफ यही ईमान की है?
क्या आपस में लड़कर मरना, तालीम यही कुरान की है?
इन्साफ तफसीर यही क्या, वेदों के फरमान की है?
क्या सचमुच खूंरेजी ही, आला खसलत इन्सान की है?
तुम ऐसे बुरे एमाल पे अपने कुछ तो खुद से शर्म करो।
पत्थर जो बना रखा है 'सईद', इस दिल को जरा नर्म करो॥"

हमारे वार्तालाप से वह भाई बहुत प्रसन्न हुआ। उसने ठहरने को कहा। परन्तु हम ठहरे चलते राही। रुकने का समय कहां? हां, प्यारी बहिनजी घबरा गई थी। उनके शरीर पर सूजन आ रही थी। वे यहां से बस (Bus) पर सवार हो गई। हमने उस भाई से विदा ली और पीर पंचाल की चढाई चढने लगे। तांगा चक्कर काटकर सड़क से आ रहा था और हम सीधी पगडंडियों के रास्ते चढ रहे थे। एक डेढ़ मील तक छोटे छोटे खेत आते रहे। खेत भी विचित्र ढंग के थे। ऐसा मालूम हो रहा था कि हरी हरी सीढ़ियें बना रखी हों। खेतो में कई जगह पानी भरा था। वहां की मिट्टी चिकनी थी। बड़ी सावधानी से पैर रखते थे। फिर भी कई बार फिसल पड़े। चढ़ते-चढ़ते सांस भी फूल रही

फिर भी गिरते-पड़ते पीर पंचाल की चढ़ाई चढ़ ही ली। जिसे लोग Everest से कम नहीं बता रहे थे, उस पर हमने सुगमता से विजय पा ली। अब हम बनिहाल की सुरंग (Tunnel) के निकट थे।

यह Tunnel पहाड़ों को काटकर बनाई गई। इससे पीर पंचाल की चढ़ाई कुछ कम हो जाती है और बहुत-सा चक्कर भी बच जाता है। यह Tunnel दो मील लम्बी है। अन्धेरे को दूर करने के लिए थोड़ी-थोड़ी दूर पर बिजली के बल्ब जग-मगाते रहते हैं। अभी इसमें कुछ काम हो रहा था। अत: आफिसर (Officer ने हमें रोकने का प्रयत्न किया। उसने कहा अभी इस रास्ते से गुजरने में खतरा है। यदि कोई घटना घटित हो गई तो मेरा कोई दायित्व नहीं है। उसने यह भी बता दिया कि आध घण्टे में ट्रैफिक शुरु होने वाला है। हमने उसे अपनी परिस्थिति समझा दी। क्योंकि दूसरा रास्ता काफी लम्बा था और बहुत चढ़ाई चढ़नी पड़ती थी। उसे समझा कर और नवकार मन्त्र का तीन बार स्मरण करके हम Tunnel में प्रविष्ट हो गए। कहीं कहीं ऊपर से पानी झर रहा था, इससे नीचे कीचड़ हो गया था। रास्ते में कई बार बिजली भी चली (Fail गई। उस समय बड़ी कठिनाई से एक दूसरे का हाथ पकड़ कर रास्ता तय करते। परन्तु फिर भी तेज रफ्तार से चल कर हमने २४ मिनिट मे दो मील की Tunnal पार कर ली। हमारे बाहर आने के कुछ मिनिट बाद ट्रैफिक चलना शुरु हो गया। सुरंग (Tunnal, के बाहर आकर हमने करीब एक घण्टे तक विश्राम किया।

वेरीनाग की ओर : : :

कुछ विश्राम करके उठे। हिमाच्छादित पर्वतमालाओं की ओर निहारा और वेरीनाग की ओर प्रस्थान कर दिया। जितनी खतरनाक चढ़ाई थी उतनी ही भयानक उतराई थी। परन्तु फकीरों के मार्ग को

"तूफानों के भय से जिसके साहस में बाधा आई है,
ऐसे कम हिम्मत राही ने अपनी मंजिल कब पाई है।
जो मंजिल का मतवाला है. संकट से कब घबराता है,
छोटा-सा निर्झर बहने को चट्टानों से टकराता है।"

राही किसी खतरे से नहीं डरता। उसे प्रकृति भयावनी नहीं, सुहावनी प्रतीत होती है। उसे ऐसा लगता है, "For the seas call, and the stars call, and oh ! the call of the sky." अर्थात् उसे समुद्र यात्रा के लिए बुला रहा है, रात को आकाश में टिम-टिमाते हुए तारे उसे पर्यटन के लिये निमन्त्रण दे रहे हैं और यह अनन्त आकाश उसे दुनियां का नया अनुभव करने के लिये पुकार रहा है। हम प्रकृति के मौन आमंत्रण को स्वीकार कर चल पड़े। न चढ़ाई के कष्टों के सामने घुटने टेके और न उतराई की भयंकरता से घबराये। उस संकीर्ण एवं गहरी घाटी की टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियां पार करके हम सीधे चश्मे के किनारे आ पहुँचे। यह चश्मा वेरीनाग और पीर पचाल के उत्तुंग शिखरों के दामन में है व झेलम सरिता का उद्गम स्थान है। यह कश्मीर का सब से विशाल एवं सब से गहरा चश्मा माना जाता है। सम्राट जहांगीर ने इसे ई० सन् १६२० में बनवाया था। उसकी मृत्यु के बाद शाहजहां ने इसमें से एक नहर निकलवाई थी। वह तीन दिशाओं में बड़े वेग से प्रवहमान है। यह चश्मा ५४ फीट गहरा है और इसमें १७-१८ फीट के फासले पर तीन सीढ़ियां बनी हुई हैं। कुछ समय चश्मे पर ठहर कर हमने प्रकृति के खुले वैभव को देखा-परखा। शान्त वातावरण का आनन्द लिया। फिर वहां से उठकर डाक बंगले में चले आये। वहां आसन बिछाया और आराम से बैठ गये। थोड़ी देर बाद कुछ पुलिस के सिपाही आ गए। आज हम काफी थक चुके थे। मन आराम करना चाहता था फिर भी

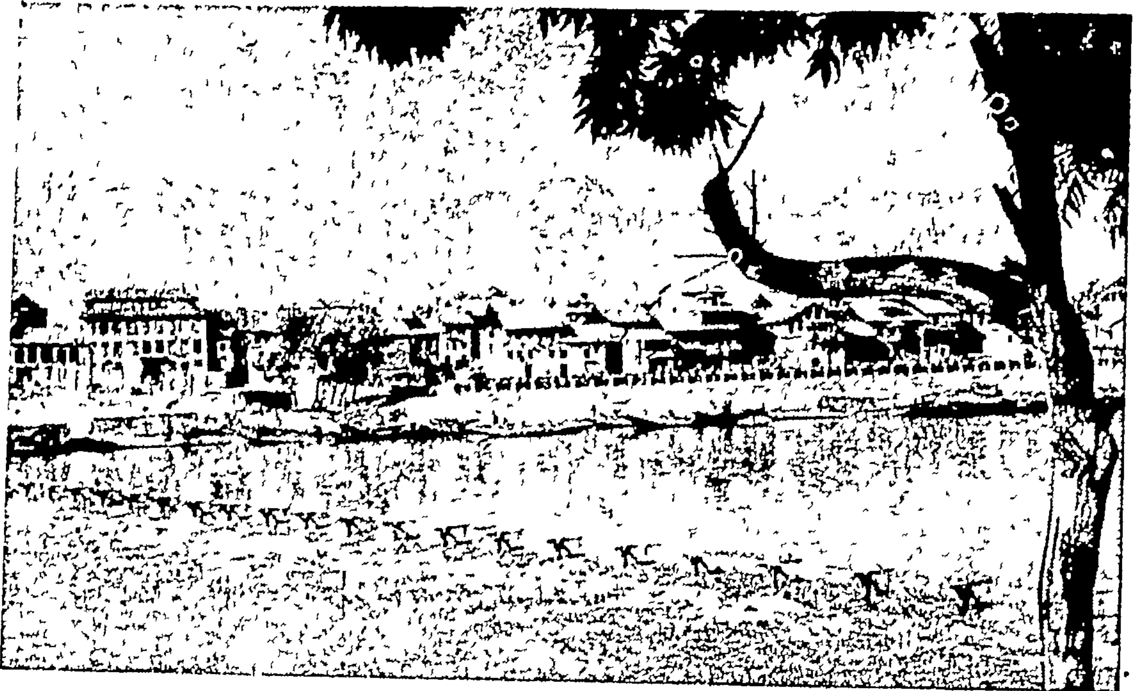
उनके प्रेम को देख कर उन्हें कुछ उपदेश सुनाया। उसके बाद निद्रादेवं की गोद में ऐसी लेटे कि किसी को अपनी सुध-बुध नहीं रही।

अनन्त नाग के पथ पर : : :

प्रातः प्रतिक्रमण के समय उठे। नित्य नियम किया और सूर्योदय होते ही अनन्त-नाग की ओर कदम बढ़ा दिए। यहां से अनन्त १६ मील था। हम अपनी राह पर चल रहे थे। कुछ दूर चलने पर सड़क के किनारे 'लार्कपुर' गांव आया। यह मुसलमानों का गांव था। हमें देखते ही स्कूल का अध्यापक हमारे पास आया और हमें आग्रह करके स्कूल में ले गया। उसने स्कूल की छुट्टी कर दी। मुख्य अध्यापक का नाम अजीनखाँ था। सब का अनुपम प्रेम था। उनके आग्रह से हम वहां ठहर गए। गांव में मुनादी करा दी गई। रात को मानवता पर भाषण दिया। उन्हें यह बताया कि प्रत्येक प्राणी पर रहम करना, प्रत्येक इन्सान का आदर सम्मान करना, दुःख में पड़े हुए प्राणी को उससे मुक्त करने का प्रयत्न करना, दूसरे के दुःख में हाथ बंटाना यही मानवता है, यही इन्सानियत है। इन्सान का सब से पहला धर्म यही है कि वह किसी को कष्ट न दे और मुसीबत में फंसे हुए प्राणी को कष्ट के पंक से निकालने का प्रयत्न करे। दुनियां के समस्त धर्मों ने अहिंसा को महत्त्व दिया है। इस्लाम धर्म के उपासक मौलाना रूमी कहते हैं—

"हजार कुँजे इबादत, हजार गंजे करम।
हजार ताइद शबह हजार बेदारी।
हजार सिजदावहर सिजदा हजार नमाज।
कबूल नेस्त गर ताइद ब्याजारी।"

हे मानव! यदि तू हजारों लोगों में बैठकर प्रार्थनाएं करता है, तू दान देने में हजारों का धनकोष खाली कर देता है, भक्ति एवं साधना



वेरीनाग के चश्मे से निकला हुआ झेलम (श्रीनगर) दरियाव ।

में तू हजारों रातें पूरी कर देता है, खुदा का गुण गाते-गाते या भगवान का कीर्तन करने में तू हजारों रात जागकर बिता देता है, तू हजारों सिज्दा करता है और हर सिज्दे के साथ भक्ति पूर्वक नमाज भी पढ़ता है, किन्तु इतनी कठिन साधना करने के बावजूद भी, यदि तू किसी एक पक्षी को भी दु:ख देता है, किसी के प्राणों पर हाथ साफ करता है, तो खुदा के दरबार में तेरी एक भी इबादत एवं भक्ति-पूजा स्वीकार नहीं होगी। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह है कि दूसरे प्राणी को दुःख नहीं देना और दु:खी प्राणी की तन मन एवं वचन से रक्षा करना ही सच्ची भक्ति है। अपने खून, मांस एवं चर्बी को बढ़ाने के लिए दूसरे के मांस को खाने वाला व्यक्ति अपने पेट को कब्रिस्तान बनाता है। और इतना तो आप स्वयं सोच सकते हैं कि क्या श्मशान कभी शान्त रहता है? जिसकी गोद में मुर्दों के शव दबे हों या दिन-रात चिताए जलती हों, वहां शांति एवं पवित्रता कैसे रह सकती है? अतः जिस इन्सान का पेट ही बिचारे दीन-हीन जानवरों की कब्र बन रहा है, वहां भक्ति का निवास कहां होगा। गुरु नानक देव ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि 'यदि कहीं वस्त्र में एक खून का दाग लग जाय तो वह अपवित्र हो जाता है, वह ग्रन्थ साहब नहीं पढ़ सकता, भक्ति नहीं कर सकता। परन्तु जो मनुष्य दूसरे प्राणियों का खून पी जाते हैं, उनका सारा शरीर दूसरे के खून से भरा है, उसकी भक्ति कैसे पवित्र कही जा सकती है।" उन्होंने एक जगह और भी लिखा है—

"जो गल काटे और का अपना रहे कटाय।
धीरे-धीरे नानका, बदला कहीं न जाय॥"

इसी तरह बाइबिल में भी हिंसा का निषेध किया गया है। उसमें स्पष्ट कहा है—Thau shalt not kill. अर्थात् तुम किसी भी प्राणी को मत मारो। ईसा ने तो यहां तक कहा है कि यदि कोई तुम्हारे

एक गाल पर चांटा मारे तो तुम उसका बदला चांटा मार कर मत लो बल्कि अपना दूसरा गाल उसके सामने कर दो। कितनी बड़ी बात है परिवार में समाज में, देश मे एवं विश्व में शान्ति बनाए रखने के लि गाली-गलौज, थप्पड़-मुक्का लाठी-बन्दूक, बम्ब-पिस्तौल, अणु-आयु एव राकेट नहीं चाहिये, उसके लिए प्यार-मुहब्बत चाहिए, मानव व मानव के प्रति विश्वास चाहिए और एक दूसरे को सहयोग देने व भावना चाहिए।

इस तरह अहिंसा को जीवन में उतार कर ही हम चारों ओ शान्ति की सरिता बहा सकते है, इस धरती पर स्वर्ग बसा सकते है आज केवल महापुरुषों का गुण गाने का ही समय नहीं है, समय महानता का कार्य करने का। साम्यवाद के जन्मदाता कार्ल मार्क्स ने भी एक जगह लिखा है—' किसी के गुणों की प्रशंसा करने में समय नष्ट मत करो, उन्हें अपनाने का प्रयत्न करो।" क्योंकि जीवन का विकास केवल प्रशंसा करने से नहीं, बल्कि काम करने से होगा। रोटी की प्रशंसा के पुल बांधते चलिए आपका पेट नहीं भरेगा। चाहे मिश्री की कितनी ही तारीफ करते चलें क्या आपका मुंह मीठा हो जाएगा? कभी नहीं। अत. मनुष्य को चाहिए कि वह अपना समय दूसरों को दुःख से मुक्त करने में, गिरते हुए को सहायता देने में लगाए और प्रत्येक प्राणी के साथ स्नेह से वर्ताव करे।

इस गांव में हमारा ठहरने का कोई प्रोग्राम न था। परन्तु, लोगों ने हमें आग्रह करके रोक लिया। और इस प्रवचन का इतना अच्छा प्रभाव पड़ा कि हमें यहा दो दिन ठहरना पड़ा। अनेक व्यक्तियों ने मांस-शराब के त्याग किए और दोनों दिन के प्रवचनों को लिखकर उनका हिंदी, अंग्रेजी एव कश्मीरी भाषा में अनुवाद कर लिया। जम्मू में हमें यह बताया गया था कि इधर के मुसलमान बहुत खतरनाक होते हैं। परन्तु

हमें तो हर स्थान पर उनका सहयोग मिला। सैनिकों एवं मुसलमानों ने हमारी बहुत सेवा की। उनके सहयोग को कभी नहीं भुलाया जा सकता।

अनन्त नाग में : : :

लाकेपुर से चलकर अनन्त नाग आ पहुँचे। यह एक अच्छा कस्बा है। यहां पर हमें Military में राजस्थान के कुछ सिपाही मिल गए और यहां के महन्त जी भी राजस्थानी थ। अपने प्रान्त के व्यक्तियों को देख सबके मन में प्रसन्नता हुई। महन्त जी ने हमें यहां की स्थिति का परिचय कराया और दर्शनीय स्थानों का नाम बताया। यहां गंधक आदि के पाच चश्मे बहते हैं।

दूसरे दिन वैशाखी का दिन था। पंजाब एवं जम्मू-कश्मीर में हिन्दू एव सिख इस पर्व को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। वैशाखी को मन्दिर एवं गुरुद्वारे में काफी चहल-पहल रहती है। हम आज मटन (मार्तण्ड) देखने चल पड़े। यह हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। हमें देखते ही कई पण्डे बड़ी-बड़ी बहिऐं (खाते) बगल में दबाए हमे घेर कर खड़े हो गए। वे हमे तीर्थ यात्री समझकर हमसे दक्षिणा वसूल करना चाहते थे। बड़ी मुश्किल से उन्हें समझाया और उनसे मुक्ति पाकर आगे कदम बढ़ा दिए।

यहां पर विमल और कमल नाम के दो जल कुण्ड हैं। इनका पानी बहुत साफ है और इनमे रंग-बिरंगी मछलियां रहती है। इसे हिन्दू लोग कश्मीर का हरिद्वार करते हैं। यहां पर कश्मीरी पण्डों के ३०० घर हैं। मुगल सम्राट जहागीर ने सन् १६३० मे यहां चिनार का बाग लगवाया था। इस से यहां की शोभा मे चार चाँद लग गए थे। सैर करने वालों के लिए यह स्थान काफी महत्वपूर्ण है। परन्तु, आजकल इस तीर्थ स्थान

पर केवल हिन्दुओं का ही एकाधिपत्य (Monopoly) नहीं है। इसके एक हिस्से पर सिक्खों ने अपना अधिकार जमा रखा है। वे इसे नानक सर (तालाव) तीर्थ के नाम से पुकारते हैं। आज यहां सिक्खों की संख्या अधिक थी। वे आज नानक जयन्ती मना रहे थे। उन्होंने मुझे अपने जलसे में भाषण देने का आग्रह किया। मेरे पास समय कम था परन्तु उनके आग्रह को टाल नहीं सकी। मैने एक घन्टे तक गुरु नानक देव की शिक्षाओं को आचरण में लाने की बात कही। उनकी मुख्य शिक्षाएं हैं—मांस और शराब से दूर रहना, किसी के दिल को कष्ट एवं चोट नहीं पहुँचाना, ब्याज नहीं लेना, दुराचार नहीं करना और नम्र बनकर रहना। यदि हम इन बातों को जीवन में उतारने का प्रयत्न करें तो दुनिया के समस्त झगड़े मिट सकते हैं। और वस्तुतः महापुरुष के उपदेश को जीवन में साकार रूप देना ही उसकी जयन्ती को मनाना है उसके गुण-गान एवं उसकी प्रशंसा करना है। यदि हम उनके उपदेश की उपेक्षा करके केवल उनकी शाब्दिक प्रशंसा करते हैं, तो यह उनकी तारीफ नहीं, बल्कि निन्दा है। उनकी स्तुति शब्दों में नहीं, कार्य रूप में ही की जा सकती है।

प्रवचन के बाद वहां उपस्थित अधिकारी व्यक्तियों से कुछ समय तक विचार चर्चा की। उसके बाद पुनः अनन्त नाग आ गए।

ग्यारह अंगुलियों पर ११ मन का पत्थर : : :

रास्ते में हमने एक ग्यारह मन से भी अधिक वजनदार पत्थर देखा। आश्चर्य की बात तो यह थी कि बीज बिहड़ के ११ व्यक्ति इसे अपनी ग्यारह अगुलियों पर उठा लेते थे। उसे देखते ही मन कृष्ण युग में जा पहुंचा। कहते हैं—कृष्ण ने ग्वालों की रक्षा के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी चिट्ठी अंगुली पर उठाया था और ग्वालों ने भी उनकी इस कार्य

में मदद की थी। यह तो एक पौराणिक घटना है परन्तु बीज बिहड़ की घटना पौराणिक नहीं, प्रत्यक्ष है। और गोवर्धन के धारक भगवान कहलाते हैं, परन्तु इस भारी भरकम शिला को उठाने वाले तो इन्सान ही हैं। दिन भर यहां लोगों का मेला-सा लगा रहा। श्रीनगर से भी कुछ लोग आ पहुँचे। वे हमारे सामने आए थे।

अवन्तीपुर में : : :

यहां से चलकर हम अवन्तीपुर पहुँचे। यहां सड़क के दोनों तरफ़ बहुत दूर-दूर तक पुराने खण्डहर दिखाई दे रहे थे। इन खण्डहरों को देखने से ऐसा लगता था कि यह किसी समय महाराज एवन्तीवर्य का वैभवशाली राज्य एवन्तीपुर रहा होगा। खण्डहर का एक-एक पत्थर उस युग के वैभव का इतिहास बता रहा है। हमने यहां पाण्डवों के मन्दिर को देखा। यह बहुत पुराना मन्दिर है। इसका प्रवेशद्वार बीते युग के गौरव की याद दिला रहा है। यह अपने युग का सही इतिहास बता रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि शिल्प कला में प्राचीन युग आज से अधिक उन्नत था। उस युग की वास्तुकला के सामने वर्तमान युग की वास्तुकला फीकी-फीकी लगती है।

यहां के प्राकृतिक दृश्य भी बड़े ही सुन्दर हैं। ऊंचे-ऊंचे पहाड़ सैनिकों की तरह तनकर खड़े है। जिधर देखो उधर वर्फ से आच्छादित चोटियाँ दिखाई देती है। पहाड़ों पर यत्र-तत्र-सर्वत्र बादामों के बाग लगे हुए हैं और शहतूतों के वृक्षों से मीठी-मीठी सुगन्ध आ रही है। चारों तरफ़ का वातावरण शान्त एवं रमणीय है। प्रकृति को देखते हुए न मन भर रहा था और न आंखें थक रही थीं। जी भर कर प्राकृतिक शान्ति का आनन्द लिया और आगे को कदम बढ़ा दिए। क्योंकि हम भी दरिया की तरह चलने वाले राही थे।

केसर के खेत : : :

दुनिया में अनेक चीजें पैदा होती हैं। अनेक तरह की खेती होती है, अनेक तरह का अनाज पैदा होता है। परन्तु, केसर की खेती सर्वत्र नहीं होती। भारत में भी केवल कश्मीर में ही केसर की खेती होती है। वह भी कश्मीर के पूरे प्रदेश में नहीं होती। वह केवल पम्पापुर के खेतों में ही लहलहाती है। हमने केसर की खेती का वर्णन पढ़ा-सुना अवश्य था। परन्तु, अभी तक केसर के सुहावने खेत नहीं देखे थे और न उस भूमि पर कदम ही रखे थे जहा केसर पैदा होती है। कई बार इसे देखने की भावना हृदय में जरूर उठी थी। आज वही मनोभावना पूरी होने जा रही थी। हम आज पम्पापुर (पद्मपुर) आ पहुँचे। इस गांव में चारों तरफ छोटे-छोटे केसर के खेत हैं। कुछ सेर केसर ही किसान को मालामाल बना सकती है। परन्तु, दुःख की बात तो यह है कि इस उद्योग पर पूंजीपतियों का कब्जा है। इसकी सब आमदनी पूंजीपतियों की तिजोरियाँ भरती हैं। बिचारे मेहनत करने वाले किसान इससे लाभान्वित नहीं होते। उन्हें तो परिश्रम के पैसे भी इतने कम मिलते हैं कि वे अपना एवं अपने परिवार का पेट भी नहीं भर सकते।

कश्मीर के प्रसिद्ध ऐतिहासिक महाकवि कल्हण ने अपने राजतरंगिणी काव्य मे केसर की उत्पत्ति के विषय मे एक घटना-किवदन्ती का उल्लेख किया है। उसमें लिखा है कि महाराज ललितादित्य के शासन काल में पद्मपुर में एक प्रसिद्ध चिकित्सक रहता था। उसके पास एक नागराज आया। वह अस्वस्थ था। वैद्य ने अनेक प्रयत्न किये, पर वह स्वस्थ नहीं हो पाया। वैद्य ने नागराज के जीवन का अध्ययन किया तो उसे पता लगा कि उसकी विषाक्त दृष्टि के कारण ही उसकी औषध उसे लाभ नहीं पहुँचा पाती। उसने नागराज के नेत्र पर पट्टी बांधकर उसका उपचार किया और इससे वह स्वस्थ हो गया। नागराज ने वैद्य

का उपकार माना और उसे उपहार के रूप में एक केसर का कन्द दिया। जिसकी खेती करने से आज पम्पापुर केसर का उद्योग केन्द्र बन गया है। और इसी कारण इसे नाग-केसर भी कहते हैं। यह एक किंवन्दती है। वस्तुत: यह केसर का बीज कहां से आया और इसकी खेती कब से प्रारंभ हुई यह तो ऐतिहासिकों के अन्वेषण का विषय है।

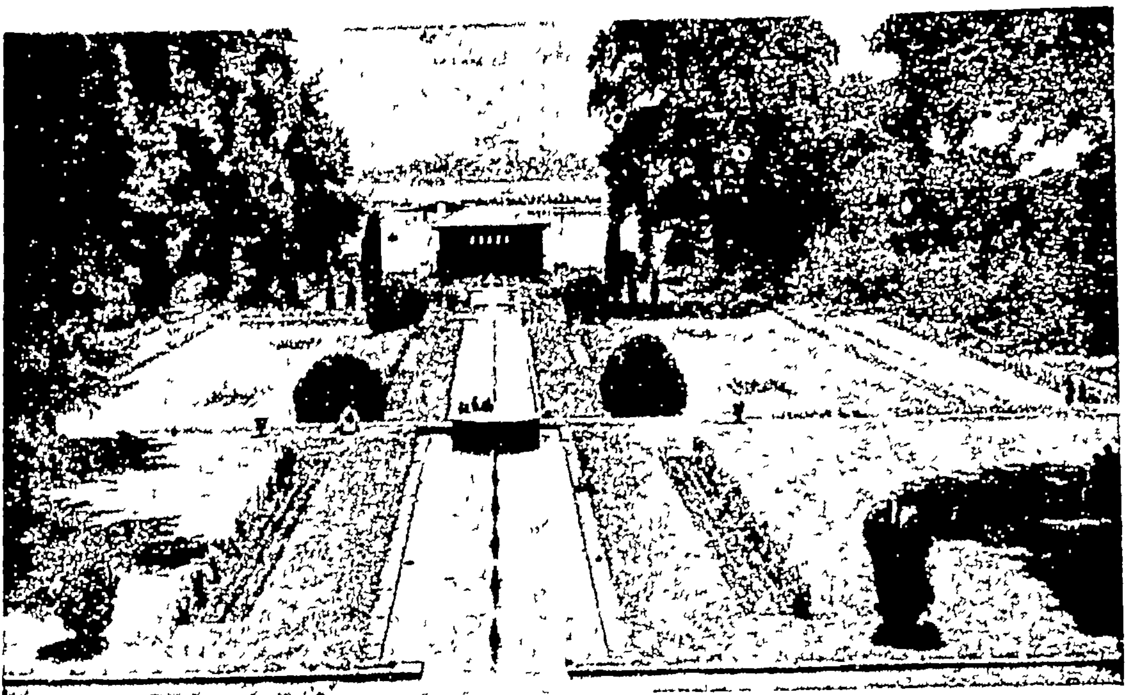
श्रीनगर में प्रवेश : : :

यहां कुछ पंडित लोग हमारे पास आ गए। उनसे कुछ देर तक विचार विमर्श चलता रहा। श्रीनगर के भी कुछ प्रमुख व्यक्ति साथ थे। यहां से श्रीनगर केवल आठ मील रह गया था। एक दिन यहां ठहरे। प्रात: श्रीनगर की ओर कदम बढा दिए। हमारे कदमों के साथ साथ आकाश मे बादल भी बढ़ते जा रहे थे। कभी-कभी नन्हीं-नन्हीं बूंदें भी टपकने लगती थीं। श्रीनगर के बाहर का दृश्य बड़ा ही सुहावना था। एक तरफ पर्वत मालाएं सुशोभित हो रही थी और दूसरी ओर चिनार के वृक्षों की कतार और बाग-बगीचे दिखाई दे रहे थे। पहाड़ों और बगीचों के मध्य में श्रीनगर के सैनिकों की छावनी थी। उससे आगे शंकराचार्य का पहाड़ आया। कहते हैं इस पहाड़ पर आचार्य शकर ने तप किया था अवेदान्तियों से चर्चाएँ की थी। इस पहाड़ी के नीचे दुर्गानाग का मन्दिर है। हमने यहां करीब आध घन्टे तक विश्राम किया। ज्योंही हमने मन्दिर में प्रवेश किया त्योंही वर्षा शुरु हो गई और जल-धर ने आध घन्टे तक हमारा जी भर कर स्वागत किया। वर्षा के बंद होते ही हम वहां से चल पड़े और सं० २०१७ की वैशाख शुक्ल ६ को हमने श्रीनगर में प्रवेश कर दिया और दीवान विष्णुदास की कोठी में ठहर गए। आज सबके चेहरे पर प्रसन्नता थी। क्योंकि आज हमारा स्वप्न साकार हो उठा था। इतिहास में यह प्रथम दिन था कि श्रीनगर की भूमि पर जैन साध्वियों के चरण पड़े थे।

साधुओं के कदम श्रीनगर की ओर बहुत वर्षों से बढ़ते रहे हैं। श्रीनगर (कश्मीर) केवल सौन्दर्य की दृष्टि से ही नहीं, विद्वत्ता की दृष्टि से भी भारत में प्रसिद्ध रहा है। उस युग में कश्मीर के विद्वानों पर विजय पाने वाले व्यक्ति को ही विशिष्ट विद्वान माना जाता था और लोग उसे विशेष आदर-सम्मान की निगाह से देखते थे। विक्रम की १२वीं शताब्दी मे कश्मीर के विद्वानों पर विजय पाने के लिए ही आचार्य हेमचंद्र ने श्रीनगर की सड़कों को नापा था। उसके बाद और भी मुनि गण श्रीनगर की सुषमा को निहार कर चुके थे। परन्तु आज का युग बदल गया है। अब शास्त्र चर्चा का जमाना केवल इतिहास के पन्नों पर अंकित रह गया है। जहां तक मेरा ख्याल है इस युग में सबसे पहले बिहार-बंगाल प्रांत मंत्री मुनि श्री फूलचन्दजी म० (मारवाड़ी) पधारे थे। उनके बाद श्री विमल मुनिजी म० और श्री राकेश मुनिजी म० भी कश्मीर की शोभा को देख आए हैं। परन्तु, अभी तक कोई भी जैन साध्वी वहां नहीं पहुँची थी। हमने जब पंजाब में कदम रखा तब से हमारे मन में यह भावना जन्म ले रही थी कि कश्मीर के सुरम्य पहाड़ भी साध्वियों के स्पर्श से अछूते न रहें। और आज हमारे मन की अभिलाषा पूरी हो गई।

कश्मीर—स्वर्ग है या नरक ? : : :

श्रीनगर कश्मीर की ग्रीष्म कालीन राजधानी है। इसे लोग भारत का स्वर्ग कहते है। कश्मीर के सौन्दर्य वर्णन पर अनेकों किताबें लिखी जा चुकी हैं। आये दिन अखबारों के पृष्ठ के पृष्ठ रंगे रहते हैं कश्मीर की सुषमा से। परन्तु श्रीनगर मे प्रवेश करते ही यह प्रश्न अवश्य ही उठता है कि कश्मीर स्वर्ग है या नरक ? हमने यहां दोनों तरह के दृश्य देखे। कश्मीर के बाग-बगीचे, एवं प्राकृतिक दृश्य जितने सुहावने हैं, वहां के शहर उतने ही गंदे हैं। श्रीनगर का दृश्य ही हमारे सामने है। झेलम



चश्माशाहि (श्रीनगर) काशमीर

नदी शहर के मध्य से गुजरती है। इसने शहर को दो हिस्सों में बांट दिया है। शहर के दोनों हिस्सों का एक दूसरे के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए जेहलम नदी पर आठ पुल बनाए गए हैं। इसके अतिरिक्त नौकाओं के द्वारा भी एक ओर से दूसरी ओर आ-जा सकते हैं।

शहर की गलियां काफी संकड़ी और बहुत ही गन्दी हैं। मुसलमानों के घर तो इतने गन्दे रहते हैं कि उस गली से चलने वाले व्यक्ति की नाक भी दुर्गन्ध से सड़ने लगती है। लोग उन संकड़ी गलियों में जहां तहां कूड़ा-कंकर फैंक देते हैं। इससे वहां का वायु मण्डल दूषित हो जाता है। जगह जगह गन्दगी के ढेरों पर मक्खियां भिन-भिनाती रहती हैं। और इससे बीमारियां भी फैलती रहती है। इसके अतिरिक्त कश्मीर में मांस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। जिस बाजार से निकलो उधर दूध चाय की दुकानों पर अंडों के लटकते हुए टोकरे एवं अनेक दुकानों पर मांस-मछलियों के ढेर के ढेर लगे दिखाई देते हैं। इतनी गंदगी और इस तरह से बिकता हुआ मांस हमने कहीं नहीं देखा था।

कश्मीरी सुन्दर अवश्य थे। प्रकृति ने उन्हें सौन्दर्य वरदान में दिया था। परन्तु वे तन के सौन्दर्य को संभाल नहीं पा रहे थे। उनके वस्त्र एवं शरीर इतने गंदे रहते हैं कि उनके पास बैठने में ग्लानि न आना कठिन है और वे इतने गरीब है कि न तो उन्हें खाने को अच्छा भोजन मिलता है और न तन ढकने को पूरा वस्त्र। कई लोग अपना जीवन निर्वाह करने के लिए अपनी सुन्दर लड़कियों को बेच देते है। जिन्हें बड़ी बड़ी होटलों (Hotels) और हाउस बोटों (House boats) के मालिक वेश्या बनकर अपनी चाँदी बनाते हैं। हमने एक हाउस बोट (Hous boat) पर लड़कियों की भीड़ को देखकर पूछा कि यह क्या है? वहां खड़े एक व्यक्ति ने बताया कि इन लड़कियों के बाप इन्हें बेच रहे हैं। इस तरह ये वेश्यावृत्ति करने के लिए विवश हो जाती हैं।

हमने देखा है कि शिमला, कश्मीर आदि पहाड़ी प्रदेशों में जहां धनी लोग घूमने-फिरने आते हैं, प्राय बड़े बड़े होटल व्यभिचार के अड्डे बने हैं। हर होटल पर खाना एवं चाय आदि वितरण करने के लिए लड़कों Waiters, के स्थान पर लड़कियाँ (Waitress) रखी जाती हैं। वे ग्राहक की पेट की ज्वाला के साथ साथ काम पिपासा को भी शान्त करती हैं। कई होटलों में तो Girl friends जिन्हें हम वेश्याएँ कह सकते हैं रखी जाती हैं।

कश्मीर की मुस्लिम नारियां बुरके ओढ़े बिना बाहर नहीं निकलती। वहां के मुसलमान इस बात को सहन नहीं करते कि उनकी औरत की तरफ कोई गलत नजर से देखे या उसका अपमान करें। परन्तु हम यह देखकर हैरान रह गई कि उन्होंने अपनी दुकानों को नारी के अर्ध नग्न चित्रों से सजा रखा था। हर जगह, हर दुकान पर एडवरटाइजमेन्ट के रूप में नारी को चित्रों में इतने भद्दे ढंग से चित्रित किया गया था कि उन्हें देखकर मानवता शर्मा जाती है। क्या यही बुरके की महत्ता है? क्या यही नारी का आदर सम्मान है? यह देख एवं सोच समझकर मेरा सिर चकरा रहा था। मैं सोच रही थी कि क्या यही भारत का स्वर्ग है? यदि ये गंदी एवं संकड़ी गलियें, ये व्यभिचार के अड्डे, लड़कियों का क्रय-विक्रय और भद्दे एवं अश्लील पोस्टरों के प्रदर्शन का केन्द्र श्रीनगर स्वर्ग है, तो फिर नरक क्या होगा? मैं तो इसे भारत का नरक ही कहूँगी।

प्रकृति का सुहावना दृश्य : : :

हम जिस दिन श्रीनगर पहुंचे, उसी दिन से वर्षा शुरू हो गई। अतः प्रवचन कोठी में ही होता रहा। नौ दिनों तक आकाश मेघों से आच्छन्न रहा। दसवें दिन कुछ बादल फट गए। मौसम अच्छा देखकर

हम बाहर चल पड़े। अभी नेहरु पार्क तक पहुँच पाये थे कि पुनः आकाश मेघों से भर गया। थोड़ी देर में बादल गरजने लगे, बिजलियाँ चमकने लगी और हवा भी तेज हो गई। हमने भी अपनी रफ्तार को थोड़ा तेज कर दिया और शंकराचार्य की पहाड़ी के नीचे झेलम के पुल को पार करके उस झील के किनारे पहुँच गए। यह झील चारों ओर से पर्वतों से घिरी हुई है। पांच मील लम्बी और दो मील चौड़ी है। इस झील में लोग शाम को सैर करने आते हैं। रंग-बिरंगी रोशनियों से सजे हुए House boats में सवार होकर सैर का आनन्द लेते हैं। ऐसे House boats में निवास एवं खान-पान की भी व्यवस्था है। इनमें सब तरह के कार्य होते रहते हैं। प्रायः पूंजीपति लोग ही इनका उपयोग करते हैं।

इस झील में चलती-फिरती खेती भी होती है। किसान तख्तों के ऊपर मिट्टी डालकर उनमें बीज बो देते हैं और रस्से के द्वारा उन्हें शिकारे से बांध देते हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे अपने खेतों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भी ले जा सकते हैं। कभी कभी खेतों की चोरी भी हो जाती है। कोई व्यक्ति उसका रस्सा काटकर उसे अपने शिकारे से बांध लेता है।

यहा का दृश्य देखकर हम मुगल बागों की ओर चल पड़े। यहां के मुगल बाग दर्शनीय हैं। हम इनमें सर्व श्रेष्ठ निशात बाग में पहुंचे। यह बाग १७८५ फीट लम्बा और ११०७ फीट चौड़ा है और सात मंजिल ऊंचा है। इसमें अनेक तरह के पेड़-पौधे और फूल खिले हुए हैं। जगह जगह पक्षी चह-चहा रहे हैं। चारों तरफ हरा-भरा वातावरण है। फूलों की भीनी मधुर गंध दिमाग को तरोताजा बना रही थी।

यहां से गुप्त गंगा आए। यहा एक पंडित के घर पर ठहरे। तीन

दिन तक पानी बरसता रहा। चौथे दिन बादल खुलने पर शालामार बाग की ओर चल दिए। यहां अनेक लोग एकत्रित हो गए। कुछ अंग्रेज भी आ गए। उन्हें जैन धर्म का परिचय दिया। वे काफी प्रभावित हुए और हमारे फोटो खींचकर ले गए। शालामार बाग भी निशात बाग की तरह बहुत लम्बा चौड़ा है और कई मंजिल ऊंचा है। यहां के बागों में सेंव, बगुफोसा, बादाम आदि के पेड़ों की संख्या बहुत है। यहां का बगुफोसा बहुत प्रसिद्ध है।

यहां से ४ मील पर हारवन उद्यान है। यह स्थान बहुत ही रमणीय है। यहां का वातावरण बहुत शान्त है। यहां लोगों का आवागमन भी बहुत कम है। पहाड़ों का दृश्य भी बड़ा सुहावना है। यह स्थान मेरे मन को बहुत पसन्द आया। यहाँ के शान्त वातावरण ने मेरे मन को बहुत आकर्षित किया। इस उद्यान को देखकर पास के पर्वत को जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ना शुरु कर दिया। अनेक सीढ़ियां चढ़ने पर हम एक झील पर पहुंचे। इस झील से ही पूरे श्रीनगर में पानी सप्लाई किया जाता है। यहां से चश्मेशाही पहुँचे। यहां का दृश्य भी देखने योग्य है। कुछ देर तक यहां ठहरे। आज श्रीनगर से चले तीन दिन हो चुके थे। अतः घूम फिर कर चौथे दिन शाम को पुनः श्रीनगर पहुंच गए।

सेना का दायित्व : : :

हम श्रीनगर से हरि पर्वत देखने गए। यहां Military का कैम्प भी था। मैंने वहां भाषण दिया। अनेक सैनिकों ने प्रवचन सुना। वस्तुत सैनिक भी देश के महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं। यह मैं पहले भी बता चुकी कि वे ध्वंस के ही नहीं, निर्माण के भी प्रतीक हैं। जीवन में अहिंसा का महत्वपूर्ण स्थान है। परन्तु, हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि जीवन में व्यक्ति, समाज, परिवार एवं देश की रक्षा का महत्त्व कम

नहीं है। हर व्यक्ति पर अपना अपना दायित्व होता है। यह नितान्त सत्य है कि हमें जान-बूझकर किसी निर्दोष व्यक्ति का खून नहीं करना चाहिए, किसी के घर को नहीं उजाड़ना चाहिए, किसी के देश को गुलाम नहीं बनाना चाहिए। भारत के प्रधान मन्त्री पं० नेहरु की यह घोषणा कि हम किसी देश पर आक्रमण न करेंगे, पर यदि कोई दूसरा देश हमारे राष्ट्र पर बुरी दृष्टि रखेगा, हम पर हमला करेगा तो हम अपनी सुरक्षा अवश्य करेंगे। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि हमें दूसरों की जमीन नहीं चाहिए उनका धन नहीं चाहिए, परन्तु हम अपनी जमीन एवं अपने देश पर भी दूसरों का अधिकार नहीं करने देंगे और सैनिकों का महत्व भी इसी में है कि वे अन्याय का साथ न दें, किसी निर्दोष राष्ट्र पर हमला न बोल दें और निर्दोष व्यक्तियों के खून की नदी न बहाएं। उनका दायित्व किसी को मारना नहीं, अपने देश की रक्षा करना है और यह कार्य केवल दुश्मन से लड़कर ही नहीं बल्कि शान्ति के समय भी किया जा सकता है। शान्ति के समय अपने आस पास के लोगों के कार्य में मदद देकर, टूटे हुए पत्थरों एवं सड़कों में सुधार करके या अन्य तरह से जनता की सेवा करके वे देश के भाइयों की रक्षा का दायित्व निभा सकते हैं। हमने अपनी कश्मीर यात्रा में अपनी आंखों से देखा है कि बाढ़ आदि से टूटी हुई सड़क एवं पुलों को बनाने में वे कितनी तन्मयता से काम करते हैं। हां तो, सैनिक देश एवं जनता की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं और जनता एवं देश की सेवा करना यह उनका दायित्व है।

दुकानदारों की लूट : : :

यहीं एक सज्जन से कश्मीर के सम्बन्ध में बातें होने लगी। कश्मीर की स्थिति का परिचय देते हुए उसने बताया कि यहां के व्यापारी पूरे चार सौ बीस हैं। यहां किसी भी वस्तु की निश्चित कीमत नहीं है। हर वस्तु की कीमत व्यक्ति को देखकर बताई जाती है। दुकानदार हर

तरह से ग्राहक की जेब खाली करवाने का प्रयत्न करता है। मैं अपने एक मित्र के साथ उसके हाउस बोट में गया। वहां उसकी दुकान देखी उसमें हाथ की दस्तकारी का सामान था। उसी समय दो अंग्रेज भी वहां आ पहुंचे। उन्होंने काष्ठ का एक डिब्बा (Box) पसन्द किया। कला की दृष्टि से वह बहुत ही सुन्दर लग रहा था। उस पर बनाया गया हर चित्र सजीव प्रतीत हो रहा था। अंग्रेज ग्राहकों को वह जँच गया। उन्होंने उसकी कीमत पूछी तो व्यापारी ने उसका मूल्य १५००) रु० बताया। मैं सुनकर हैरान रह गया। जहाँ तक मेरा ख्याल है वह डिब्बा ७-८ रुपये से अधिक कीमत का नहीं होगा। परन्तु अंग्रेज मोल भाव नहीं करते। यदि उन्हें कोई भी वस्तु पसन्द आ गई तो उसे वे हर कीमत पर खरीद लेंगे। उनके सामने पैसे का विशेष महत्व नहीं रहता। उन्होंने अपनी पेन्ट की जेब में हाथ डाला और पर्स (Purse-money bag) में से एक एक हजार रुपये के दो नोट निकालकर दुकानदार के हाथ में दे दिए। उसने कहा कि आप थोड़ी देर बैठें, मैं अभी हजार का नोट तुड़वा कर आप को ५००) रु० दे देता हूँ। वह गया तो ऐसा गया कि विचारे २ घण्टे तक प्रतीक्षा करते रहे, परन्तु वह लौटा नहीं। आखिर परेशान होकर ५००) रुपये का मोह छोड़कर वहां से चल दिए। इस तरह यहां के दुकानदार यहां की परिस्थिति से अनभिज्ञ एवं पैसे वाले ग्राहक को खूब लूटते हैं।

इस तरह एक तरफ पूंजीपतियों का जीवन है, जो छल-कपट, लूट-खसौट करके पैसा इकट्ठा करते हैं और भोग-विलास में लुटा देते हैं। और दूसरी तरफ वे व्यक्ति हैं जिन्हें पेट भर रोटी भी नसीब नहीं होती। हमने कई व्यक्तियों को बर्फ खाकर गुजारा करते भी देखा है। कुछ लोग उबले हुए लाल चावल और नमक की डली खाकर ही सन्तोष करते हैं। इसे नारकीय जीवन न कहूं तो और क्या कहूँ?

खीर भवानी के मन्दिर में : : :

हरि पर्वत से विचारनाग गए और वहां का दृश्य देखकर खीर भवानी आ पहुँचे। उस दिन आकाश में काली-काली सघन घटाएँ छाई हुई थीं। हमने रास्ते में चार जगह विश्राम किया। जब विश्राम करने बैठते कि वर्षा शुरु हो जाती और उठते ही बन्द हो जाती। जब हम जम्मू से चले थे तब से प्रायः आकाश बादलों से भरा रहा है और जहां कहीं दिन को, रात को या कुछ देर के लिए भी ठहरे हैं, वहां उस समय वर्षा अवश्य हुई है। परन्तु वर्षा की बूंदों ने कभी हमारा रास्ता रोका नहीं, उन्होंने मार्ग में कभी भी हमें परेशान नहीं किया। इस रास्ते में भी वर्षा ने हमें तंग नहीं किया।

खीर भवानी वैष्णवों का एक पवित्र तीर्थ है। इस तरफ मैंने किसी देवी का ऐसा मन्दिर देखा-सुना नहीं कि जहां पर बलिदान न होता हो। केवल इसी मन्दिर में मांस-शराब नहीं चढ़ता। वहां के पुजारी ने बताया कि यहां मांस आदि का चढ़ाना तो दूर रहा, इन अशुद्ध पदार्थों को खाकर या साथ में लेकर भी कोई मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकता। उस दिन भी ४४ व्यक्ति स्पेशल बस (Special bus) लेकर देवी दर्शन को आए थे। वे मन्दिर के चारों ओर चक्कर लगाते रहे, परन्तु अन्दर एक वृद्धा ही जा सकी। अन्य व्यक्ति सामिष भोजन खाकर आए थे। अतः उन्हें मन्दिर का द्वार ही नहीं दिखाई दिया।

देवी या राक्षसी : : :

यहां से वापिस लौटते समय सारिका देवी का मन्दिर देखा। यहां भक्त लोग अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए देवी के सामने मांस मदिरा की भेंट चढ़ाते हैं। यहां तक कि शिव रात्रि के दिन धतूरे

के पत्तों से खुश होने वाले महादेव (शिव) के मन्दिर में मांस-मछलियों के ढेर लग जाते हैं। इस तरह धर्म और भगवान् के नाम पर इतनी हिंसा होती है कि सुनते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्या यही है भगवान् का, देव का स्वरूप? यदि इन्हें देव कहें तो दानव किसे कहेंगे? मेरी दृष्टि में मांस-मदिरा का भक्ष्य मांगने वाली देवी नहीं, राक्षसी ही हो सकती है।

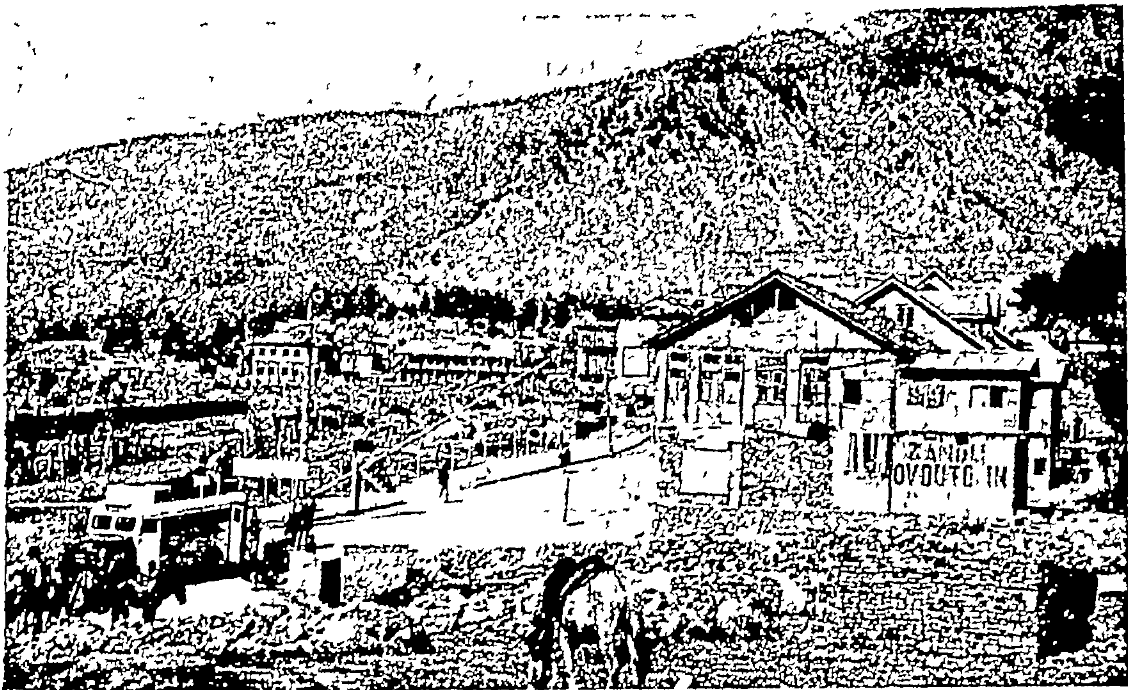
गुलमर्ग के पथ पर : : :

दोनों देवियों के दो रूपों को देखकर पुनः श्रीनगर लौट आई। दूसरे दिन गुलमर्ग की ओर कदम बढ़ा दिए। रास्ते में मगाम और लवापुरा में ठहरी। इन दोनों गांवों में अधिकतर मुसलमानों की ही बस्ती है। परन्तु यहां के लोगों में साम्प्रदायिक द्वेष कम है। दोनों जगह लोगों ने प्रेम एवं भक्ति पूर्वक प्रवचन सुना। कई लोगों ने मांस मदिरा के त्याग भी किए।

अंग्रेजों का क्रीड़ास्थल गुलमर्ग : : :

यहीं से गुलमर्ग की कठिन चढ़ाई शुरु हो जाती है। यह स्थान ८७०० फीट ऊंचा है। इसकी चोटियें सदा बर्फ से आच्छादित रहती हैं। गुलमर्ग का रास्ता पुष्पों के छोटे छोटे पौधों से भरा-पूरा है। सड़क के दोनों ओर वृक्ष तो कम हैं, परन्तु फूलों के पौधे बहुत हैं। ये खिले हुए फूल इतने सुहावने लगते हैं कि निर्निमेष पलकों से देखते हुए भी आँखें नहीं थकती।

यहाँ की सड़कें साफ सुथरी हैं। कहीं भी गंदगी दिखाई नहीं देती। यह अंग्रेजों की क्रीड़ाभूमि मानी जाती है। यहां की होटलों में आज भी जोड़ों का नाच (Dance) होता रहता है। परन्तु अब वह शान नहीं रही है। उस समय होटल के बैरो (Waiters) की भी



पहल गाँव (कश्मीर) जहाँ प्रकृति ने अपना सौन्दर्य बिखेर रखा है।

चाँदी थी। होटल से जाते समय हर अंग्रेज होटल के बेरे (Waiter) को बख्शीश (Tip) दिया करते थे। हिन्दुस्तानियों में Tip देने की परम्परा कम है। इससे होटलों की रौनक पहले जैसी नहीं रही है, ऐसा यहां के लोग बताते थे। अंग्रेजों के समय का विलासी जीवन तो अब यहां नहीं है। परन्तु फिर भी यहां विलासिता की कमी नहीं है। आज भी होटलों में व्यभिचार एवं शराब का दौर चलता है। वस्तुतः देखा जाय तो यहां की होटलें एक तरह से शराब एवं व्यभिचार के अड्डे ही हैं।

गुलमर्ग काफी ऊंचाई पर बसा हुआ है। हम यहीं डाक बंगले में ठहरे थे। डाक बंगले से कश्मीर की पूरी घाटी की सुषमा के दर्शन होते थे। यहां से हरमुख पर्वत की चोटी भी दिखाई देती थी। २६६६६ फीट ऊंचा पर्वत है। यह हिमाच्छादित पर्वत बड़ा ही रमणीय लगता है। लहर २ कर लहराती हुई बुला झील भी यहां से साफ २ दिखाई देती है। उसमें उठती हुई तरंगे यहाँ से इतनी सुहावनी लगती हैं कि उसका वर्णन करने को उचित शब्द ही नहीं मिलते। उसके ऊपर गिर रही सूर्य की रजत रश्मिया उसकी शोभा में चार चांद लगा देती है। गुलमार्ग को देखकर वापिस श्रीनगर लौटने में हमें आठ दिन लगे। आठ दिनों में बादल तो कई बार आए, परन्तु रास्ते मे वर्षा कभी नहीं हुई। परन्तु, श्रीनगर आकर दीवान साहब की कोठी में प्रवेश करते ही वर्षा शुरु हो गई।

श्रीनगर के विचारकों के बीच :: :: ::

श्रीनगर में एक अन्ध विद्यालय है इसमें अन्धों को पढ़ना, सीखना गाना-बजाना एवं शिल्प दस्तकारी Handicraft आदि सिखाया जाता है। मध्य प्रदेश के निवासी लाला कान्तिलालजी इस विद्यालय के एक अध्यापक है और वे स्वय प्रज्ञाचक्षु हैं। जब उन्हें हमारे आगमन का पता

लगा तो वे स्वयं मेरे पास आए। उनके आग्रह पर अन्ध विद्यालय देख और उनके कार्यक्रम को भी देखा।

वहां के प्रसिद्ध निरंजनी सन्त नित्यानन्दजी से भी मिले। उनसे बहुत देर तक धर्म चर्चा हुई। आप श्रीनगर के माने हुए प्रसिद्ध सन्त हैं हमारी विचार चर्चा काफी अच्छी रही। और भी अनेक व्यक्तियों से मिलना हुआ और रामवन, रयाणावारी आर्य समाज मंदिर, सनातन धर्म स्कूल एवं अन्य कई स्कूलों में प्रवचन दिया। यद्यपि यहां प्रवचन देने तीन चार मील जाना पड़ता था परन्तु, लोगों का प्रेम देखकर हमारे मन में भी उत्साह उमड़ आता था। हमें यहां जैनों का ही नहीं जैनेतर-लोगों का भी अच्छा सहयोग मिला। हकीम शम्भूनाथजी स्वामीजी आदि कई लोग वर्षावास करने का आग्रह कर रहे थे। हमारा मन भी हो रहा था। परन्तु प्रकृति हमारे साथ नहीं थी। क्योंकि कार्तिक में बर्फ गिरने लगती है। इससे आवागमन के रास्ते बन्द हो जाते हैं इसलिये श्रीनगर वर्षावास के लोभ को संवरण करना पड़ा और परिणाम स्वरूप हमने यहां से पुनः जम्मू लौटने का प्रोग्राम बनाना शुरू कर दिया।

यहां पर लाल किस्तूरीलालजी, प्यारेलालजी एवं दर्शनलालजी ने बहुत सेवा की। हम जहां-तहां घूमने गए वहां वे हमेशा साथ रहे और वापिस लौटते समय अच्छावल तक हमें छोड़ने आए। इनकी सेवा भक्ति एवं श्रीनगर की श्रद्धालु जनता का स्नेह सदा सर्वदा याद रहेगा।

श्रीनगर से प्रस्थान : : :

श्रीनगर की गलियों की गंदगी एवं प्रकृति की सुषमा को निहार कर वहां के लोगों से विदा ली। विहार के दिन बहुत लोग हमें छोड़ने आए। जैन अजैन सबकी आंखों में आंसू थे। हमने सबको सबके साथ प्रेम स्नेह का व्यवहार करते हुए ईमानदारी से अपने दायित्व को निभाने की

सलाह दी और एक विचारक के शब्दों में आशीर्वाद देते हुए विदा ली।
''Work like on ant and live like a saint,,
अर्थात चींटी की तरह लगन से काम करो और सन्त की तरह जीओ इसका सही अभिप्राय यह है कि निष्काम भाव से जन सेवा में लगे रहो। काम करने से जी मत चुराओ और पदार्थों में आसक्त मत बनो।

महाराज जनक के महल : : :

श्रीनगर से चलकर असमुकाम गांव में एक वृक्ष की सघन छाया में डेरे डाल दिए। यहां से एक मील पर राजा जनक के महल थे। उन्हें देखने को एक मील की चढाई चढ़ी। महल काफी पुराने हैं। इन्हें देखते ही प्राचीन युग की शिल्प कला का सजीव चित्र आंखों के सामने तैरने लगता है। परन्तु, कह सकना कठिन है कि यह महल जनक युग के ही हैं। यहां एक बहुत लम्बी गुफा है इसमें घोर अंधेरा छाया रहता है। स्थान २ पर मुसलमान लोग दीपक लिए खड़े रहते हैं और यात्रियों को पैसे देने के लिये तंग करते रहते हैं। दीपकों का प्रकाश होने पर भी कई जगह अंधेरा छाया रहता है। इसे देखने में कई बार गुफा की दीवालों से सिर भी टकरा जाता है ऐसा सुना। यह गुफा भी बहुत प्राचीन है और ऐसा लगता है कि इसे योगियों एवं सन्तों की साधना के लिये बनाया गया था।

पहल गांव में : : :

यहां से पहल गांव की ओर कदम बढ़ा दिए। इस रास्ते में कई व्यक्तियों का साथ हो गया। कुछ भाई और बहनें दिल्ली से और कुछ खोचन (राजस्थान) से कश्मीर की सैर करने आए हुए थे और कुछ श्रीनगर के भाई साथ थे। कुल मिलाकर २५ व्यक्तियों का साथ हो गया था। और इस नयनाभिराम लिद्दर घाटी के मध्य मे स्थित पहल गाव पहुँच

गए। यह स्थान समुद्र की सतह से ७००० फीट की ऊंचाई पर है। यहां से ६ मील की दूरी पर चंदनबाडी है। अब चंदनवाड़ी तक जाने के लिये कच्ची सड़क बन गई है। परन्तु अभी तक लोग पैदल या घोड़ों पर ही यात्रा करते हैं। पहल गांव बड़ा सुन्दर एवं रम्य स्थान है। यहां पानी, वृक्ष एवं पर्वतों के सुन्दरतम दृश्य हैं। चारों तरफ प्रकृति का अनन्त सौंदर्य बिखरा पड़ा है।

चन्दनवाड़ी :

तांगा पहल गांव ही ठहर गया था। हम तीन सतियाँ और कुछ बहनें चन्दनवाड़ी को चल पड़ीं। रास्ते में कदम २ पर भिखमंगे खड़े थे और हर यात्री से पैसे की मांग करते थे। कई बार वे यात्री के वस्त्र खींचने लगते थे। कश्मीर में हमने यह आश्चर्यजनक बात देखी कि हिंदू मुसलमानों की दुकानों से चीजें खरीद लेते हैं। परन्तु मुसलमान हिंदुओं की चीज कम लेते हैं। यदि उन्हें कोई हिंदू खाने-पीने की वस्तु दे तो वे कभी नहीं लेते। भले ही वे भूखे मर जाएँ, परन्तु हिंदू के घर की रोटी नहीं खाएँगे। इस तरह सारे रास्ते भिखमगों ने साथियों को तंग कर दिया। हम तो पहले ही अकिंचन थे।

पहल गांव से चन्दनवाड़ी तक का सारा रास्ता कभी ऊँचा और कभी नीचा एक नदी की संकरी घाटी में से होकर जाता है। कच्ची सड़क है, कहीं-कहीं पथरीली पगडंडियाँ हैं। सड़क के दोनों किनारे देवदारु के और अन्य किस्म के ऊँचे ऊँचे हरे-भरे वृक्ष पहाड़ों की शोभा एवं सौन्दर्य में अभिवृद्धि कर रहे हैं। रास्ते में कहीं कहीं छोटा सा गाव आ जाता है। कहीं कहीं छोटे छोटे खेत दिखाई देते हैं, जिनमे मकई के अंकुर निकल रहे थे। रास्ता काफी कठिन है। परन्तु प्रकृति के सौन्दर्य को निहारता हुआ यात्री करीब ३ घण्टे में आसानी से समुद्र से ६००० फीट ऊँची चन्दनवाड़ी पहुँच जाता है। हम भी सरलता से वहां पहुँच

हो गए। यहां विशेष चहल-पहल नहीं है। एक दो चाय की छोटी दुकानें हैं और एक दो होटल हैं। चारों तरफ बर्फ ही बर्फ दृष्टिगोचर होती है। एक ओर शेषनाग का नाला चट्टानों से टकराता हुआ तीव्र गति से बहता है और दूसरी ओर खूनी नाला बड़ी ऊँचाई से घने जंगल में से होकर शेषनाग के नाले से मिलने के लिए उछलता-कूदता दौड़ता है। कुछ लोगों का कहना है कि एक बार अचानक बाद आ जाने से कई सौ यात्री इस नाले में वह गए थे। तभी से इसका नाम खूनी नाला पड़ा है। परन्तु चाय के दुकानदारों का कहना है कि इस नाले का पानी स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभप्रद है।

हम तीन साध्वियाँ व सेवावन्तीजी कलावतीजी और रामनिवासजी साथ रहे। शेष सब बहिनें वापिस पहलगांव चली गई। हमारे लिए शाम के समय १० मील का रास्ता तय करना कठिन था। अतः वहीं ठहर गए। शाम को एक सरदारजी आ गए। उनसे कुछ देर तक बातें हुई। उन्होंने बातों ही बातों में कहा कि महाराज आप अमरनाथ भी देख आओ। मन तो मेरा भी कर रहा था। परन्तु रास्ता काफी कठिन था। वहां रात रहने को कोई स्थान नहीं था। प्रातः वहां जाकर शाम को वापिस लौटना होता था। सर्दी बहुत पड़ रही थी। उस रात हम वहा भी अच्छी तरह नहीं सो सकी। सर्दी के कारण सब का शरीर सूना सूना हो रहा था। उठते-बैठते सोते-जागते बड़ी कठिनाई से रात बिताई। इस स्थिति में हमें अमरनाथ जाने का विचार स्थगित करना पड़ा। परन्तु मैंने स्वप्न मे अमरनाथ की यात्रा अवश्य कर ली। यहां से ७ मील पर वायु जल है। यह बहुत ही ठंडी-हवादार जगह है। वहां से ११ मील की दूरी पर अमरनाथ की गुफा है। रास्ते में १४००० फुट की ऊँचाई पर महागुनस का पहाड़ है। यहां से नीचे उतरना होता है। १०,५०० फुट की ऊँचाई पर अमरनाथ की गुफा है। यह गुफा बहुत सुन्दर एवं भव्य लगती है। बिल्कुल निर्जन प्रदेश में इतनी बड़ी गुफा का होना

प्रकृति का चमत्कार ही कहा जाएगा। गुफा में करीब दो हजार व्यक्ति बैठ सकते हैं। कहते है गुफा में कभी कभी बर्फ का शिव-लिंग भी बनता है। परन्तु इसका कोई निश्चित् समय नहीं है। परन्तु गुफा का अस्तित्व सदा बना रहता है।

पुनः पहल गाँव में : : :

स्वप्न में अमरनाथ की गुफा का दिव्य-भव्य दृश्य देखा। आवश्यकादि से निवृत्त हुए तो करीब साढ़े सात बज गए। परन्तु अभी भी इतनी सर्दी पड़ रही थी कि बिस्तर छोड़ कर उठने का मन नहीं कर रहा था। अतः कुछ धूप चढ़ने पर उठे और पहल गांव की ओर चल पड़े। दिन में एक बजे के करीब हम पुनः पहल गाव आ गए।

पहल गांव में हाथो जाति (मुसलमानों की एक जाति) के लोग रहते हें। ये यहां बारह महीने रहते हैं। यहां सिर्फ ३-४ महीने मौसिम साफ रहता है। इन दिनों में कुछ होटल वाले एवं कुछ बाहर की दुकानें आ जाती है। शेष ८-६ महीने सारा पहाड़ बर्फ से ढका रहता है। अतः ये लोग तीन महीने काम करके पैसा इकट्ठा करते हैं और ६ महीने तक घर में बैठकर खाते हैं। इनकी औरतें केवल फिरन पहनती हैं। यह योगियों के चोले की तरह का वस्त्र होता है। और हर कश्मीरी अपने पास एक अंगीठी (कांगड़ी) रखता है। इससे इनका कलेजा जल जाता है। ये लोग ६ महीने में एक बार स्नान करते हैं। उन्होंने बताया कि यदि वे इससे पहले स्नान कर लें तो बीमार हो जाते हैं। इस तरह उनका शरीर गन्दा लगता है और देखने में अभद्र से प्रतीत होते हैं। और प्रायः ये परस्पर लड़ते झगड़ते रहते हैं। इनके लड़ने का भी एक विचित्र रिवाज है। जब लड़ना होता है तो ये लोग टोकरी को सीधी करके रख देते हैं। जब तक टोकरी सीधी रहती है, तब तक इनका संघर्ष चलता रहता है। और टोकरी को औंधा कर देना संघर्ष समाप्त करने

का प्रतीक माना जाता है। टोकरी को उल्टा कर देने के बाद ये नहीं लड़ते। उस समय लडाई समाप्त कर दी जाती है। अनेक प्राकृतिक दृश्यों एवं विचित्र रीति-रिवाजों का अवलोकन करते हुए हम सब कश्मीर से लौट रहे थे।

पाण्डव गुफा : : :

पहल गांव से मटन आ रही थी। रास्ते में एक पाण्डवों की गुफा आती है। यह गुफा बहुत लम्बी है। कहते हैं कि यह गुफा चीन तक जाती है। आजकल ५०० फुट तक लोग आ-जा सकते हैं। इसके आगे किसी का जाने का साहस नहीं होता। क्योंकि आगे काफी घना अंधेरा है। अत यह नहीं कहा जा सकता कि यह गुफा कहां तक जाती है। परन्तु यह गुफा काफी लम्बी है और प्राचीन युग की कला का एक आदर्श नमूना है। हम भी इसे देखने गए। परन्तु हम ५०० फुट भी अन्दर नहीं जा सके। इसमें एक पाण्डवों का मन्दिर है। यह मन्दिर काफी प्राचीन प्रतीत होता है। गुफा में इधर-उधर कुछ मनुष्यों के शरीर की हड्डियां भी बिखरी पड़ी थीं। ऐसा लगता है कि किसी तपस्वी के शरीर की होंगी।

गुफा देखकर आगे बढ़ गए। यह रात मटन में बिताई और प्रात अच्छावल पहुँचे। यहां तक श्रीनगर के भाई भी साथ थे। यहां एक प्रवचन दिया। लोगों पर अच्छा प्रभाव रहा। श्री नगर के भाई यहां से वापिस लौट गए। हमने भी दूसरे दिन गांव के लोगों से विदा ली और आगे कदम बढ़ाए।

प्राणसंकट से बचाव : : :

यहां से कुकड़नाग होकर वेरीनाग जा रहे थे। काफी गहरा उतार था। हम सब पहाड़ से उतर रहे थे। रास्ता फिसलने वाला था। यदि कुछ

सावधानी न रखो तो खड्डे में जा गिरते। मेरे साथ कलाजी की बड़ी लड़की शशिप्रभा थी। उसकी उम्र १२ वर्ष की थी। वह हाथ पकड़े चल रही थी। उसकी चाल में कुछ बाल-सुलभ तेजी थी। वह मेरा हाथ पकड़े दौड़ रही थी, मै उसका साथ दे नहीं पा रही थी। एक तो अवस्था का अन्तर और दूसरे उसका हल्का-फुल्का शरीर और मेरी स्थूल देह। तीसरे में रास्ता फिसलने वाला। मैने उसे दौड़ने से इन्कार किया। परन्तु बच्चों में स्वाभाविक चंचलता होती है। वह मेरा हाथ छोड़कर भागने लगी। रास्ता उतार का था। पैर जमीन पर ठीक तरह टिक नहीं रहे थे। एक,एक उसका पैर फिसल गया और वह एक खड्डे में औंधे मुंह जा गिरी। हमारे होश-हवास गुम हो गए। सब के कदम वहीं रुक गए। हमारे साथ पृथ्वीजी थे। वे तुरन्त वहां पहुंचे और उसे उठा लाए।

पृथ्वीजी बड़े साहसी एवं फुर्तीले व्यक्ति है। जब वे उसे लेकर आए तो हमने देखा कि उसके विशेष चोट नहीं आई है। परन्तु भय एवं ठण्ड के कारण उसकी आंखें बन्द थीं। पृथ्वीजी के एक कन्धे पर उनका अपना बिस्तर था और दूसरे कन्धे पर इसे रखकर चल पड़े। रास्ते मे एक काफी गहरा एवं लम्बा नाला आ गया। उसके बीच मे कुछ पत्थर पड़े थे। वहाँ हमें तागे वाला भी मिल गया। वह दो बच्चों, दो बहिनों और सामान को लेकर २० मील का चक्कर खाकर सड़क के रास्ते बेरीनाग जा पहुंचा। हमने इस नाले को पार करके पगडंडी के रास्ते जाने का सोचा। कुछ बहिनों को पृथ्वीजी ने पार कर दिया। हमने पुल के लिए करीब दो मील का चक्कर काटा, परन्तु कहीं भी पुल नहीं मिला। आखिर एक दूसरे का सहारा लेकर बड़ी कठिनाई से नाले को पार किया। हमारे साथ की बहिनें एवं पृथ्वीजी हमारे बेरीनाग पहुंचने से पहले ही पहुँच चुके थे। इस तरह तीन रास्तों से होकर हमारा दल बेरीनाग में आ पहुँचा।



बर्फ का पुल (चन्दन वाड़ी) नीचे दरियाव बह रहा है।

फूलों के गुलदस्ते और रुपयों की भेंट : : :

शाम तक शशिप्रभा भी स्वस्थ हो गई। सब के मन प्रसन्नता से विहँस उठे। रात को भाषण दिया। वहां के वहिन भाईयों ने हमारी बहुत सेवा की। कुछ वहिनें तो प्रेम स्नेह एवं श्रद्धावश फूलों के गुलदस्ते भेंट देने लगी। कुछ वहिनों ने हमारे सामने रुपए चढ़ाने शुरु कर दिए। कुछ ने हमारे सामने अनेक तरह के खाद्य पदार्थों के ढेर लगा दिए। कुछ वहिनें दूध चाय ले आईं। कितनी श्रद्धा-भक्ति थी उन लोगों में। उनकी श्रद्धा देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मैने बड़े स्नेह के साथ उन्हें जैन साधु की वृत्ति एवं उनके नियम समझाए। साधु जीवन के त्याग को देख समझ कर उनकी श्रद्धा भक्ति बढ़ गई। उन्होंने अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी और यथाशक्य त्याग नियम स्वीकार किए।

च्युनेनी का बीहड़ पथ : : :

अब हमारी रफ्तार कुछ तेज हो गई। क्योंकि वर्षावास जम्मू करना था और उसमें थोड़े ही दिन शेष रहे थे। अतः हम रास्ते में विशेष कहीं नहीं ठहरे। केवल कुद में दो दिन ठहरे, क्योंकि जाते समय वचन दे गये थे। वहां से च्युनेनी की सड़क नाप रहे थे। कुछ दूर चलकर सड़क छोड़ दी और पगडंडी के रास्ते आगे कदम उठाए। मैने कुछ बहिनों से कहा कि यात्रा में अधिक लापरवाह नहीं होना चाहिए। अपने सामान की देखरेख रखनी चाहिए। एक दो बहिनें तांगे के साथ चली जाओ। परन्तु, सब बहिनें मेरे साथ चलना चाहती थी। किसी ने नहीं माना। रास्ता काफी खतरनाक था। सारा रास्ता बीहड़ वन में होकर गुजरता था। पहाड़ की उतराई थी। पगडंडी के दोनों तरफ चीड़ के वृक्ष खड़े थे। सारा रास्ता चीड़ के सूखे पत्तों से ढंका था। कहीं कहीं तो इतने पत्ते गिरे हुए थे कि रास्ता ही दिखाई नहीं पड़ता था और फिसलन भरा पथ था। सावधानी से चलने पर भी पैर ठीक तरह जम

नहीं पाते थे। कभी कोई गिरती तो कभी कोई। मेरे घुटनों में दर्द था और ४-५ बार गिर पड़ने से काफी चोटें आगई थीं। किसी के सिर में लगी तो किसी के हाथ-पैर में। फिर भी हम प्रसन्न थे। हार मानना तो कभी सीखा ही नहीं था। हर परिस्थिति मे हसते रहने का ही पाठ पढा था। इस पथ में भी वही दृढ़ता होठों पर मुस्करा रही थी और मन मे तरंगें उठ रही थी:—

सुख-दुख एक समान मनवा
ज्ञान तराजू में रख तोलो, मिटे सभी अज्ञान ।।मनवा।।
इक आवे दूजा पुनि जावे, सूरज-चन्द्र समान।
भाग्य गगन के हैं दो तारे, अजब निराली शान ।।
जो जग में दुःख ही नहीं होगा, सुख की क्या पहचान ?
बिछुड़-मिलन का है यह जोड़ा, धूप-छाट समान ।।
पतझड़ कभी हरियाली देखो. ऋतु की गति महान।
खिला रहा है खेल खिलाड़ी. जीव करे अभिमान ।।
दुःख के दर्द को भूल के मूरख ! सुख में हो गलतान।
उलट-फेर की चपत लगे तब, भूल जाए सब भान ।।
सुख-दुख में समभाव धरे जो, विरले हैं तू जान।
धन्य 'पागल' उस धीर-वीर को, दुःख में गाए गान ।।

सामने आने वाली हर भली-बुरी परिस्थिति एवं कठिनाई का आनन्द उठाते हुए हम च्युनेन पहुँच ही गए। किन्तु मकान में न जाकर सडक के किनारे एक पेड़ की छाया मे बैठ गए। हमारे पहुंचने के दो घंटे बाद तागा भी आ पहुँचा। तांगे वाले को तेज बुखार हो रहा था और उसे निमोनिया भी हो गया। सबने मिलकर तागे से सामान उतारा। परन्तु, एक सूट केस नहीं मिला। सबके रुपएपैसे उसी में थे। करीब एक हजार का सामान था। परन्तु, अभी काफी रास्ता तय करना था और

रुपए बिना गृहस्थ को कितनी कठिनाई होती है, यह किसी से छिपा नहीं है। उस समय सब बहिनों के मुख मुरझा गए और तांगे वाले की तो बहुत बुरी हालत हो रही थी। एक तो वह बीमार और दूसरे उसे काफी बुरा भला कहा गया। मैंने उन्हें धर्य बंधाया। उन्हें कहा-तांगे वाले पर शक मत करो। धैर्य एवं शान्ति से सामान की खोज करने से ही मिलेगा। उस सामान को ढूंढ़ने के लिए कुछ बहिनें कुद, कुछ ऊधमपुर और कुछ जम्मू गईं। सिर्फ दो बहिनें और तीन भाई हमारे साथ रहे।

सूटकेस सहीसलामत मिल गया : : :

वहां से चलकर हम पुनः ऊधमपुर आए। इन ५ दिनों में तागे वाले की हालत बहुत बिगड़ गई। मुझे उसकी दयनीय स्थिति पर दया आ रही थी। च्युनेन से ऊधमपुर तक उसने पूरा भोजन भी नहीं किया था। यहां से उसे भी जम्मू भेज दिया।

जब जम्मू के भाइयों को इस घटना का पता लगा तो दो प्रमुख व्यक्ति सारमौली आए। वे कहने लगे-महाराज इस घटना की जम्मू में काफी चर्चा है। इस तरह कश्मीर यात्रा सफल नहीं रही। हम तो वहां मुँह दिखाने लायक नहीं रहेंगे। मैंने कहा—घबराइए नहीं! सब कुछ ठीक ही होगा. कश्मीर जाते समय रास्ते में एक बहिन का बिस्तर खो गया था, उसमें कई कीमती कपड़े थे। परन्तु. वह मिल गया। इस तरह यह भी मिल जाएगा। आप धर्म पर विश्वास रखें।

हम ऊधमपुर से चलकर गड़ी पहुँचे ; वहां चांदा निवासी रेखचंदजी पारख का पूरा परिवार आ पहुँचा। पारखजी मेरी गुरुणीजी म० के सुपुत्र है। उनकी धर्मपत्नी मदनकुँवरजी धर्मपरायणा एवं विदुषी महिला हैं। वह हजारों व्यक्तियों में भाषण दे सकती हैं। इतनी दयालु भी हैं कि

अपने घर में ही अनाथालय खोल रखा है। पारखजी का पूरा परिवार जम्मू तक हमारे साथ ही रहा।

हम गड़ी से आगे बढ़े। रास्ते में सड़क पर एक अपरिचित व्यक्ति ने एक कागज बढ़ाते हुए कहा कि क्या वुद के रास्ते में आपका ही सूटकेस गिरा था? एक बाई ने उसे हां में उत्तर दिया। उसने बताया कि वह सूटकेस अमुक व्यक्ति ने उठाया था, अमुक व्यक्ति ने उसे देखा था और अब अमुक व्यक्ति के पास है। उससे पूरा पता पाकर कजाजी जम्मू चली गई। जिस नम्बर की बस (Bus) बताई थी, उसके ड्राईवर से मिलीं और उससे सूटकेस के विषय में बात की। उसने यह स्वीकार कर लिया कि सूटकेस मेरे पास है। परन्तु, वह इस समय श्रीनगर है। मैं छट्ठे दिन श्रीनगर जाऊँगा, तब उसे ले आऊंगा और वह छट्ठे दिन सूटकेस ले आया। सारा सामान मिल गया। सबकी चिन्ता मिट गई। चारों तरफ लोग प्रशंसा करने लगे। इसी का नाम तो दुनिया है।

पुनः जम्मू की ओर : : :

हम तेजी से जम्मू की ओर बढ रहे थे। रास्ते में एक १०-१२ वर्ष का लड़का मिल गया। ६ मील तक हमारे साथ चलता रहा। उसने कई ऐसे प्रश्न पूछे कि उससे उसकी विशिष्ट सूझ-बूझ का पता लगता था। उसकी बुद्धि इतनी प्रखर थी कि कुछ ही मिनिटों में उसने गृहस्थ धर्म और साधु धर्म के नियम याद कर लिए। उसने जीवन पर्यन्त के लिये मांस मदिरा का त्याग कर लिया और उसने यह भी कहा कि मै अपने माता-पिता एवं अन्य परिजनों को भी त्याग पथ पर चलाने का प्रयत्न करूँगा।

सं० २०१८ आसाढ़ शुक्ला ५ को जम्मू के बाहर वेद में आ गए। यहां दिन भर मेला लगा रहा। सब ओर से बधाई एवं मुबारकवाद

मिलने लगे। जितने मुंह उतनी बातें होने लगी। कोई कहता आपने अपने जीवन का नया रिकार्ड बना दिया। कोई कहता आपने अपने वचन को पूरा कर दिया। रास्ते में खोई हुई दोनों चीजें भी मिल गई और सब सानन्द एवं सुरक्षित लौट आए। इससे बढ़कर और क्या प्रसन्नता होगी। इस तरह हमारी काश्मीर यात्रा आज सफलता पूर्वक पूरी हो गई।

जम्मू में प्रवेश : : :

आसाढ़ शुक्ला ६ को भगवान् महावीर की जय के आघोष के साथ हमने जम्मू में वर्षावास करने के लिए प्रवेश किया। स्थानक में पहुँच कर हमने ध्यान किया। और भगवान् की प्रार्थना करने के बाद हमने संघ के सामने काश्मीर यात्रा की आलोचना कर ली। क्योंकि इस तरफ इच्छा न होते हुए भी विवशतावश कई दोष लग गए थे। हमने उसके लिए चातुर्मासिक (१२० उपवास का) प्रायश्चित्त स्वीकार किया। मैंने और उम्मेदकुँवरजी ने जीवन पर्यन्त मिठाई मात्र का त्याग कर दिया। जम्मू में ४ बहिनें और एक भाई विविध प्रकार की बीमारी से तंग थे मगर चातुर्मास में प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक दर्शनों का लाभ लेते रहे और वर्षों की बीमारी से छुटकारा पाकर सदा के लिए श्रद्धालु बन गये। हमने श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव मरुधर प्रान्त मन्त्री स्वामी जी श्री हजारीमलजी म० एवं परम श्रद्धेय आचार्य श्री-को एक एक पत्र लिखवा कर यात्रा की समाप्ति एवं आलोचना प्रायश्चित्त की सूचना दे दी।

जम्मू का वर्षावास : : :

जम्मू काश्मीर की शीतकालीन राजधानी है। देशविभाजन के समय यहा की आबादी ३०–३५ हजार के करीब थी। परन्तु विभाजन के समय यह एक तरह से शरणार्थियों का शहर बन गया था। आज

तो यह काफी बदल चुका है। गाँधीनगर, बख्शीनगर आदि नई बस्तियाँ आधुनिक ढंग की बनी हैं। सड़कें भी काफी चौड़ी की गई हैं। औद्योगिक कार्य भी बढ़ाए जा रहे हैं। आजकल यहाँ की जनसंख्या १०८००० के करीब है। और यदि देखा जाए तो जम्मू लद्दाख एवं श्रीनगर का प्रवेशद्वार भी है। इसलिए इसका अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

हमने पंजाब यात्रा में देखा कि इधर त्याग-प्रत्याख्यान को कम महत्व दिया जाता है। लोग चहल-पहल को अधिक पसन्द करते हैं। सन्त पुरुषों की जयन्ती भी बैन्ड बाजे की धुन के साथ झण्डा फहरा कर मनाई जाती है। कई जगह हरे पत्तों का द्वार भी बनाया जाता है। दया व्रत के दिन भी लोग कन्द मूल का सेवन करते हैं और जलसे में ध्वनिवर्धक ही नहीं, पेटी तबले भी बजते रहते हैं। कभी कभी नृत्य भी हो जाते है। मनोरंजन के नाम पर कई जगह फिल्मी एव अश्लील गाने भी गाए जाते हैं। परन्तु जम्मू वर्षावास में बहुत व्यक्तियों ने त्याग प्रत्याख्यान किए। जो व्यक्ति सामायिक करते हुए संकुचाते थे, उन्होंने भी जीवन पर्यन्त सामायिक करने का नियम ग्रहण किया।

वर्षावास में महिलाओं मे ज्ञानवृद्धि करने के लिए ब्राह्मी महिला मण्डल की स्थापना की। उन्हें पाथर्डी बोर्ड की परीक्षा देने की प्रेरणा दी। ३० बहिनों ने पाथर्डी बोर्ड की परीक्षाओं की तैयारी शुरु कर दी। कुछ बहिनों ने प्रवेशिका, कुछ ने प्रथमा और कुछ ने विशारद की परीक्षा की तैयारी की।

वर्षावास समाप्त होते ही रोशनलालजी चमनलालजी का आग्रह था कि हमारे नए भवन को अपने चरण स्पर्श से पवित्र करें। उनका आग्रह मानकर हम वहाँ ठहर गए। ३० बहिनों ने वहाँ पाथर्डी बोर्ड की परीक्षा दी। परिणाम (Result) बहुत ही अच्छा रहा। यहाँ

क एक बहिन प्रथमा में और एक बहिन (कलावतीजी) विशारद में सर्व प्रथम रही।

जम्मू से प्रस्थान : : :

आज जम्मू से भी विदा लेने का समय आ गया। सतवारी तक बहुत से बहिन भाई हमें छोड़ने आए। सब के चेहरों पर उदासी थी। कुछ महीनों में इतना प्रगाढ स्नेह हो गया था कि आज उन्हें विदाई देते हुए दुःख हो रहा था। मैने उन्हें कहा कि आना एवं जाना यह संसार का नियम है। यदि कवि के शब्दों में कहूँ तोः—

तुम बहुत अच्छे लगे पर क्या करूं; यह बिछुड़ना ही मिलन त्यौहार है।
फूल से हँस बोल कांटों से छिदे, राहियों का तो यही अधिकार है॥
फूल सूखा पर अभी तक वास है सांस के दिल में धड़कती आस है।
तू भले ही दूर रह ले चॉद सा, चाँदनी सा प्यार तेरा पास है॥

आगमन में विदाई और विदाई में आगमन का अस्तित्व छिपा हुआ होता है। यह स्पष्ट है कि मेहमान कुछ दिन के लिए आता है और फिर चला जाता है। वह जाने की भावना लेकर ही आता है। उसके आने के साथ जाना प्रारम्भ से ही सम्बद्ध है। परन्तु बीच के समय उसका व्यवहार ऐसा रहता है कि उसकी विदाई का समय लोगों को चुभने लगता है और उस समय विदा देते हुए लोगों की भावना यह बनी रहती है कि यह पुनः शीघ्र लौटकर आए और हमे पुनः स्वागत करने का अवसर मिले। हाँ तो, जम्मू से हम कुछ ऐसे ही भाव लेकर चल रहे थे। जम्मू से विदा होने पर भी जम्मू का स्नेह एवं जन मानस हमारे साथ है। हमारे जीवन पृष्ठ पर जम्मू का नाम इतना गहरा अंकित हो चुका है कि समय का प्रवाह भी उसे नहीं धो सकेगा!

माधोपुर में : : :

सबसे विदा लेकर हम आगे बढ़े। जम्मू के कई बहन-भाई हमारे साथ थे। बामन वाडी, साम्बा आदि गांवों में धर्म प्रचार करते हुए हम माधोपुर आ पहुँचे। यहां के डाक्टर साहब और कॉपरेटिव सोसायटी (Coopretive society) के लोगों का अच्छा प्रेम था। उनके आग्रह से यहां चार दिन ठहरे। उपदेश में अच्छी रौनक हो जाती थी।

बटाला में : : :

यहां से गुरुदासपुर होते हुए बटाला पहुँच गए। बटाला पंजाब का औद्योगिक केन्द्र (Industrial aria है। यहां अनेक किस्म की मशीनें और मशीनों के पुर्जे बनते हैं। यहां के अजैन भाइयों मे अच्छी भक्ति है। महाशयजी यहां के प्रसिद्ध कार्यकर्ता हैं। उनके आग्रह से यहां एक सप्ताह ठहरे। प्रतिदिन प्रवचन होता था। हजारों व्यक्ति प्रवचन का लाभ उठाते थे। वहां एक गौशाला का भी उद्घाटन हुआ और आगे कदम बढ़ा दिए। यहां अमृतसर के कुछ सज्जन भी स्वागतार्थ आ पहुँचे थे।

नोसेरा : : :

रास्ते में नोसेरा गांव आता है। यहां नामधारी सिख रहते है। लोगों में अगाध प्रेम एवं श्रद्धा है। रात को प्रवचन किया। उन्हें उपदेश इतना अच्छा लगा कि रात को बहुत देर तक ठहरने के लिए प्रार्थना करते रहे। मेरा मन भी यहां खूब लगा। परन्तु, रास्ता काफी लम्बा था। अत अधिक दिन ठहरना कठिन था। उनकी श्रद्धा-भक्ति याद रहेगी।

अमृतसर में प्रवेश : : :

गांवों के हरे भरे दृश्यों को देखते हुए हमने अमृतसर में प्रवेश कर दिया और जैन भवन मे ठहर गए। अमृतसर पंजाब के प्रमुख शहरों में

एक हैं। औद्योगिक दृष्टि से भी इसका पंजाब में महत्वपूर्ण स्थान है। यहां ऊनी शाल-दुशालों के कई कारखाने हैं। इसके साथ इसका अपना ऐतिहासिक महत्व भी है। सन् १६२७ में जलियां वाला बाग की घटना यहीं घटित हुई थी। १३ अप्रेल को जलियां वाला बाग में एक सार्वजनिक सभा हो रही थी। उस समय एकाएक पुलिस ने बाग को चारों तरफ से घेर लिया। बाग के सभी दरवाजों पर गोरी मिलिट्री के सिपाही तैनात थे और जनता को चेतावनी एवं निकल भागने का अवसर दिए बिना ही जनरल डायर ने पुलिस को गोली चलाने का आदेश दे दिया। निर्दोष स्त्री-पुरुष एवं बच्चों पर मशीनों से गोले बरसाने लगी। चारों तरफ हा-हा कार मच गया। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस काण्ड में ३७६ व्यक्ति मारे गये और १२०० आदमी घायल हुए। सारे भारत में इस काण्ड का कड़े शब्दों में विरोध किया गया। उन शहीदों की स्मृति में सहस्र वृक्ष लगाए गए। स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद इस बाग में भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम के शहीदों की स्मृति में एक स्मारक बनाने का विचार किया गया। उसी योजना के अनुरूप यहां एक विराट स्मारक बनाया गया है। एक बहुत लम्बा-चौड़ा बरांडा बनाया गया है, जिसमें सैकड़ों आदमी बैठ सकें। उसमें बैठने के लिए पत्थर की बेंचे बनाई गई हैं व पुस्तकालय आदि के लिए कई कमरे भी बनाए गए हैं। इस पर सरकार ने कई लाख रुपये खर्च किए हैं। इसकी दीवारों पर कई जगह अब भी गोलियों के निशान पड़े हैं। ये बाग से जुड़े हुए मकानों की दीवारें हैं। ये निशान आज भी निर्दय हत्याकाण्ड की याद दिलाते है। जिसे सुन-पढ़कर आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जैन भवन, जिसमें हम ठहरे हुए थे, इस बाग के पीछे ही है।

सिक्खों का गुरुद्वारा भी एक ऐतिहासिक इमारत (Building) है। इसे स्वर्ण मन्दिर कहते हैं। यह संगमरमर के पत्थर का बना हुआ है और इसमें सोने की चित्रकारी की हुई है। गुरुद्वारे का मुख्य द्वार

एवं अन्य दरवाजे काफी बड़े एवं मजबूत हैं। इसमें कोई भी व्यक्ति नंगे सिर एवं जूता पहिन कर नहीं जा सकता। मन्दिर में प्रवेश करते समय उसे पैर धोने पड़ते हैं। मन्दिर के आगे एक तालाब है, जो स्वच्छ जल से भरा है। उसमें मन्दिर का पड़ता हुआ प्रतिबिम्ब बड़ा सुहावना लगता है। रात को बिजली की रोशनी में वह अधिक सुन्दर प्रतीत होता है। तालाब के चारों तरफ अनेक पौधे एवं वृक्ष लगे हुए हैं। गुरुद्वारे के भीतर सोने की कारीगरी देखने लायक है। यह भारतीय कला का अनूठा नमूना है। अनेक वर्ष बीत जाने पर भी यह नया ही लगता है। गुरुद्वारे में एक चौकी पर रेशमी पट से आवृत ग्रन्थ साहब रखा है। हजारों भक्त प्रतिदिन दर्शन करते हैं।

सिक्खों में एक बात बहुत ही अच्छी है। वे बिना किसी की प्रेरणा एवं बिना किसी स्वार्थ तथा तनख्वाह के लंगर के काम एवं सफाई करने के लिए सहर्ष समय देते हैं। इस कार्य में वे अमीर गरीब एवं छोटे बड़े का भेद नहीं करते। यहां तक कि वे एक दूसरे के जूते उठाकर उन्हें व्यवस्थित रखने के कार्य में भी संकोच नहीं करते। परन्तु साथ में यह देखकर बहुत दुःख हुआ कि मानव सेवा एवं धर्म के ये पवित्र केन्द्र आजकल मायावी राजनीति के अखाड़े बनते जा रहे हैं। देश की शक्ति को छिन्न-भिन्न करने के लिए यहां कई तरह के षड्यन्त्र रचे जाते हैं। इन्हीं दिनों सन्त फतहसिंह ने पंजाबी सूबा बनाने के लिए आमरण अनशन कर रखा था। इसके समर्थन में वहाँ प्रतिदिन गर्मागर्म भाषण होते थे। कांग्रेस एवं नेहरु सरकार को जी भर कर गालियां दी जाती थीं। उस हल्ले में हम भी शान्ति-पूर्वक नहीं सो पाते थे।

मुझे यह सोचकर बड़ी हैरानी होती थी कि मनुष्य साम्प्रदायिक अभिनिवेश में कितना पागल हो जाता है। वस्तुत. झगड़ा भाषा का नहीं, अपने अपने स्वार्थों का था। इसमें दो मत नहीं है कि यहाँ के

निवासी पंजाबी सीखें। सरकार भी पंजाबी को बढ़ावा देने में सहमत है। परन्तु दरअसल मास्टर तारासिंह भाषा की ओट में सिखिस्तान चाहते हैं। जो भारतीय एकता की दृष्टि से खतरनाक है। मनुष्य को चाहिए कि राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय भाषा के साथ साथ वह एक और भाषा भी सीखे। वह है हृदय की भाषा, प्रेम-स्नेह एवं मुहब्बत की भाषा। यदि हम एक दूसरे के हृदय की भाषा सीखना शुरु कर दें और एक दूसरे के साथ प्यार एवं मुहब्बत से रहने लगें तो सारे संघर्षों की जड़ ही खत्म हो जाएगी और भारत की उन्नति होते देर नहीं लगेगी।

परन्तु अफसोस है कि कहा किसे जाए। आज वीतराग पुरुषों के उपासक जैन स्वय राग-द्वेष एव संप्रदायवाद की शृंखलाओं से आबद्ध हैं। कहने को पंजाब में सम्प्रदायवाद नहीं है। परन्तु मैने देखा है कि पंजाब में इसका जितना भयंकर रूप है, उतना अन्यत्र कम मिलेगा। यहाँ यह गुरुवाद के रूप में पनपता जा रहा है। सारे पंजाब में कुछ प्रमुख साधुओं की अपनी अलग-अलग पार्टियाँ है। एक साधु के शिष्य शिष्याएँ दूसरे की निन्दा-बुराई करते, उसे गिराने एवं बदनाम करने तथा अपने गुरु के दोषों पर आवरण डालने में सदा संलग्न रहते हैं। साधु-साध्वियों के पास आने-जाने एवं उनकी सेवा-शुश्रूषा करने में ही क्या उन्हें आहार पानी देने मे भी भेद बरता जाता है। साधु-साध्वियें भी परस्पर एक दूसरे की निन्दा करने एवं कभी कभी एक दूसरे पर झूठे दोष लगाने से भी नहीं चूकते। साधना के क्षेत्र मे भी एक तरह से राजनीति का प्रवेश हो गया है। अनेक साधु एवं उनके उपासक रात-दिन स्वाध्याय ध्यान, जप-तप आदि की जगह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने एवं अधिक से अधिक आराम के साधन जुटाने के लिए कानून की छान-बीन करने में व्यस्त रहते है। इस स्थिति को देख-सुनकर हमें काफी दुःख हुआ। पता नहीं, इस संप्रदायवाद के भयंकर विषधर का कब अन्त होगा।

यहाँ पर एक मानसिक रोग से पीड़ित व्यक्तियों का चिकित्सालय है। चिकित्सालय का चिकित्सक (Doctor) एक उच्च विचार का व्यक्ति है। यहाँ के रोगी उसे परमेश्वर के रूप में देखते हैं। इसमें पुरुष और स्त्रियों के दो अलग-अलग वार्ड हैं। उसने तीन घण्टे हमारे साथ घूम फिर कर सारा औषधालय दिखाया और चिकित्सा करने की विधि भी बताई। हमने औरतों का वार्ड देखा। हमे देखते ही उन्होंने चारों तरफ से हमें घेर लिया और हम से चिपट गईं। मेरा जी घबराने लगा। थोड़ी देर में सब डाक्टर के चारों ओर फैल गईं और उनके पास एक दूसरे की शिकायत करने लगीं।

हमारा अमृतसर में एक सप्ताह ठहरने का विचार था। परन्तु संघ का अत्यधिक आग्रह होने से हम यहाँ एक महीना ठहरे। इन दिनों में कई दर्शनीय स्थान देखे और हमारे रहते-रहते सन्त फतहसिंह का अनशन भी समाप्त हो गया।

लुधियाना की ओर : : :

गत वर्ष लुधियाना से चलते समय परम श्रद्धेय आचार्य श्री ने फरमाया था कि तुम जम्मू से वापिस लौटते समय लुधियाना में एक चातुर्मास और करना। यदि वर्षावास करने की इच्छा न हो तो भी लुधियाना होकर अवश्य जाना। उनके आदेश के अनुसार हमने लुधियाना की ओर कदम बढ़ा दिए। जंडियाला गुरु, होते हुए जालंधर आए। यहां श्री रघुवरदयालजी एवं अभयमुनिजी म० आदि सन्तों के दर्शन किए। अभयमुनिजी एक अच्छे वक्ता हैं। परन्तु, इधर भाषणों में जैनों की अपेक्षा अजैन अधिक आते हैं। इधर के ओसवालों (भावड़ों) में साधु-साध्वियों के प्रति कुछ श्रद्धा-भक्ति कम ही है। इसके कुछ कारण भी हैं जिन्हें यहां अंकित करना वांछनीय नहीं है।

जालंधर से फगवाड़े, फिल्लौर होते हुए लुधियाना पहुंच गए
श्रद्धेय आचार्य श्री के दर्शन किए। दूसरे दिन वहां से विहार करने का
विचार था। परन्तु, उस दिन प्रसिद्ध वक्ता श्री विमलमुनिजी म० का
विहार हो रहा था। अतः हमने वहां से दूसरे दिन विहार कर दिया।

सेवावन्तीजी की दीक्षा : : :

यहां से अहमदगढ मंडी, सन्मति नगर (कुप कलां) होते हुए
मालेरकोटला में प्रवेश किया। यहां श्री खजानचंदजी म० एवं मुनि श्री
समदर्शीजी म० के दर्शन किए। यहां दो दिन ठहरने की इच्छा थी परन्तु
समदर्शीजी म० के आग्रह से कुछ दिन और ठहर गए। इतने में वयोवृद्ध
स्थविर मुनि श्री नेकचंदजी म., पं. मुनि श्री जगदीशमुनिजी म., श्री विमल
मुनिजी म० आदि ६ संत पधार गए। कुप में एक वैरागी की दीक्षा होने
वाली थी। उसमें सम्मलित होने का आमंत्रण मिल गया और इन्हीं दिनों
में सेवावन्तीजी ने अपने पति को सूचना भेजकर स्वतः ही साधु भेष पहन
लिया। विचित्रमुनिजी के साथ-साथ कुप में उनकी भी दीक्षा हो गई।
दीक्षा देकर हम पुन मालेर कोटला आ गए। यहां तीन दिन और ठहरे,
उसके बाद मुनि श्री समदर्शीजी म० से आगे बढ़ने की इजाजत चाही।
मुनि श्री जी से मुझे सदा ही भाई का सा स्नेह मिला है। उन्होंने ही
मुझे जीवन यात्रा के संस्मरण लिखने की प्रेरणा दी और उसी के फल-
स्वरूप मैं अपनी यात्रा को यहां लिपिबद्ध कर पाई हूँ। मुनि समदर्शीजी
के साथ ही श्री कस्तूरचन्दजी बांठिया तथा कानमलजी नास्टा ने भी
लिखने की काफी प्रेरणा दी।

सेवावन्तीजी की बड़ी दीक्षा : : :

मालेर कोटला से नाभा आ पहुँचे। यहां पं० श्री सुरेन्द्रमुनिजी,
प्र० व० श्री विमलमुनिजी आदि नौ सन्त पहले ही पधार चुके थे।

उनके सान्निध्य में सेवावन्तजी को बड़ी दीक्षा दी गई। दीक्षा के दिन सामायिक चारित्र दिया जाता है। उसके बाद साधक को साधना की क्रियाओं से परिचित कराया जाता है। उसकी संयम वृत्ति को व्यवस्थित देखकर सातवें दिन उसे महाव्रतों की दीक्षा दे दी जाती है। इसे छेदोस्थापना चारित्र कहते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि इन दिनों में साधना का नया-नया अनुभव होने के कारण साधना में दोषों का लगना स्वाभाविक है। अतः सात दिन का दीक्षा छेद देकर उसे साधना का महत्व समझा दिया जाता है और निर्दोष संयम परिपालन करने मे सावधान रहने का पाठ पढ़ाया जाता है। यदि कोई साधु-साध्वी सात दिन में प्रतिक्रमण आदि साधु क्रियाओं से अवगत न हो सके तो उसे चार महीने या अधिक से अधिक ६ महीने के बाद बड़ी दीक्षा दी जाती है और बड़ी दीक्षा का पाठ पढा देने के बाद ही हम उसके हाथ का लाया हुआ आहार-पानी स्वीकार कर सकते हैं।

पटियाला : : :

हम नाभा से पटियाला आए। पटियाला की प्रशंसा काफी सुन रखी थी। यहां आते समय मन में कई भावनाएँ थी। परन्तु, यहां का वातावरण कुछ विचित्र-सा लगा। ठहरने को एक टूटा-फूटा छोटा-सा मकान मिला। उसके चारों तरफ गन्दगी के ढेर थे। दुर्गन्ध से मस्तक फटा जा रहा था। हां, व्याख्यान मे उपस्थिति अच्छी हो जाती थी, परन्तु उसके बाद मुश्किल से ही हमारे स्थान पर किसी भाई की सूरत दिखाई देती थी। अतः कुछ दिन वहा ठहर कर आगे बढ गए।

यहां से राजपुरा होकर अम्वाला शहर पहुंचे। यहां पंजाव प्रान्त मंत्री शुक्लचंदजी म० के दर्शन किए। संघ के आग्रह से यहां महावीर जयन्ती की और दूसरे दिन अम्वाला छावनी चले गए। वहां प्र० व० श्री विमलमुनिजी म०, श्री पूर्णचंदजी म० आदि सन्त विराजमान थे।

सती वल्लभवतीजी के पास एक बहिन की दीक्षा होने वाली थी। उस दीक्षा में शामिल हुए।

जगाधरी में : : :

यहां से मौलाना होते हुए जगाधरी आ पहुँचे। यहां एक रात ठहरे। लोगों का अच्छा प्रेम हो गया। ठहरने का बहुत आग्रह करते रहे, और वर्षावास की प्रार्थना की। हमने सोचकर जवाब देने को कहा।

सहारनपुर में : : :

यहां से देहरादून मसूरी आदि देखने की भावना लेकर चले थे। जगाधरी से कुछ दूर चलकर हमने पुल से यमुना नदी को पार किया। यमुना के इस किनारे पर पंजाब की सीमा समाप्त हो जाती है। यमुना के उस किनारे से उत्तर प्रदेश शुरु हो जाता है। आज पंजाब की सीमा को लांघकर हमने उत्तर प्रदेश मे प्रवेश कर दिया। कई गांवों में होते हुए सहारनपुर पहुँच गए।

वैसे हमारा विचार बनारस-कलकत्ता की ओर जाने का था। परन्तु, गर्मी अधिक हो जाने से उधर का विचार स्थगित कर दिया और इधर माडल टाउन (जगाधरी) वाले लाला हंसराजजी, जंगीलालजी का वर्षावास के लिए अधिक आग्रह होने से हमने जगाधरी का चातुर्मास स्वीकार कर लिया। इसके लिए श्रद्धेय गुरुदेव एवं प्रान्त मंत्रीजी म० का आदेश भी मिल गया।

जगाधरी वालों को वर्षावास का वचन देकर हमने देहरादून की ओर जाने का विचार किया। विहार करने को तैयार हो चुकी थी। परन्तु उसी समय एक भाई ने आकर हमें विहार करने से रोक दिया। उसने कहा कि देहरादून के चार व्यक्ति आए हैं। वे शाम को आपकी

सेवा में आएँगे। हमने विहार का विचार स्थगित कर दिया। शाम को देहरादून वाले व्यक्ति हमारे पास आए। उन्होंने कहा कि वहाँ दिगम्बर श्वेताम्बर भाइयों में परस्पर संघर्ष चल रहा है और देहरादून का रास्ता भी बहुत कठिन है। राह में सड़क से तीन-तीन, चार-चार मील दूर मुसलमानों के गांव आते हैं। रास्ते में आहार पानी भी नहीं मिलता। पर हम इन कठिनाइयों से घबराने वाले नहीं थे। हमने तो कठिनाइयों के सामने कभी झुकना नहीं सीखा था। हमारे मन में तो यह भावना लहरा रही थी:—

"तुम मेरी श्रद्धा मत अजमाओ, मेरे विश्वासों की हार न होगी।
मुझे बताओ मंजिल से राही कब-कब हारा,
बढ़ने वालों ने पीछे की ओर कभी निहारा।
उठे क़दम जब मानव के तो झुक गया हिमालय भी,
मोड़ ले गई युग-युग से उल्टी बहती धारा।
तुम अपने ध्वंसों को समझाओ॥

भूचालों ने धरा हिला दी. मानव उर न हिला,
दुर्भिक्षो अंगारों में भी मानस सुमन खिला।
कितनी वार प्रलय ने जिसके साहस को तोला,
उसको ऊँचा उठा सकी है, अब तक कौन तुला।
ओ सखे पतझड़! वापिस जाओ!
मेरे मधुमासों की हार न होगी!!"

अपने पथ पर बढ़ने वाले वीरों को आह्वान करते हुए एक राजस्थानी कवि ने भी बहुत सुन्दर बात कही है:—

"सूरा चढ़ संग्राम में, फिर पाछो मत जोय।
उतर पड़ो मैदान में, करता करे सो होय॥"



गीता भवन (ऋषिकेश) हरिद्वार

हमने उन्हें स्पष्ट बता दिया कि हमें मंसूरी जाना है। और रास्ते में देहरादून आएगा ही। अत. वहाँ एक रात किसी के मैदान में ठहर कर आगे बढ़ जाएँगे, हमें आपके संघर्ष से क्या लेना है। हमारा निश्चय देखकर वे भी हमारे विचारों से सहमत हो गए और वन्दना करके देहरादून चले गए।

देहरादून के पथ पर : : :

हमने देहरादून की ओर विहार कर दिया। हम चार सतियें थी, और एक आदमी साथ था। बिहारीगढ़ तक सहारनपुर के भाई साथ थे। उसके बाद देहरादून के कुछ भाई माउन्ट आ गए थे। वहाँ से चलकर हम डाट मे ठहरीं। वहाँ महाकाली का मन्दिर है। प्रतिदिन बलिदान होता है। लोगों का कहना है कि प्रतिदिन एक शेर देवी के दर्शन को आता है। कह नहीं सकते कि वह देवी के दर्शन को आता या बलिदान का स्वाद चखने ? यहाँ हमें ठहरने को स्थान तो मिल गया, परन्तु आहार-पानी पर्याप्त नहीं मिला। रास्ते में कई बार ऐसा होता ही है। हमारे देहरादून पहुँचने से पहले ही जगाधरी के कुछ भाई वहाँ पहुँच गए।

देहरादून में प्रवेश : : :

सं० २०१८ बैसाख शुक्ला ६ को हमने देहरादून में प्रवेश कर दिया और जगाधरी वालों ने अपने एक व्यौपारी की कोठी पर ठहरने की व्यवस्था कर रखी थी। अतः वहाँ ठहर गए। यह सज्जन माहेश्वरी बनिये थे। दूसरे दिन दिगम्बर व श्वेताम्बर समाज के प्रमुख व्यक्ति आए और उन्होंने दि० जैन धर्मशाला में ठहरने की प्रार्थना की। हम वहां आ गए और मैने उनके आग्रह से दि० जैन मन्दिर में प्रतिदिन प्रवचन दिया। प्रवचन में लोगों की अच्छी उपस्थिति होती थी। एक दिन एक भाई ने प्रतिमा (मूर्ति) वन्दन के सम्बन्ध में लिखित प्रश्न पूछ लिया। मैने उसका उत्तर देते हुए एक राजस्थानी दोहा कहा—

"जिन प्रतिमा जिन सारखी कहे सो मिथ्यादृष्ट,
प्रतिमा को प्रतिमा कहे, भाटा कहे सो भ्रष्ट।"

वस्तुत: बात यह है कि जैनों में दो विचारधाराएँ चल रही हैं—कोई मूर्तिपूजा को धर्म मानते हैं, तो दूसरा पक्ष उसमें धर्म नहीं मानता है। इसलिए कुछ लोग प्रतिमा को भगवान् के तुल्य कहते हैं, तो कुछ व्यक्ति उसे पत्थर कह देते हैं। परन्तु वस्तुत: दोनों का कथन ठीक नहीं है। प्रतिमा और जिनत्व दो अलग अलग चीजें हैं। और प्रतिमा पत्थर की होने पर भी हम उसे पत्थर नहीं कह सकते। वह ध्यान मुद्रा में होने के कारण तीर्थंकरों का साक्षात् चित्र न होने पर भी जिन मुद्रा की प्रतीक अवश्य होती है। जैसे गाँधीजी की तस्वीर को हम कागज नहीं, उनकी फोटो कहते हैं। उसी तरह हम उसके लिये पत्थर शब्द का नहीं, बल्कि जिन प्रतिमा या भगवान् की मूर्ति शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

जिनत्व और प्रतिमा : : :

यह मैं ऊपर बता चुकी हूँ कि जिनत्व प्रतिमा से भिन्न है। वह आत्मा का गुण है। यदि हम निश्चय दृष्टि से सोचें-विचारें तो यह स्पष्ट होगा कि जिनत्व तीर्थंकरों के शरीर से भी भिन्न है। उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान महावीर गौतम स्वामी को संबोधित करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहते हैं—'हे गौतम! तुझे अभी जिन दिखाई नहीं दे रहा है, उनके द्वारा उपदेशित अनेक नय वाला मार्ग ही दिखाई दे रहा है। अत: उस पथ पर गति करने में समय मात्र भी प्रमाद मत कर।*' देखिए भगवान महावीर साक्षात् गौतम के सामने बैठे हैं, फिर भी वे उन्हें कहते हैं कि

*न हु जिणे अज्ज दिस्सइ, बहुमए दिस्सइ मग्गदेसिए।
संपइ नेयाउए पहे, समयं गोयम! मा पमायए॥

— उत्तराध्ययन सूत्र १०, ३१ —

हे गौतम ! तू जिन (भगवान) को अभी नहीं देख रहा है। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह है कि जिनत्व आत्मा का गुण है और आत्मा शरीर से भिन्न है और आत्मा का वह गुण तब तक देखा नहीं जा सकता, जब तक कि आत्मा जिनत्व को प्राप्त नहीं होता। अत: छद्मस्थ आत्मा जिन द्वारा प्ररूपित स्याद्वाद (अनेकान्त) मार्ग को देख सकती है और उस पर चलकर एव संयम का परिपालन करके जिनत्व को पा सकती है।

इसमे स्पष्ट होता है कि जिनत्व आत्मा का गुण है। अत: वह प्रतिमा में कैसे पाया जा सकता है? हाँ, प्रतिमा को देखकर हम जिन भाव का स्मरण कर सकते हैं। इससे प्रतिमा जिन मुद्रा की प्रतीक हो सकती है। अत: उसे जिन के समान नहीं कह सकते। दूसरे में जिन भगवान के चौतीस अतिशय होते हैं। पैंतीस वाणी के गुण होते हैं और एक सहस्त्र आठ लक्षण होते हैं, अब आप ही बताइये कि जिन प्रतिमा में इनमें से कौन-सी विशेषता है? इस तरह करीब एक घण्टे तक विचार चर्चा होती रही। लोगों पर काफी अच्छा असर रहा। अब तो प्रतिदिन आध्यात्मिक विषय पर विचार चर्चा होने लगी। वस्तुत: श्वेताम्बर समाज मे अध्ययन एवं स्वाध्याय की अभिरुचि कम होने से उनमें ज्ञान की कमी है। परन्तु, दिगम्बर समाज में स्वाध्याय के प्रति अभिरुचि होने से उनमें लोगों को सैद्धान्तिक ज्ञान बहुत अच्छा है। हमें सैद्धान्तिक चर्चा में बहुत आनन्द आता था। इससे लोगों का प्रेम भी इतना हो गया कि हम एक रात ठहरने की भावना से आई थी। परन्तु हमें दो महीना ठहरना पड़ा। लोग तो वर्षावास की प्रार्थना भी करते थे। इसके लिये उन्होंने जगाधरी वालों से चातुर्मास की याचना भी की। परन्तु उन्होंने देने से इन्कार कर दिया और हम जगाधरी वालों से वचनबद्ध थे। अत: हम वहां वर्षावास नहीं कर सके।

मंसूरी की ओर : : :

हमारे देहरादून पहुँचने के कुछ दिन पश्चात् प्र० व० श्री विमल

मुनिजी म० आदि ५ सन्त भी वहां पधार गए और वहां कुछ दिन ठहर कर मंसूरी चले गए। उनके वापिस लौटने पर हमने मंसूरी की ओर कदम बढा दिए। देहरादून के कुछ बहन-भाई साथ थे। देहरादून के जनाकीर्ण मार्ग को पार करके हमारे कदम राजपुर रोड़ पर बढ़ने लगे। कुछ दूर निकलने के बाद सड़क का रास्ता छोड़कर पगडंडी पकड़ी। रास्ता काफी ऊँचा-नीचा था। और बहुत दूर दूर तक आम एवं लीची के बगीचे नजर आ रहे थे। चारों तरफ हरियाली छाई हुई थी। प्रकृति का सुहावना दृश्य देखते हुए हम राजपुर आ पहुँचे।

राजपुर के बाग बगीचों को पीछे छोड़ते हुए हम आगे बढ़ने लगे। मंसूरी का रास्ता काफी कठिन था। सीधी चढाई थी और पगडंडी का रास्ता था। ज्यों-ज्यों ऊपर चढ़ रहे थे, त्यों-त्यों हवा में शीतलता महसूस हो रही थी। और पगडंडियों की तरह ऊँचे-नीचे खेत दिखाई दे रहे थ। और पहाड़ की बर्फीली चोटियाँ बड़ी सुहावनी प्रतीत हो रही थीं। मार्ग की कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए हम मंसूरी में प्रविष्ट हो ही गए। यह ठीक है कि मंसूरी श्रीनगर से बहुत साफ सुथरा है, पहाड़ी दृश्य भी अच्छे हैं और स्वास्थ्य की दृष्टि से यह स्थान बहुत अच्छा है। परन्तु यहाँ देखने योग्य बहुत कम स्थल हैं।

कुलड़ी बाजार और माल रोड़ : : :

ये दोनों मंसूरी के प्रसिद्ध बाजार हैं। इनकी रौनक पिक्चर पैलेस से शुरु हो जाती है। इन बाजारों में बड़ी-बड़ी दुकानें हैं। और शाम के समय इस सड़क पर अनेक जोड़े रंग-बिरंगी फैशनभिज्ञ पोशाकों एवं साज-सज्जा के साथ घूमते हुए दृष्टिगत होते हैं। इसे देखकर दिल्ली के कनाट प्लेस की याद ताजी हो उठती है। कुलड़ी बाजार के समाप्त होते ही माल रोड शुरु होती है। यहाँ कई मदिरालय हैं, जहाँ शाम से प्रारम्भ होकर बहुत रात बीतने तक विदेशी शराब के दौर चलते हैं।

यहाँ सर्व प्रभुता संपन्न गणतन्त्र से शासित एवं महावीर, बुद्ध तथा गाँधी की सन्तानें रंगरेलियां मनाने एवं भोग-विलास करने में संलग्न दिखाई देती हैं। भारतीयता का दिवाला !

यहाँ से कुछ दूर आगे बढने पर बांएँ हाथ की ओर 'रिंक' आता है, इसमें युवक व युवतियाँ स्केटिंग करती हैं। वे पैरों में स्केटिंग के सैन्डिल पहन कर रिंक' के हाल में फिसलते हैं।

लायब्रेरी रोड़ : : :

सुनने में आया कि इस सड़क पर किसी दिन बहुत रौनक रहती थी। लोगों के मनोरंजन की भी व्यवस्था थी। परन्तु आजकल इस सड़क पर मनोरंजन का कोई साधन नहीं है। अब यह स्थान एक तरह से रिक्शे वालों का अड्डा बन गया है। इस सड़क पर एक विशाल प्रवेशद्वार-भी बना हुआ है। वह अवश्य ही दर्शनीय है।

कैमल्स बेग रोड़ : : :

लायब्रेरी बाजार से बाँई ओर को कैमल्स रोड़ है। इस सड़क पर लोगों की भीड़ बहुत कम रहती है। क्योंकि यह स्थान बाज़ार से कुछ दूर शान्त और एकान्त में है, इसलिए सैर करने वाले व्यक्ति इस सडक पर कम-आते हैं। परन्तु करीब चार मील के विस्तार में फैले हुए इस मार्ग की सैर स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। और इस सड़क पर अधिक जनरव नहीं होने से कुछ मानसिक शान्ति भी मिलती है। वस्तुत. मंसूरी आने का वास्तविक आनन्द इस सड़क की सैर करने में है, न कि हो-हल्ले से भरपूर कुलड़ी बाजार और माल रोड़ पर घूमने में। इस सड़क पर स्थान स्थान पर पत्थर की बैंचें बनी हुई हैं। जिन पर बैठकर थकावट भी दूर की जा सकती है और साथ ही प्राकृतिक दृश्यावलि का आनन्द भी लिया जा सकता है।

सेन्ट विसेन्ट हिल : : :

लायब्रेरी बाजार से कुछ आगे हम सेन्ट विसेन्ट हिल की ओर बढ़े। यह रास्ता कच्चा है और पगडंडी जैसा है। हम कदम बढ़ाते-बढ़ाते चार मील का रास्ता पार करके सेन्ट विसेन्ट हिल स्कूल में पहुँचे। यह स्कूल अमरीकी मिशनरियों द्वारा चलाया जाता है और अमरीकी पाठ्यक्रम के अनुसार उन्हें शिक्षा दी जाती है। इसके साथ बच्चों को हिन्दी की शिक्षा भी दी जाती है। स्कूल में खेलने के मैदान, तैरने के तालाब पुस्तकालय आदि मौजूद हैं।

डिपो की सैर : : :

लायब्रेरी बाजार से डिपो को पक्की सड़क जाती है। इस सड़क पर जिधर से देखिए उधर देवदारु के वृक्ष दिखाई देते है। सुन्दर, सुडौल और गगनस्पर्शी देवदारु वृक्षों की कतारें बड़ी सुहावनी प्रतीत होती हैं। इस ओर भी अमेरिकन मिशनरियों का आवास स्थल है। यहाँ उनका 'लैंग्वेज स्कूल' (Language school) भी है, जहाँ वे अपने धर्म प्रचार के लिए भारतीय भाषाएँ सीखते हैं।

ऐसे 'डिपो' की सड़क का वातावरण भी शान्त है। वस्तुतः गम्भीर अध्ययन और अनुशीलन के लिए यह स्थान अत्यन्त उपयुक्त है। संभवत. इसीलिए रक्षामन्त्रालय ने इस ओर अपनी अनुसंधान शाला प्रयोगशाला स्थापित की है। डिपो के देवदारु वन की सैर करके हम अपने स्थान पर लौट आये।

पुनः देहरादून में : : :

मंसूरी 'पहाड़ों की मलिका' कहलाती है। परन्तु मुझे यह स्थान विशेष पसन्द नहीं आया। अतः एक सप्ताह की यात्रा करके पुनः देहरादून आ गए। यहां हमारे प्रति लोगों के दिलों में प्रगाढ़ श्रद्धा-

भक्ति थी। जब हम यहाँ आए उस समय यहाँ स्थानकवासियों के ५ घर थे, परन्तु डेढ़ महीने के उपदेश से अब ५२ घर बन गए थे। ऐसे देहरादून की यात्रा काफी आनन्दप्रद व संतोषजनक रही।

देहरादून में गुरु रामरायजी का दरबार है। उसमें १०५ हाथ का लम्बा झण्डा है। लोगों के दिलों में उस झण्डे के प्रति अटूट श्रद्धा है। वहाँ प्रतिवर्ष मेला लगता है और हर तीसरे वर्ष इस झण्डे का डंडा बदला जाता है। कुछ प्रामाणिक व्यक्तियों से ऐसा सुना कि डंडे के लिए जिस वृक्ष को काटते हैं, उस दिन एक दूसरे वृक्ष के धागा बांध देते हैं, और तीसरे वर्ष वह वृक्ष भी बराबर १०५ हाथ लम्बा हो जाता है। इस डण्डे पर लाल रंग के मखमल का वस्त्र चढ़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त 'टपेकेश्वरी महादेव' और 'न्यू फोरेस्ट' (New forest) भी देखने योग्य हैं।

ऋषिकेश के पथ पर : : :

दो महीने के बाद देहरादून के श्रद्धालु भक्तों से विदाई लेकर ऋषिकेश की ओर कदम बढ़ा दिए। रास्ते में पहाड़ियाँ, झरते हुए झरनों और पेड़-पौधों का दृश्य बड़ा ही सुहावना है। इस रास्ते मे झाड़ियां बहुत सघन हैं। और उनमें से एक विचित्र एवं अपरिचित भयावनी सी आवाज आती रहती है। ठेठ ऋषिकेश तक हमें यह आवाज अनेकों बार सुनाई दी। परन्तु हम सब निडर एवं निर्भय थे।

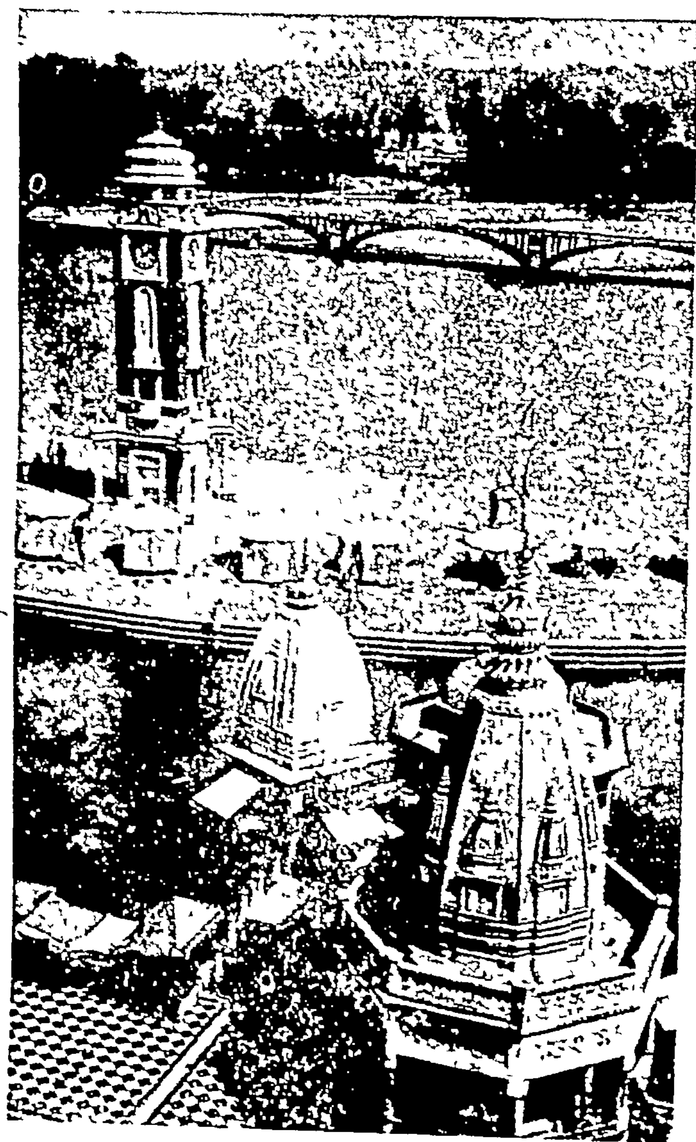
जिस दिन हमें ऋषिकेश में प्रवेश करना था, उस दिन का रास्ता भी काफी विकट था। चारों तरफ सघन झाड़ियाँ और सुन-सान जंगल। रास्ते में दो साइकल सवार मिले। उन्होंने कहा—"महाराज सावधानी से जाना आगे पुल के पास जंगली हाथी खड़ा है।" हमने नमोक्कार मन्त्र का जाप किया और निर्भयता पूर्वक कदम बढ़ा दिए।

पुल तक पहुँचने के पहले ही हाथी जङ्गल की ओर चला गया था। पर सत्यनारायण से जब हम रवाना हुए तो रास्ते में हमें तीन जङ्गली हाथी और मिले पर उन्होंने भी हमें जरा भी परेशान नहीं किया और शान्ति से खड़े रहे। हम अपना रास्ता तय करते रहे। हम सानन्द ऋषिकेश पहुँच गई।

यह वैष्णवों का तीर्थ स्थान है। यहां जगह-जगह मन्दिर एवं सन्तों के डेरे हैं। भगवे वस्त्रधारी साधु-संन्यासियों की तरह यहां सन्यासिनें भी रहती हैं। और वे भी आधुनिक लड़कियों (Modern girls) की तरह दो चोटियें बनाती हैं, ऑरजेट, रेशम एवं नायलान की साड़ियों से आवेष्टित रहती हैं और तैल-साबुन, क्रीम आदि विलासी सामग्री का भी उपयोग करती हैं। यहाँ उन्हें भोगोपयोग की हर चीज भक्तों द्वारा मुफ्त मिलती हैं। इस कारण यहाँ व्यभिचार भी अधिक फैलता है। संन्यास जीवन में प्रचलित यह विलास सामग्री उनके नैतिक पतन का प्रमुख कारण है। वस्तुतः देखा जाए तो प्राकृतिक दृष्टि से साधना के लिए यह स्थान बहुत ही उपयुक्त है। यहाँ का वातावरण बहुत शान्त है। प्रकृति के शान्त-प्रशान्त वातावरण में आत्म-चिन्तन करने में बड़ा आनन्द आता है। परन्तु भोगों में लिप्त एवं मुफ्त के वैलासिक एवं भोग प्रसाधनों में फंसे हुए योगी एवं योगनियाँ साधना से काफी दूर जा गिरे हैं। उनका विलासतामय जीवन देखकर मुझे हार्दिक दुःख हुआ। यहाँ गीता भवन, लक्ष्मण झूला आदि कई स्थान देखने योग्य हैं।

हरिद्वार में : : :

ऋषिकेश से हम हरिद्वार आ पहुँचे। हरिद्वार वहां से १५ मील है। यहाँ गंगा की निर्मल धारा प्रवहमान है। हजारों भक्त गंगा की धारा में गोते लगाते हैं। कहीं-कहीं लोग अपने पूर्वजों के फूल (हड्डियें)



हर की पैड़ी (हरिद्वार)

भी गंगा में प्रवाहित करते हैं। गंगा के किनारे हर घाट पर पंडों का जमघट लगा रहता है। भक्त लोग गंगा के प्रवाह में डुबकियाँ लगाने के साथ-साथ कुछ भेंट भी चढ़ाते है। और खोजी लोग गंगा की गहराई में गोते लगाकर भक्तों द्वारा फेंके गए पैसों रुपयों को बटोरने का प्रयत्न करते है।

यहाँ चारों तरफ मन्दिर ही मन्दिर दिखाई देते हैं। श्रद्धालु भक्त देवता के आगे अपने जेवर तक चढ़ा जाते हैं। यही कारण है कि यहाँ के महन्त एवं पुजारी काफी पूंजीपति हैं। उनके पास लाखों करोड़ों की संपत्ति होती है। अनेक संन्यासी एवं सन्यासिनें अच्छे से अच्छे और कीमती वस्त्र पहनती है। वे केवल संन्यास के प्रतीक रूप में एक छोटा सा भगवा वस्त्र कन्धे पर डाल लेते हैं। रेशम, मखमल आदि के सुन्दर-सुन्दर परिधानो के साथ वे जेवर भी धारण कर लेते हैं। इस तरह इनका जीवन भोग-विलास में ही बीतता है।

कनखल हरिद्वार का एक मोहल्ला है। यहाँ पार्श्वकुमारजी जैन रहते हैं। ये वैद्यक का काम करते हैं। इस प्रकार जैन घर तो एक ही है परन्तु है उत्साही और लगन वाला। अन्य लोगों में यहां अच्छा प्रेम है। भाषण में अच्छी उपस्थिति होती थी। परन्तु, हमारे पास समय कम होने के कारण हम अधिक नहीं ठहर सके। वर्षावास का समय निकट आ रहा था। और हमें जगाधरी पहुंचना था।

जगाधरी की ओर : : :

वहां से विहार करके १२ मील घनौर आए। यहां आकर अचानक ही मैं अस्वस्थ हो गई। दस्त-उल्टी आने लगी, पेट में दर्द होने लगा। यहां कोई साधन नहीं था। सिर्फ सड़क पर स्कूल था और दो दुकानें थी। परन्तु विवश होकर हमें यहां दो दिन ठहरना पड़ा। कनखल वाले

वैद्य पार्श्वकुमारजी दो बार कार से यहां आये और औषध की व्यवस्था कर गए। इससे कुछ स्वस्थ होने पर आगे कदम बढ़ाए और रुड़की जा पहुँचे। और यहां से गागल हेरी आगई। और वर्षा होने के कारण वहां दो दिन ठहरना पड़ा। यहां हमसे पहले कोई जैन साधु-साध्वी नहीं आए थे। लोगों का अच्छा प्रेम रहा और उन पर उपदेश का अच्छा असर पड़ा। वर्षा बन्द होते ही वहां से चलकर सहारनपुर होते हुए यमुना नगर आ गए और यहां दिगम्बर जैन मन्दिर में ठहरे। यहां दो प्रवचन दिए।

माडल टाउन (जगाधरी) में प्रवेश : : :

सं० २०१८ आसाढ़ शुक्ला ७ दिनांक ७ जुलाई १९६१ गुरुवार को प्रातः भगवान् महावीर की जयनाद के साथ हमने मॉडल टाउन (जगाधरी) मे वर्षावास करने को प्रवेश कर दिया। यह यमुना नगर से करीब एक मील दूर है। और नई बस्ती बसाई गई हे। वस्तुतः यह शहर आधुनिक ढंग पर बसाया गया है। यहां सड़कें काफी चौड़ी हैं और सब कोठियाँ एक मंजिल का हैं। इसी कारण इसे मॉडल टाउन (Model town) कहते हैं। स्टेशन से दूर होने के कारण यहाँ का वातावरण काफी शान्त है और एकान्त भी पर्याप्त है।

ऐसे यहाँ स्थानकवासी जैनों के घर तो बहुत कम है। लाला हँसराजजी एवं जंगीलालजी के दो घर ही मुख्य है। स्थानक भी इसी वर्ष बना है। अभी तो पूरा बन ही नहीं पाया है। जैन घरों की संख्या कम होने के कारण अभी तक यहां कभी भी जैन साधु-साध्वियों का वर्षावास नहीं हुआ। मगर घरों की संख्या कम होते हुए भी लोगों का प्रेम अच्छा है। प्रवचन में लोगों की उपस्थिति अच्छी हो जाती थी। और सब से प्रमुख बात यह थी कि वातावरण बहुत शान्त है और

अध्ययन का साधन भी है। यहां पं० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल, 'न्यायतीर्थ' (ब्यावर) के मित्र दि० जैन विद्यालय में पढ़ाते हैं। उनसे हमें अध्ययन का लाभ मिल सकता था। क्योंकि पंजाब में जैन दर्शन का अध्ययन कराने वाला प्राय: विद्वान नहीं मिलता। इस दृष्टि से हमने बड़े बड़े शहरों की वर्षावास की विनतियों को छोड़कर इस वर्ष जगाधरी में वर्षावास किया।

मैंने अंग्रेजी का अध्ययन शुरु किया था। परन्तु अस्वस्थता के कारण छोड़ देना पड़ा। परन्तु उम्मेदकुँवरजी का संस्कृत, प्राकृत एवं जैनागमों की टीकाओं का अध्ययन चल रहा है और कञ्चनकुँवरजी भी हिन्दी एवं अंग्रेजी का अध्ययन कर रही है। इस तरह सब का अध्ययन सुचारु रूप से चल रहा है।

यहाँ सब लोगों में अच्छा प्रेम है। दिगम्बर-श्वेताम्बरों मे परस्पर साम्प्रदायिक द्वेष एवं कलह-कदाग्रह नहीं है। हमारे प्रवचन मे सब लोग सम्मलित होते हैं। पर्युषण पर्व भी सबने सम्मलित होकर मनाया। क्षमापना दिवस के दिन सब ने सम्मिलित रूप से क्षम याचना की।

जगाधरी से विहार : : :

जगाधरी छोटा सा क्षेत्र है। जैनों के थोड़े से घर है। परन्तु वातावरण बहुत शान्त है। अध्ययन की दृष्टि से यह वर्षावास अच्छा रहा। परन्तु स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहा। प्राय: अस्वस्थता बनी रही। घरों की संख्या कम होते हुए भी सेवा-भक्ति मे कमी नहीं रही। लोगो का प्रेम एव श्रद्धा-भक्ति अच्छी रही। दिगम्बर जैन एवं अजैन जनता ने भी खूब लाभ लिया। २१ नवम्बर ६१ को वर्षावास समाप्त हो गया। २२ नवम्बर को वहाँ से विहार कर दिया। सब ने श्रद्धा-भक्ति के साथ विदाई दी। विहार का दृश्य गांव को देखते हुए अच्छा रहा।

वहाँ से चलकर हम यमुनानगर आ गए। दिगम्बर समाज का अत्यधिक आग्रह होने से कुछ दिन यहाँ ठहरे। दिगम्बर मन्दिर में उपदेश होता रहा। दिगम्बर-श्वेताम्बर एव अजैन सब लोग उपदेश का लाभ लेते रहे।

पुनः सहारनपुर में : : :

यमुना नगर से सहारनपुर २५ मील है। दो दिन में २५ मील का रास्ता तय करके पुनः सहारनपुर में प्रवेश किया। यहाँ स्थानकवासी समाज के घर कम हैं। दिगम्बर समाज के करीब ८०० घर है। परन्तु साम्प्रदायिक कट्टरता अधिक है। उनके मन में जैनत्व एवं भ्रातृ-प्रेम की भावना बहुत कम है।

जब हम सहारनपुर पहुँचे तो हमें नीचे बिछाने के लिए घास की आवश्यकता थी। क्योंकि जैन साधु-साध्वी मर्यादित वस्त्र रखते हैं। और अपना सामान स्वयं ही उठाकर चलते हैं। अतः सर्दी के समय वस्त्र की कमी के कारण नीचे से फर्श की ठण्डक नहीं रुक पाती थी। इसलिए नीचे घास बिछाकर उस पर एक दो वस्त्र डालकर सो जाते हैं। अत. भाई चैनलालजी घास मागने के लिए एक दिगम्बर भाई के घर पर पहुँचे। उसने उनसे पूछा कि क्या तुम्हें अपनी भैंस के लिए घास चाहिए ? चमनलालजी ने कहा, नहीं। मुझे अपनी भैंस के लिए नहीं, साध्वीजी महाराज के बिछाने के लिये घास की आवश्यकता है। उनके विहार करते ही आपका घास वापिस लौटा देंगे। यह सुनकर उस भाई ने कहा कि यदि तुम्हें अपनी भैंस के लिए घास की आवश्यकता हो तो अवश्य ले जाओ, परन्तु सतीजी के लिये मै घास नहीं दूँगा। जब चैनलालजी ने मुझे यह घटना सुनाई तो मै सुनकर स्तब्ध रह गई। इतना द्वेष ! जैनत्व तो क्या इन्सानियत भी नहीं !

मेरठ के पथ पर : : :

सहारनपुर से विहार करके नागल पहुँचे। बारह मील का सफर

था। पहुँचते ही ठहरने के स्थान का प्रश्न सामने था। सहारनपुर के दो-तीन भाई साथ थे। उनके प्रयत्न से ठहरने को स्थान मिल गया। कुछ देर विश्राम करके आहार-पानी लाए।

दूसरे दिन प्रात ही अपने पथ पर बढ़ चले। आज भी १२ मील चलना था। रास्ता बड़ा कठिन था, फिर भी देवबन्द पहुँच गए। यहां दिगम्बर जैनों के तीन मन्दिर हैं। तीनों मन्दिरों में ठहरने के लिए स्थान की याचना की, परन्तु कहीं भी जगह नहीं मिली। यदि रास्ते में कोई दिगम्बर भाई मिलता तो हमें देखकर गर्दन झुका लेता। इन जैनों की अपेक्षा अजैन अच्छे रहे, जो ठहरने के लिए स्थान एवं खाने के लिए रोटी तो दे देते थे। मैने पंजाब में जैनों की अपेक्षा अजैनों में साधु-साध्वियों के प्रति श्रद्धा-भक्ति एवं प्रेम अधिक देखा।

साथ का भाई स्थान प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता रहा। उसके प्रयत्न से एक टूटा-फूटा मकान शाम को ४॥ बजे मिल ही गया। उसमें ढेरों कचरा जमा हुआ था। उसने उसे साफ किया, फिर भी चिड़ियों के घोसलों आदि में से दुर्गन्ध तो आती ही थी। खैर किसी तरह रात्रि व्यतीत की और प्रातः चलने की तैयारी करने लगे। उस दो चार व्यक्तियों ने ठहरने की विनती की। मार्ग की थकावट के कारण शरीर भी विश्रान्ति चाहता था। परन्तु स्थानादि की अनुकूलता के अभाव में ठहरने को मन नहीं माना। अत. उन्हें समझा-बुझाकर आगे बढ़ चले।

हम सब इस रास्ते से अपरिचित थे। साथ का भाई भी इस रास्ते से अनभिज्ञ था। अत: रास्ता भूल जाने से आज हमें कुछ अधिक परेशानी हुई। फिर भी ८॥ मील का रास्ता तय करके एक गांव में पहुँच गई। यहा भी दिगम्बर जैनों के घर थे। अतः मंदिर होते हुए भी उन्होंने हमें एक कमरे मे ठहराया। जहाँ चूहों का साम्राज्य था। इस तरह यहां भी स्थान एवं आहार-पानी की विशेष सुविधा नहीं मिली।

मुज्जफरपुर में प्रवेश : : :

दूसरे दिन हम मुज्जफरपुर में प्रविष्ट हो गए। परन्तु अपरिचित होने के कारण हमें करीब दो मील का चक्कर पडा। फिर रास्ते मे एक जैन भाई मिल गया, जिसने हमें स्थानक में पहुँचा दिया। उस दिन पाली (मारवाड़) से कुछ दर्शनार्थी बहन-भाई भी आ पहुँचे। अतः उनके एवं संघ के आग्रह से ५ दिन ठहरे। संघ का अच्छा स्नेह रहा। व्याख्यान में अच्छी उपस्थिति रही।

मेरठ में प्रवेश : : :

यहां से खतोली होते हुए सकोती आ गए। इस रास्ते में काफी लम्बे-लम्बे विहार करने पड़े और मार्ग मे आहार-पानी की भी अनुकूलता नहीं रही। मुज्जफरपुर से भाइयों ने मेरठ पत्र भी डाल दिया था। फिर भी वहा से कोई व्यक्ति नहीं आया। अतः सकोती से मेरठ का रास्ता बहुत ही कठिन रहा। १८ मील में कहीं भी ठहरने को स्थान नहीं मिला। निरंतर कई दिन तक सड़क पर चलने के कारण पैर काफी घिस गए थे, पैरों से खून बहने लगा था। फिर भी शाम को ४॥ बजे हम जैन नगर, मेरठ पहुंच ही गए। बस, पहुचने की देर थी बहिन-भाइयों की भीड़ सी लग गई। सामान आदि व्यवस्थित रखकर सन्तो के दर्शन किए और आहार-पानी लाकर जठर ज्वाला को उपशान्त किया।

यहाँ पर श्री फूलचन्दजी म० आदि सन्त विराज रहे थे। उनके एवं संघ के आग्रह से दूसरे दिन प्रवचन शुरु कर दिया। उपस्थिति अच्छी थी। लोगों में श्रद्धा-भक्ति भी बहुत थी। हमारा मन एक सप्ताह ठहरने का था, परन्तु संघ एवं सन्तों के आग्रह तथा प्रकृति की प्रतिकूलता के कारण विहार नहीं हो सका। १० दिन तक निरंतर कुहरा पड़ता रहा। इस कारण हम एक बजे तक स्थानक से बाहर ही नहीं निकल सके। क्योंकि जैन साधु-साध्वी वर्षा एवं कुहरे में आहार-पानी आदि के लिए नहीं जाते और न विहार ही करते है। हाँ, शौचादि के

लिए जा सकते हैं। इस कारण सहज ही तप हो गया। आराम से मुंह ढांककर भगवान् का स्मरण करने में बड़ा आनन्द आ रहा था।

इस वर्ष इधर शर्दी काफी बढ गई है। इस शीत लहर से सैकड़ों ही मनुष्य एवं पशुओं के मरने के समाचार अखबारों मे पढ़ने को मिलते रहे है। शर्दी की अधिकता के कारण मेरा एवं साथ की अन्य साध्वियों का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहा। अतः अस्वस्थता एवं शीत की अधिकता तथा संघ की विनती के कारण अभी यहाँ ठहरना पड़ा। जनवरी १६६२ का महीना समाप्त होने जा रहा है। संभव है फरवरी का प्रथम सप्ताह भी यही पूरा हो जाए। मेरठ संघ की भावना तो और भी अधिक है। वे तो वर्षावास की विनती कर रहे हैं। परन्तु हमारा मन श्रद्धेय उपाध्याय, कवि श्री अमरचन्दजी म० के सान्निध्य में कुछ आगम अध्ययन करने का है। सुना है, वे कलकत्ता से आगरा पधार रहे हैं। हमारा विचार भी आगरा पहुँचने का है। अत. यहां से आगरे के पथ पर कदम बढ़ाने का सोच रहे हैं।

अंत में इन संस्मरणों के विषय में सिर्फ इतना ही कि वेसे तो कभी इन्हें लिखने की विशेष इच्छा नहीं हुई पर इस वार इस लम्बी कठिन व भयानक यात्रा ने जिसमे कि कभी तो शेर से, व कभी जगली हाथियों से सामना हुआ और कभी तो ऐसी स्थिति भी आई कि ऊपर तो सीधी चट्टानें, और नीचे सहस्रों फीट गहरी खाई। और वीच मे हम अत्यन्त ही संकीर्ण व फिसलन भरी पगडंडी पर कि जिससे जरा भी पैर फिसलने पर इन्सान की हड्डियों का भी पता न चले लिखने की प्रेरणा की। गुरुवर्य की व शासनेश की असीम अनुकम्पा से हमने वह वीहड़ पथ पार कर अपनी यात्रा सम्पन्न की। तथा सकुशल व सानन्द वापिस लौटकर आज पाठकों के हाथों में ये संस्मरण पहुँचा सके।

ॐ *शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !*


समाप्तम्

द्रव्य सहायक



१.	श्रीमान्	खींवराजजी चोरड़िया,	मद्रास
२.	,,	हीरालालजी चोरड़िया	,,
३.	,,	अमरचन्दजी मोदी	ब्यावर
४.	,,	तेजमलजी बोहरा	,,
५.	श्रीमती	महिमावन्तीजी जैन	मेरठ
६.	,,	महिमावन्तीजी जैन	जम्मू
७.	,,	शान्तिदेवीजी जैन	,,

